

षपान॥ अमुतदोतविसषाड्ये किमगरकायदृगपान॥ ७॥ कहामान गिरचतिरद्वैत
वउतगेवलिजांउ॥ अचरचानिरनेगंथयद्वैतमुम्हारेनांउ॥ पारातदिवसधिंतनकि
योविविधिंथकौनेउ॥ द्विदिनकोश्रमअधिकदयादच्छनादिदु॥ १॥ जिनमतसदल
मनोगअतिलिजुगवादिनपंथा॥ साकीपोलपिवा॥ नियोंचरचानिरनेगंथ॥ १॥ चर
चा॥ निरेनेकोपदतचकुसन्नांतिमिरजांदि॥ दवग्राहीदुवपरिदेरेंसोइस्लाजककु
नांदि॥ १॥ दिवसदिवाकरउगावैसवहीकौअमजाइ॥ अधिकअंधेरोघ्रवर्केताकौको
नउपाइ॥ २॥ सर्वकथनकोमथनयद्वैतिनमतमरमपिवा॥ जिनधर्मजगकल्यत
रुसेवोसंतसुजाना॥ ३॥ सेवाश्री॥ जिनधर्मकीकरैसकलसुनअये॥ पयकीयातागा
यजोडदनदारकोदेय॥ ४॥ चौपदी॥ जिनधर्मडुस्सनजगसोसि॥ विनसेयैसिनदायक
नांदि॥ समलिसेचिंदेयोउरनेले॥ कोवीधरेधंननहिंफले॥ ५॥ अथअवसानमंगल

हिमराणां त्वमुगद्रङ्कणिवारेऽधः प्रतोणच्छिसुर्दृगां कालोपोवोचयंचकुम्भेमादा
 नेणैवरिसिखिक्यच्चं जंजरमराणं त्वयं कुगर्दी अस्तु डक्तं । समधिज्ञासुते । तद्व्याप्तत्परा
 नृष्टच्छेत्तद्विच्छेन्नसरोभवेत्त ॥ द्येनाविद्यामयेत्तपंत्यत्क्वाविद्यामयं ब्रजेत्त ॥ दोदा
 तारहसैषट्दोत्तरेमाधमासन्नवसानां सुकलपच्छतिथिपंचमीगंधसमापितवा
 ना ॥ अर्धरविनैवैविनयकरिसुनियोसंक्रान्तलोगाणुणकेगाहवद्भुजियोयद्वि
 नतीनुमजोगात्रागुणगादीसिसुयनत्वैरुधिरबोरपयलेत्त ॥ यद्वहवालकसोमीषि
 येज्जोसिरन्त्रायिसेता ॥ धिगडरजमकीवान्कोगुणतजिन्त्रोगनलेयागजमस्तक
 मणिच्छगडिकैवाऽसन्नभषभवेया ॥ अहुरजमन्त्रोगनदीगदैगुनकोदयवहाया ॥
 जोगोरीकेजालमंघासफूसरदिजाद्र ॥ पक्षिषन्नावसवजंगतमैडमकारणमहि
 कोयांमैत्रीन्नावसमानमुषन्त्रोरमदीसैलोम ॥ दीप्तैत्रीन्नावपिषूषरसैवरन्नाववि

नाश्रुतप्रदीपेन सर्वविश्रुतमोमयं । त्वं श्रेयश्च वदस्व तत्रास्त्रकी समाप्तिविवेचिसिद्धोत्तलिपि
येह । जितेन जेने के ज्ञास्त्रेहंति न सर्वे कसा रदतना होह्य । व्यवहाराकरि पंचपरमेष्ठीकी
भक्ति निश्चैकरि अमेदर नत्रयमधी निजात्मा की जावना । एही सरण हो । तउक्तं । गाथा
दंमणाणा चरित्तो । सरणं सेवेह परमसद्भाव्ये । त्रसं किं पिण सरणं । संमारे संसरताण
नया दिये गोमेसा स दो अण्णा । एणाणं दंसण लरकणो । सिंसा मेवा हिराजावा । सत्त्वसं
जोग लरकणा । त्वं । इस्स प्राकृतका अर्थ विचार कै विषय कषाय सौ विमुष होय शु
द्धै तन्मस्वप्पकी निरंतर जावना करणी । यही मेह्दका मार्ग हो । तउक्तं । जेण एणं
जाणमण धरियज । विसय कसाय दंजंज । मोएक हंकारण पत्तउज । अण्णु सतंतं तस्म
मंजं । त्वं । जं सक्क इतं क । रियजं चण संक्के इतं च सदहणं । सदह माणा जीवो पावइ
अजग मरंताणं । पात वयरणं वयधरणं । संजम सरणं च जीवदय करणं । अत्र ते समा

चनकेपच्छसोनदीलिषायथावतश्चरानेकेनिमित्तशास्त्रकीसाधिसौलिषोद
 जोचरघामनेमें आवेसोमाननी॥स आवेतहांसभस्वहायमुफेपिमानाचकरने
 शास्त्रविरोधीवचनकाफलमुकेहायगा॥तुमअपनीसज्जनताकीमर्यादनकोड
 नी॥आगेवडोंनेदोषीअपराधीजीवनकोंभीअसीर्वादीनाहोतयाहि॥उज्जण
 मुदियउहोजाजगोसुयरापयासिउजेण॥अप्रमियविसहंवासरतसदिजिममरा
 नुक्छेण॥इसयंचमचालमेंजेनेकेनास्त्रवेडउपगारीहो॥आवत्कालइतकाअ
 व्पादनरहो॥तावत्ज्ञानकाप्रकाशहोया॥इंद्रियोंकाअबरोधहोया॥जेसंसर्ग
 केउदयउद्योतहोहो॥आरहृदनामजीवअंधहोजायहो॥तिसतेसांसनाथसो
 निरंतरसास्त्रान्मासंकरणासर्वथायोगपेहो॥एकअवारहअक्षरमयीप्रबोधसा
 रमामग्रंथहोतहांयोक्होहो॥स्मोक॥श्रुतबोधप्रदीपेनत्रासनंवर्ततेधुना॥वि

चित्तत्रयै न करणी ॥ २७ ॥ इत्यादि ज्ञेयममनको चरचा विषये अनेक त्रोंसि काल
 भोंपडी ॥ तिनका निम्नैसामाम बुद्धिसों कदांतां ईदोया ॥ वानगीसी लिखीद्वे ॥ जेव
 श्रुतीबुद्धि वानेद्वे ॥ और जिनको मरल बुद्धिद्वे ॥ जेयोडेही लिखेसों वहुत जाननेहोहि
 गा ॥ त्रोंसि मिटजाइगी ॥ तडुक्को ॥ जलेतैलें गुह्य पात्रेदानं मनगा ॥ पिछाद्वे ॥ शास्त्र
 यातिविस्तारं वस्तुना त्तिसः ॥ २८ ॥ और जेको ईदवग्राही जीवहेति नकाउपाय न
 ही ॥ तडुक्को ॥ त्राक्या वारयिउं जले न डुक्तनु कछेत्रण सूर्यी तपो ॥ नागेंडं निमि
 त्रानसमदं दुंदु नगो गदं नो ॥ व्याधिसैषजसंगेद्वे ॥ अवि विधे र्मे त्रप्रयोगे विषो ॥
 स्योषधमस्ति शास्त्रविहितं मुखं सपनास्सोषधं ॥ अइदं एकगुणया हसं जे नो
 री ॥ और दासै ॥ अथ मत्रारं मविषं भी करीद्वे ॥ अत्र वफेर करोंदो ॥ यद्वचस्चासमाधा
 ननामगुंथमानवडाईके ॥ त्रान्नायसों ॥ अथवा ॥ अथनी ॥ प्रसिद्धि वद्वे नें कोतथाव

आरतरामाद्रनेहेनहीपरमतकेनास्त्रहे॥ तिनका निवेधकी फाँदे॥ तडकें॥ मरसा
 ने॥ आनी ममासुरकाभारदरामाद्रणादिउवएसा॥ उच्छात्रसादणीया॥ मुयत्रसा
 णंतिगोंवेतिबा॥ अस्यार्थ॥ आनीतासुरसत्तारतराद्रणाद्युपेदशाः॥ ॥ अगनीतकहि
 र्चंअंजनादिविद्याके॥ भिरुषकचोरनेकेनास्त्र॥ आसुरसकहियेवधंधंशादिकेअस्तूपक
 कोतवालनेकेनास्त्र॥ आरतकहियेकैरखपांडवपुष्टपांचपुरुषकीएकस्त्री॥ इत्यादि
 विपरीतकथामयीमहान्नारता॥ रामाद्रणाकहियेसीतादरणारुसवानरकासंग्रा
 म॥ इत्यादिरामरावणसंवंधीरामायणात्रास्त्रेअसे॥ अरभीस्वित्वाकल्पितप्रबंधहेते॥
 उच्छाः॥ कहियेपरमार्थश्रुसहे॥ असाधनीया॥ ताहीनेंसत्पुरुषनिकरिआदरकरए
 योअनहीततद्दंश्रुताद्धानंशतिवृद्धंति॥ असेउक्तास्त्रमकोसुनिकें॥ मिथ्याज्ञान
 उपजे॥ तिसैउक्थुतनामज्ञानअन्वार्थकहेहे॥ बाइहजा निजेनप्रगणविवेकदा

कावर्णनचैत्र॥ जिनके तांमोच्चारणें तया पद्मदय द्योय॥ छुमपाप क्रिया का फल जाना
पड़े॥ इत्सा दिग्गमेक प्रकाश कल्यान करी है॥ तदुक्तं॥ महापुराणे मुणभद्रा नैर्येण॥ ४
मोत्रमुक्तिपदमत्र कवित्वमत्र तीर्थे त्रिग्नश्चरितमत्र मत्वा पुराणे॥ यद्वा कवी प्रजि
नसे न मुखारविंद॥ निर्यद्वचां सिनहरंति मनां सिकेषां॥ ब्राह्मणं जिनसे नारिक
तपुराण विषे जो का वर सहे॥ तिस कों जे का वर सकेर सज्ञ है ते ईजाने॥ ब्राह्मण का
विषय नही परं तु जान ना योग्य है॥ तदुक्तं॥ यो जैन सत्कायर सान भिक्कु॥ सो
यं पशुः शुद्ध विषाणो नृपः॥ चरत्यसौ यन्त तणं कदाचित् सन्नागं धेयं परमं पशु
नां॥ इदं को ईषु है॥ इस जागें तो जे न पुराण की वडी प्रसंसा करी॥ और राजमली
ठी को में लिखा है॥ यह नाटक समें सारनाम ग्रंथ वैराग्यात्सादक के॥ नारतर
मां इस की नाई राग वर्धन नै छे॥ सो क्यों लिखा है॥ तिस कानुत्तर॥ जे नमें को ई

वकुक्षजिनसेनादिमुनिहोत्ररागवर्धनक्याकर्गेवेर्द्गगवर्धनकर्मैंगेतौवैराग्य
 वर्धनकोनकैरागशृंगारादिरसकावर्णनहोसोरागचढावर्नेकेनप्रप्रायसोमनहोहि
 घुणपाधिकारीजीवनकेघुणमातित्रायकानिरूपणतथाउनकेसाहसकीप्रशंसा
 निमित्तहो॥आरंभोमहाघुराणविवेजयसुलोचनकेभोगशृंगारकात्रद्वितीय
 वर्णनकीना॥अंतर्वैराग्यदीवदाया॥ तथादि॥ एवंसुखानितनुजानमनुभूयतेतच्च
 नैवयनुश्चिरंतरेप्यभिलाषकोत्ति॥ द्विच्छमिष्टविषयोच्छमुखंसुखायतदीत
 विश्वविषयायावुक्षयतध्वं॥ तिसंतेजाबंतजेनकैघुराणहंतैवैराग्यकोत्त्र
 द्वितीयकारणहो॥ रागकेकारणनंदी॥ आरंभेनकैशास्त्रचारअनुयोगस्थहो॥
 सबहीसंवेगवैराग्यकोवभरणहो॥ तिनसेप्रथमअवस्थाविवेचप्रथमानुयोगमु
 ख्यहो॥ जहांतीर्थकरादित्रालाकाघुरसुनकेमहात्म्यकातथातिनकेसाधन

डिकैचउर्गिसिकैमनकोंधरेहोयहनियसगोमटसारविषेकायमार्गगाकिअधिका
 रमेंदेखना॥छा॥होकोईपुछैबहमहोनेकाविरहकालमोहकाहोहो॥बहमस
 ईअटाईदीपमेंकोईमुक्तहोया॥असाविरहकालकवपेडैहो॥समाधाना॥दशाध्या
 यीसत्रविषेप्रथमसूत्रकीभाषाटीकाकनककर्त्तिनामपंडितनेकरीहेतहांयो
 लिषाहो॥एकसोअठतालीसचोवीसीवीति॥तवएककुंडकनामकालत्रोवो॥इत
 नेहीकुंडकजांदि॥तवमोहमार्गिकाविरहकालपेडो॥बहमसतांईकोईजीव
 मुक्तनहोया॥गाथा॥एकसयंत्रअडयाला॥चउचीसिगयाइंऊंतिऊंडकं॥तितीयऊं
 डगाया॥विरहकालोहोदिमोरकस्सबा॥२७॥चरचाएकसैअठतीसमी॥प्र
 दिपुराणप्रमुखजंनपुराणविषेकेतेकसाधमीजनअरुखिकेरेंहो॥रागवर्द्धन
 रूपमानेंहो॥यहअध्यानयोगपेहैकअयोग्यहो॥समाधाना॥जंनपुराणकेकुत्ता

त्सनिगोदसंज्ञाजानती॥ तदुक्तं गोमयवसरि॥ गाथा॥ अस्मि अणं ता जीवा जे दिण
 पत्तो तस्मा एण परिणामो॥ भावकं तं कं सुपउराणि गोदवा संरा मुंचंति॥ अत्थ न्नाणु
 कं॥ श्लोकः॥ त्रसत्वं न प्रपद्यंते कलानां दृश्ये पिये॥ ज्ञेयानि त्स्य नि को ता स्ते भूरि
 यापवन्नीकृताः॥ तिस्रं ते जिमकं निगोदं भवका आदि अंत न ही तिन को॥ नित
 निगोदपना सिद्धुवा॥ और जे जीव चतुर्गति विषे न्त्रमण करि कै निगोद में उप
 जेहो॥ तिमकं निगोद के भवका आदि अंत हो॥ तिन को अ नित्य तथा इतर तथा
 चतुर्गति निगोद संज्ञा हो॥ इस भांति ए दोयरा नि अ नंतानं त जीव मयी अ ननादि
 निधनं देहं सदा विनोष इतना॥ जव मोक्ष का विरह काल छुद मास का बीते दे
 तव आठ समय विषे छुद से आठ जीव यथोक्त समय की संख्या करि चतुर्गति संव
 धी जीरा सिते निकसि कं मुक्त होहो॥ तिन ते न ही जीव नित्य निगोद के भव को छो

गले समय विषे कुच्छुगणती करि वर्गणा घाटि रह्यो ॥ यद्दुर्कर्म डरकी निर्जरा काक्र
महे ॥ ताही ते जीव के समय प्रवृद्ध की छिद्द गुण ह्यो निमात्र सदा काल चली चोहो ॥ ५
सत्तांति समय समय निर्जरा जाननी ॥ यही एक देवा कर्म दरा रूप समय समय मो
कोहो ॥ त्रिसे एक समय विवे जीव का सात तत्त्व रूप परिणमन जामना ॥ किोई
पुच्छे अंतराल वची जीव के कोकर संभेवो ॥ अमरा ॥ कार्मुण योग की अत्र पेछा संभेव
वा ॥ २६ ॥ चरचा एक सो संती समी ॥ प्रथम ॥ जिनने जीव व्यववदारा त्रिते मुक्त होहि ॥
तितने ही नित्य निगो दसो निवसे ॥ व्यववदारा त्रिमे अश्वे ॥ असी कदनावति दे सो ॥
को करि हो ॥ समधान ॥ इस संसार में निगो दश सिद्धाय प्रकार हो ॥ एक तो नित्य निगो
दाह सरी इतर निगो दो ॥ सि जीव अनादिसो कवही वेष्ट्र प्रिया दित्र समय पर्याय को प्राप्त
उवे नही ॥ बहुधा कवही प्राप्त हो न के भी मांही ॥ असे अने तजी घेहो ॥ तिम को नि

मिष्ठात्सोलेयसयोगपर्यंतत्प्रपन्नं गुणस्थानं केचननुसारं एकसमयविवर्धनीवसानत
 त्वरूपपरिणयैः। अयोगगुणस्थानविवर्धनाप्रवर्धनदोतिसतेतं तद्दानसंभवे। अ
 रसवगुणस्थानो संभवै प्रथमजीवका अजीवसो। अनादिसंबंधेदो। ज्ञानावरणा
 द्विकर्मका अप्रवसमयसमर्थैः। असीदो प्रतिसमयवर्धनो। जो प्रवृत्ति आश्रव
 योगपनदो। तिसका संवरदो। और इसे संसारी जीवकें समयसमय अनंत वर्गणम
 यीसमय प्रवृत्त जो वर्धे। सो नाना गुणदा नितया गुणदा। निरूपदोयतेषं वद्वधि
 रेदो। एककर्मकी स्थिति विवर्धनासंख्याती नाना गुणदा नित्यै। तिनैमै एक एक नाना
 गुणदानिका काल असंख्यात समयमात्रेदो। तिन विवर्धे समय प्रवृत्त आश्रम आश्र
 दा यविरै इस द्वाका मां वध्मर्ध गुणदा नित्यै। इसनाना गुणदा निविवर्धना संख्याती गु
 णदा नित्यै। तिनका काल एक समय दै। इनेमै पदलेय दले समय दै तं अणले अ

रासीलाषजातिहं॥यद्यपिस्पृशोदिविषेव्यक्तकरिअनंतमेदहोतिन
ताविषेजीवउत्तसेदहं॥तथापिनिमेकअंतर्गतमेदनविषेचौरासीलाब
चौरासीलाषजोनिजाननी॥१३५॥ चरत्ताएकसौपैतीसमी॥प्रहसु॥ ॥सं
वनेकेएकसौसादिनिंनाराणवेंलायकोडुकुलकहहो॥आरचौरासीलाषयोनि
कही॥तहांयोनि तथाकुलविषेकानेदहो॥समाधान॥ ॥योनिनामउत्स
निस्त्वामकोहो॥कंद्येनिमूलयोनिअंडयोनिगर्भयोनिरसयोनिस्वेदयोनि
इत्यादिजीवमेकउत्सत्तिस्त्वानेहो॥इनकांयोनि संज्ञाजाननी॥इनविषेअने
कजातिकेजीवनपजे॥तिनभेदमेकांकुलसंज्ञाहो॥तिसकाउद्भवा॥वष्टपीपल
सादिऐकंद्रीकेकुल॥त्रिमसीपइत्याचिवेंइइकेकुलचेंदोषष्टमलइत्यादितें
द्रीकेकुल॥नारासाबीइत्यादिचौइइकेकुलतिर्यचविषो॥गाइनेसिइत्यादिम

रहे। उपपादजनमवाले देवताना नारकी गीतोक्षयोनितो जाति उपपादस्थान
 कई त्रीतिहे। किई उछेहे। वा। समसृष्टि जनमवाले एकें प्रीतथा उपपादजनमवा
 ले देवताना नारकी हे। तिनकी संवत्तयो नितो। विकल त्रयजीवनकी विवत्तयो
 नितो। गर्भजनजीवनकी संवत्त विवत्त रूप मिश्रयो नितो। इस प्रकार नवमूलयो
 नितो। इनही किं अंतर नेद चौरासी लाबे हे। तहुक्तं। गाम्ना। एष्विदरधाडसत्तय।
 तसुददु वियलिनं दिये सुच्छेव सुराण्यातिरिय चडुरो। चउदत्रामणुये ससद
 समा। दसकोइ पृष्ठे। चौरासी लाब अंतर स्नेदयो निसंबंधी केहे तिनका कया स्वत
 पेदो। तिसका नुत्तर। जिन पुद्गल बंध निबिबे संसार जीव जनम धरे तिनको योनि
 संज्ञा हे। तेयो निसमान स्पशर सगंध वणिके नेद निकरि चौरासी लाषजाति की हे
 इसयो निकास्पशर सगंध वणि एक सादोय सो एक जाति कह्यो। इस नामांति चो

योनितीनप्रकारहै। केईसचित्तयोनिहैं। केईअचित्तयोनिहैं। केईमिश्रयोनिहैं।
साधारणवनस्पतीबालेजीवनकीसचित्तयोनिहैं। पृथ्वीआदिजीवनकीअवि
ज्ञयोनिहैं। औरमिश्रयोनिहैं। वागर्भजडावनकीमिश्रहीयोनिहैं। पुरुषका
वीर्यअचित्तहै। स्त्रीकारजसचित्तहै। दोनोंमिलकरएकपिंडहोहैं। तबजीवकेउ
पजनैकोयोगहोहै। यातेंगर्भजकीमिश्रयोनिसेभवै। औरजहांकेवलअवि
ज्ञबीर्यहैं। तिनैउत्पत्तिहै। सहांमाताकाउदरसचित्तहै। सहांभीमिश्रयोनिसेभवै
न। उपपादजनबालेजीवनकीअचित्तयोनिहै। ज्ञातेंदेवनारकीकेउपपादस
बंधीपुद्गलप्रचयअचित्तहै। समस्तखलजन्मचालेजीवनविषे। अग्निकायके
उत्सयोनिहैं। वाकीएषिवीज्रादिकेजीवनविषे। केईत्रीतयोनिहै। केईउद्भय
निहैं। केईत्रीताएलमिश्रयोनिहैं। असेहोगर्भजजीवनकीभीयोनितीनप्रकार

हस्ततथा मुं दीयो नि क दि यो ॥ प्रकटाकारमुद्गलस्कंधो यति सें विवस्वतथा शु
 लीयो नि क दि यो ॥ दो नो लखं न युक्त उभयात्मकमुद्गलस्कंधो यति सें मिश्र
 यो नि क दि यो ॥ प्रवीरुक्तसमूर्द्धनादिती नो ज न्म क हां क हां सं भवे य ह लिखे ह ॥ प्र
 रायुज ॥ मुं ड म ग ॥ पो त्त ज ॥ इ न ती नो कें ग र्भे ज न्म दे ॥ जाली सों वे छि त म नु ष्य दृ ष
 मा दि उ य ॥ ती सें ज म रा यु ज क दि यो ॥ प्रं डे सो प क्षी त था स र्पा दि जो व नु प जे ति सें
 जं ड ज क दि यो ॥ आ ब र ण दि त सें पु र्णं अ व य व ली ये स्त्वा न त था मा ज्ञी ण दि जी व
 उ प जे ति सें पो त्त अ क दि यो ॥ ए ती नो जे त्वा र्भ के ज्ञा न नो ॥ चार प्र कार के दे व ता त
 था ध र्मा दि न र के के ना र की न के उ प या द ज न्म सें ॥ स्वा की ए कें प्री छे डी चो इं ड्र के
 ते क पंचे छि त था अ ल ष्ठ प र्याप्त के स मूर्द्ध न ज न्म दे ॥ इ न ती नो ज न्म सें दे वि षे
 न न्म यो नि क हां क हां सं भवे य ह लिखे य दे ॥ प्रथम स म्मूर्द्ध ज न्म वाले जी व न की

नापिता केरज दीर्य का संयोग होया। तहां जीव ज्ञा इउ पयैर जवरीय को पेंड कों शरीर स्तावक
रिग हए कैर तिसें गर्भ जन्म क दिये। संखुट नाया तथा उष्टादि मुखा कार देव नार की के उ
तुत्ति स्खाने हो। तिनै के समीप जाय जीव का जन्म होय तिसें ज्ञो पादिक जन्म क दियो। प्रस
नीन प्रकार के जन्म की नव प्रकार की योनि हो। सचिन्ना। पञ्चविन्त भ्रमि अत्र शीत क्षु
ह्य भ्रमि अर्ध संव्रत उ विहृत तण। मिश्र। इन्द्र न का विवर ए। चित न ना संयुक्त होय तिसें स
च्चिन्ने योनि क दियो। तथा और जीव न के प्रदे श न करि परिग हीत पुण्डल स्कंध हो हति
न को सचिन्त क दियो। प्रसल छून सों विपरीत होय तिसें अचिन्त योनि क दियो। भ्रंश
नो ल छून सों मिश्रित होय तिसें मिश्र योनि क दियो। पञ्जिस का शीत स्यु न होय तिसें
शीत योनि क दियो। प्रतिस का उल्लस्यु न होय तिसें उल्लस्यु न होय तिसें। प्रीतो ह्यमि
श्रित स्यु न होय तिसें मिश्र योनि क दियो। प्रप्रकटा का एषुण्डल स्कंध होय तिसें सं

अंतिलककीजिये। अगोरकिस निमित्तकीजि। यहकथन। श्लोक। अहंतानांललाटिश्च
 सिद्धानां हृदयेतथा। आचर्याणां च श्रेयार्कं तेषां वकानां दक्षिणो मुखे। एसाधुनां क्ष
 मतागं च पंचस्थानं प्रकीर्तितं। छ। इदं कोऽत्रौ च त्राचमनं दर्शनं तक्षवनेतिल
 कसूतकद्रुत्यादिगृहस्थकर्मकीविधिबिषेदं दक्षमोनेति सक्कसमाधसना। स्मो०
 सर्वेण वद्विजेनानां प्रमाणं लेखिकोविधिः। यत्र सम्यक्कदा निर्नयत्र न ब्रतद
 खणं। १३३। चरचाएकमैचौतसमी। प्रस्था। चोरासीलाषयोनि काक्कास्वरूपदोस
 साधान। संसारीजीवों का जन्म तीन प्रकार दोस मूख नूजन्म। एगर्न जन्म भक्ति
 पादिक जन्म। जीवनें जिस आकाश ब्रह्मकी आधुवाधी द्वाया। सर्वत्रारीरकों
 ब्रह्मिकें तहां जायति छे। तवही वसों दिसों तें त्रारीराकार परिणमन योगपु
 न्नलस्वकंध आर्द्र त्रारीराकार ह्ये परिणवेंति सैंसं मूख नूजन्म क ह्ये। जहांमा

वङ्गार। नथैवकद्वियैतैसेंदीधर्मचक्रतेच्छायाआकार। इतिचंदनेनप्रलेपनंघोषादिति
लंकं स्यात्॥ इस्मनांतिचंदनकरिप्रलेपदैसोच्छदप्रकारतिलकैद्वाभावार्थ। प्रवे

दनसोमस्तकादि विवैकरीयैसोच्छदप्रकारतिलकजानना॥ आगे
छदप्रकारतिलकैआकारकोदुत्तमदेद्वा॥ श्लोकः॥ अर्धचंद्रमसोपांडुशिलासंकल्पसे
खड्गायापृतातीर्थस्तुक्रममज्जनांनो। निरुच्छकैः॥ आतपत्रंजिनंघ्राणांछत्रत्रय
मिदंस्मृता। अक्रिस्तुमानात्तंभस्मात्पीथं। सिंहासनंभर्ता। अचक्रंउधर्मचक्रंस्पातिल
कंउततदत्यवी। एतत्सर्वचसंधार्यपूर्वत्नालेयथोचितं॥ आगेइनच्छदोतिलक
कैअधिकारीकोनैद्वैतिकद्वियैद्वा॥ श्लोकः॥ अर्धचंद्रातपत्रचैद्वत्रियाणामितिसमृते
आतपत्रांरुपिवाश्रवाह्मणानांप्रकर्तिताः॥ आतपत्रंनथोवांक्रि विटस्यपि

। सत्सुइस्सनेकचक्रंपरस्यतिलकंभवेत्॥ आगेकोनकोनस्वानवि

सेतुयन्त्यागीससप्तमः॥आगाद्यंउपुष्यार्थेकोत्रार्थेउधयंसदा॥षष्ठंदानाययोर्युक्ते
 सत्यागीसधसोमत्तः॥स्वस्वस्यस्तुषाह्मागानुपरिवाराययोजयेत्ता॥त्रिंशंसंचयेद
 त्रांनानुधर्मस्यागीलघुश्चमः॥इतोहीनंदत्तोसतिविनयेयस्तुपुरुषोमत्तं॥सद्यत्त
 किंचितस्त्वलुनगणितंक्षमिकनैरे॥४६॥मानुभागानुसत्कवितरतिबुधायस्तुव
 द्भक्षामहसस्त्वस्यागीनुवनविदितोसोरविरवा॥४७॥अचराएकसोतेतस्मि॥४८॥
 स्मार्जिनमतमंगृहस्वकेतिलककीविविधिसप्रकारैस्समम्मान॥तिलकच्छदप्र
 कारकक्षुद्धौसोईकद्वंद्वौश्लोकनात्रर्द्धचंद्रातपत्रांक्रिपीतचक्रंतयेवव॥ति
 लकंचेतियेतास्मात्तत्तंचंदनेनमत्रलेपने॥अत्रार्थो॥अर्द्धचंद्रकदियेअर्द्धचंद्राका
 रा॥आतपत्रकदियेच्छत्रत्रयके॥आकारा॥अक्रिकदियेमानसंनके॥आकारो
 पीतकदिये॥सिंघासमके॥आकारा॥चक्रकदियेधर्मचक्रके॥आकारा॥चक्रकदिये

कुर्यात्तिष्ठर्वोक्तधवलादिसेद्वांतकेपात्रसोसिद्वांतीकहाये॥मदहृतजनना॥७॥१३१
चरचाकसौवशीसम॥॥प्रष्टा॥गृहस्वतेजोधसनीतसोउपजायादौ॥तिसकेकेजा
गकरनेयोगपदो॥सगुधामो॥जोगृहस्वत्रपनाधनदोयभागकुवंवनिमित्तलगावो॥एक
भागकासंचयकैरोएकभागधर्मकेनिमित्तषर्यै॥तिसकेउत्तमदाताकहिये॥आ
रजोसीनभागकुटंवकेनिमित्तलगावो॥दोयभागाकासंचयकैरो॥छेत्तेभागाकासागक
रो॥तिसेमधमदाताकहिये॥औरजोबृहत्सागपरिवारकेनिमित्तलगावो॥तीनभागा
कासंचयकैरो॥दसमेंअन्नकोसातछेत्रमेंपर्यै॥तिसंजघ्नमत्पागीकहियो॥इसजोति
ध्वजोकेतोतेजोगृहस्वविभागनकैरो॥कमीकैरो॥साधर्मोतमानरेने॥किसीमेंगिनान
दो॥औरजोकोईपुर्वीक्तनागसो॥अधिकदानकैरो॥सोमहात्पागीकहियो॥लोकावि
षेवदसूर्यप्रायेदो॥तदुक्तं॥भागघ्नयंकुटंवार्थेसंचयार्थेतृतीयके॥उरीयोयसधर्म

हृषिकारोपुजाहृद्गीमहागुच्छाहृद्वा॥तिमिदिनसोश्रुतपंचमीकृत्यजेमम्रजो
 वश्रुतपंचमीकायथोक्तरीतसोत्रतर्कयोतश्रुतकेविनयसोपुच्छपदपादमुक्त
 ह्योद्वि॥कारोद्विसेमंदेवालयविषंतीनोसिद्धांतविद्यमानदे॥नितपपूजादोष
 ह्योपायकेपदमेमुननेवकीयोगतावर्तमानकालेमेनदी॥तुक्तंनीतसपर
 ॥अर्थिकानांगदृष्टस्वनांश्रिष्यानामम्लमेधसोपनवाचनीयपुरतःसिद्धांता
 चारमुत्तर्कंछागकदिवसनेमचंद्रसिद्धांतीसिद्धांतकापातर्करंथोक्तासोद
 द्याकाराजात्वामुंडरायश्राया॥तितैदेविपातकीसमा शिकरा॥आरडनेसोक्
 ह्या॥मुमेसिद्धांतपातर्केश्रवणाकीयोगपतानादी॥तत्रराजाकेअनुग्रहनिमि
 त्तगोममटसारंगंषकीरस्वनाकीनी॥यहपुत्रसंगकलीदिन्यतीतकेमुषसोसु
 निक्केलिषाह्यैवमुनंदिवीरनंदिकनकनंदिद्रुनंदिनेमचंद्रादिसिद्धांती॥

चारकैमेंत्रसोधनकीया॥थयोत्तविद्यासिद्धदुर्द्ध॥विद्यावालीप्रभुदसेआझारी
आसाधुबोलेजोकार्यवृमसे॥सिद्धहोदेतिसकार्यसोदमेप्रचोपमतनहो॥गुरुके
आझासोनुमारेसाधनेकाउद्यमकीनाथा॥आगरकारणकोईनखी॥इसजोतिवि
द्याप्रतिवहिकेदोनोसाधुगुरुकेसमोपत्राये॥सवदतांतकस्वा॥गुरुनंदोनो
मुनिनास्त्रपातकरनेकोजोगुजानो॥उत्तमदिनत्रास्त्रकेव्याख्यामकप्रारंभ
कीनाकेतेकदिनेमेंपातकीसमाप्तिद्वैतवधरसेननद्वारकत्रयनी॥निकट
मृदुजानिविचारकीया॥भैरवचियोगसोईनकोबेदहो॥द्राग॥तिसंतंदोनोमुनी
स्वरविदाकीनो॥अपनेस्वानत्राईकैनास्त्रकीरखनाकरलेषकबुलाइलिषा
एानीनसिद्धांतयोपेसत्तरहजारप्रमितधवल॥साठहजारप्रमितजयधवल
वीसहजारप्रमितमहाधवल॥जिह्मसुदिपंचमीकेदिनचतुर्विधसंप्रसमेतम्

नगरीप्रतिब्रह्मचारीह्याथपत्रभेजा॥तद्धोतिनयात्रानिमित्रमुनिसंघश्चायाथा
तिनकोयथोचित्तवंदनाप्रणामलिष्वकैकोरालिषामिश्रोत्रायुचोडोरहोदो
तिसंकेतबुद्धिवंतविनयवंततरुणैस्सदायमुनिभैरेसमीपमेजनेभोजातेमा
तिसंकेतबुद्धिवंतविनयवंततरुणैस्सदायमुनिभैरेसमीपमेजनेभोजातेमा
तिसंकेतबुद्धिवंतविनयवंततरुणैस्सदायमुनिभैरेसमीपमेजनेभोजातेमा
तिसंकेतबुद्धिवंतविनयवंततरुणैस्सदायमुनिभैरेसमीपमेजनेभोजातेमा

धुमदातीक्ष्णामतिजा निधरसेनमुनिकेनिकटभेजावक्रत
विनयनक्तिसेणुरुकोत्रायवंदनाकरीगुरुनेयथोचित्तत्रागतत्रभागत
क्रियाकर्त्री॥प्रोद्धेतिनकीबुद्धिपरीक्षाकेनिमित्तदोनाधिकत्रच्छरसेमतदय
विद्यादीनी॥हीनत्रच्छरवालीविद्यानूतवलिसाधनेसाध॥तिसंकेतकालेनेत्र
कोविक्रियाकर्तिविद्यात्राभीष्टसरात्रध्विकत्रच्छरवालीविद्याप्रुषट्तमु
निनेसाधोतिसंकेतवडदंतकीविक्रियाकर्तिविद्यात्राडी॥तवदोनोंसाधनेछि

पंचमस्तुतकेवलीमिदवाङ्मुदेजानेनोतत्वांगिरनारकेशिखरचंद्रमुपाकेवा
सीधरसेननामसाधुअग्रायणीयपूर्वगतपंचमवस्तुकेचतुर्थकर्मप्राप्ततविवेच
वीनजलेतिसकाव्योरा॥चौदहपूर्वमेंदसराअग्रायणीयनामपूर्वद्वैतिसमें
चौदहवस्तुहो॥बस्तुनामअधिकारकोद्वैतिनकेनामलिखियेवैतप्रवोतर॥
अपरांतैर्यकचेअअध्रुवअअच्यवनलब्धिः पासंप्रणिधिः दीअर्थः॥आमाम
याद्यंअसर्वार्थिकत्वनीयंअज्ञानं॥अतीतकालः॥अनागतकाल॥असि
द्धिः॥अपाध्यः॥अएदसरेअग्रायणीयपूर्वकेचोदहअधिकारकेनामहो॥आ
धीअधिकारनेकेनांवद्वयमानअकिन्तजानेनोदहोअच्यवनल
ब्धेनांमर्पचमवस्तुविवेकर्मप्राप्ततनामअंतराधिकारहो॥तिसमेंअधरसेनना
मसाधुतत्परहो॥तिनसाधेनेविचारीअधमारीअधुअत्परहो॥तववस्तुधरनाम

षेकुर्वे॥ तिसपीठे॥ नरमेवेत्र॥ विषे॥ श्रुतकेवलीनहो॥ तिनके॥ अनंतर॥ विनागरावाचा
 ये॥ भोजि॥ हिलभा॥ द्वात्रिंश्यांक॥ अजया॥ धनागा॥ प॥ सिम्हार्ये॥ धौ॥ ह्यतिवेणा॥ अ॥ विजयया॥
 बुद्धिल॥ ए॥ गोंदव॥ ले॥ धर्मसेन॥ ए॥ गणपारद॥ मुनिद॥ शपू॥ वे॥ धारी॥ इत्ये॥ इ॥ न॥ क॥ काल
 वर्षे॥ ए॥ अ॥ तिनके॥ अनंतर॥ न॥ द॥ त्र॥ स॥ ज॥ य॥ पाल॥ भ॥ सो॥ दु॥ अ॥ भ्रु॥ व॥ से॥ न॥ ४॥ वं॥ सा॥ च॥ र्ये॥ पा॥
 ए॥ पो॥ च॥ मु॥ नि॥ ग॥ ए॥ द॥ त्र॥ ग॥ के॥ पा॥ वी॥ इत्ये॥ तिनका॥ काल॥ वर्षे॥ ३॥ ले॥ तिनके॥ अनंतर॥
 न॥ द॥ रा॥ य॥ य॥ न॥ ए॥ म॥ ड॥ अ॥ स॥ य॥ गो॥ वा॥ इ॥ त्र॥ अ॥ लो॥ हा॥ च॥ र्ये॥ धा॥ ए॥ च॥ रि॥ मु॥ नि॥ प्र॥ थ॥ म॥ अ॥ चा॥ रा॥ ग॥ र्ग॥ के॥
 वि॥ न॥ य॥ ध॥ रा॥ श्री॥ द॥ त्र॥ भ॥ त्रि॥ व॥ द॥ त्र॥ अ॥ भ्र॥ द॥ द॥ त्र॥ अ॥ ए॥ च॥ रि॥ मु॥ नि॥ त्र॥ ग॥ म॥ व॥

इ॥ न॥ क॥ क॥ काल॥ वर्षे॥ १॥ ए॥ इ॥ द॥ हा॥ ता॥ ई॥ श्री॥ व॥ द्र॥ म॥ न॥ के॥ ती॥ र्ये॥ वि॥ र्षे॥

स्ति॥ तिसपीठे॥ न॥ र॥ म॥ वि॥ र्षे॥ त्र॥ ग॥ धा॥ री॥ उ॥ छि॥ न॥ इत्ये॥ तिसके॥ अनंतर॥
 स्वांगमहा॥ नि॥ मि॥ त्र॥ के॥ ज्ञान॥ न॥ द॥ रा॥ म॥ द्र॥ वा॥ इ॥ न॥ म॥ अ॥ त्र॥ त॥ के॥ नि॥ मि॥ त्र॥ ज्ञा॥ नी॥ इत्ये॥

हो॥ और पहलाना राया वरुमान स्वामी दोय मुक्त दुख॥ पहला प्रतिनारायण मृगा
धुनना मे के वली दोय मुक्त दुख॥ तव आवनारायण नव प्रतिनारायण एक
र संते वों और अदि अंत के चौथी स हो न दार जी व अंत के रुद्र पर्यंत चौथे काल वि
षं देी अंत तां ई गिने स मंत न इ जी पंचम काल विषं डर॥ ए चौबीस में के को कर
फं वे॥ इत्सु दि और भी युक्ति सों गाथा कथित अर्थ मिले नही दे॥ तिस के सदा शु
राणोक्त अर्थ की अघा करी चाहियो॥ १३०॥ चरचा व सो इ के तीस मी॥ प्रह्ला

मी के मुक्त दुखे पीछे के वली तथा सुत के वली को परि पाठा कि स प्रकार
हो स साधाम॥ ती न वर्ष पीछे व नी कुल विवेदी चाका उछे द ज्ञान ना॥ नंद ये नंद
मित्र भी अपराजित॥ गोवर्द्धन क्षी भद्र वा कुल॥ ए अंग ए के पाठो पांच श्रुत के व
ली कुल दो इ न का कमल वष १३१॥ इहां तो ई क ई सामें के तीर्थ विवेक सो बा स तव

दोंनद्वारेदोंसदोंआदिकेतीर्थेकरकीआयुवर्ष॥ईकायदाथ०अंतकेतीर्थेकर
 कीआयुकोटिपूर्वाकायधनुष५०॥इंद्रदोंकोईकहेएनामकदोंकहेदोंति
 सकाउत्तर॥मदापुराणकेछंदतरबेपर्वीवैष्वेकहेदोंसथाहि॥ततस्तीर्थेकरोत्पत्ति
 स्तेषांनामानिधीयते॥आदिसंश्रुतिस्तस्मात्सुपाश्वेदिंदेकसंज्ञको॥प्रोष्टलाक
 कटद्रुष्टाक्षत्रियःअष्टसंज्ञकः॥सप्तमः॥आखनामाचनेदनाथसुनंदवाकोत्ता
 त्रोकः॥सर्वकः॥प्रेमकश्चात्तोरणसंज्ञकः॥रिवतोवासुदेवात्पोवलदेवस्ततःपर
 भ्रान्तिर्विगलिर्धेपायनः॥कनकसंज्ञकः॥पार्दतोनारदश्चात्तोपादः॥सप्तकिन्नु
 त्रकः॥इहंकोषोरकहेहमतोअवताईअरहीनामसुनतेअयेदोंपाया॥अवदहीण
 वपडिदरिचक्किचउच्चैनायएयवलिनंदो॥सेणियसमंततदो॥तित्ययराहोति
 एयमेमणा॥मिसकाजुत्तर॥प्रथममंतोयदगाथा॥कौननेनासास्त्रकीदेयदहीकन

नो जी इहां कोंकर उपजा ॥ तव सालि सिख का जीव नार की बोला दे मंदा म छे ते ॥
 भी चेष्टां ते भी डुरंत दुष को कारण रूप बोटी तावना सों इहां मेरा जनम डूवा ॥ यह
 साल सिख सख का उपपाष्यान बटु पा ड्डि की टीको भेंजान नों पाया ॥ मछो विसा
 लि सिखो ॥ अत्र सुद्ध ना वो गा नु म दा ए र थो ॥ इ प ए ण उं अ प्र पा णं ता व द द डि ए ण ना व ए णि
 चो ॥ २१ ॥ अ च र च ए क सो न नं ती स मी ॥ अ ल ॥ अ ए णि क अ दि ना वे
 गे ति न के नां म क रो दे ॥ स मा धा न ॥ अ य म रा ज अ ए णि क ॥ सु पा श्यो ॥ अ उ दं का ॥ अ जो
 खि ला ॥ अ क ट वृ ॥ अ दं त्रि य ॥ दी ॥ अ य ॥ अ अं ख ॥ अ नं द ॥ १ ॥ मु नं द ॥ २ ॥ अ ना नां का ॥ २ ॥ अ
 र्व का ॥ ३ ॥ अ व म क ॥ ४ ॥ अ रो ए क ॥ अ रं व त ॥ ५ ॥ ना स रं व ॥ ६ ॥ व ल द्दे व ॥ ७ ॥ न ग त्ति ॥ ८ ॥
 ग लि ॥ ९ ॥ द्दि या य न ॥ १० ॥ क म क पा द ॥ ११ ॥ ना र द ॥ १२ ॥ अ चार स पा द ॥ १३ ॥ अ म र्चि म र द ॥ १४
 ए चो वी स जी व अ गा मी काल वि के म द्हा प द्मा दि अ नं त वी र्य पर्यंत ती

मरुमणसमुद्रविषंमहामच्छुद्धवा॥ राजासोरेसननीवदुतकालपीछंमरिर्कैतिमस
 दामच्छुक्कैकानमैसासिच्छनाममच्छुद्धवा॥ सालकैसीथप्रमाणदेदधरोसातेंद
 जानामतंडुलमच्छुजानना॥ पूर्वोक्तमहामच्छमुद्धुवायकैजवसोवोसवतिस
 कीगलगुफाविषंनदीकेप्रवाहकीनार्द्धश्रेनेकजलचरजीवआड्रकैचलेजंदि
 तर्दातंडुलमच्छेद्विकेंश्रेसाचिंतवनकरनेलगा॥ यदमहामच्छवडानागपद्मान
 हो॥ मुखमेंआयेजलचरजीवनकोषाड्रनहीसकदेदेवयोगपसोंदतनीवडीदेदमे
 रीहोयतौसवदीसमुद्रसत्वसंचारसोरहितकरों॥ श्रेसेमानसीपायसोंछुद्रस
 छमरिर्कैसाधुर्वेनरकगया॥ महामच्छनीश्रेनेकनक्रचक्रकैमच्छनसंतंश्रीपापस
 साधुर्वेनरकगया॥ तितोससागरप्रमाणदोंनोकीआयुद्धी॥ तदांपरस्परवातोलाप
 कीनी॥ अद्रोबुद्रसछमहापापकर्मतेमेरीउत्पत्तिद्रदांसंनैवो॥ इमेरेकर्गमलका

निशिचउनीसियंभरहणिसाविर्योपहपात्रकेसंभिले॥तिसकानुतरा॥नीनचो
बीसीकेवहतरविंवकेहदे॥चैतमलिनजानेने॥वा॥२९॥चर्याएकसैअमार्इसमी॥
प्रल॥स्वयंअमणसमुप्रवालांमहोमच्छुतेनरकजोहो॥असकीजोहमेंतंडुल
मछरहोसोसात्रुवंजोहो॥योसुनीहोसोकेसैहो॥समाधाना॥काकंदीनांमामगर
तहांजेनकुलकाउपजासोरेसननामराजा॥तिनमांसजन्मका॥नियमलीया॥मी
छेंरुप्रमत्तनामैवद्यकेकहसोमांसपेंइच्छाकरी॥परंतुलोकापवादकेडरसोच्छे
डोवस्तुषाईनजाया॥तिसतेकर्मप्रियनामरसोइयासोअपेनेचिसकीअभिला
वाएकांतविवेकहो॥अलकेपलकेविलादिकेजीवोंकामांसमंगायाराजाकि
जकीआकुलताकेवसमांसजन्मकाअवसरनपाया॥कर्मप्रियराजाकीआ
ज्ञासोनिजमांसपाककरै॥असैकरतएकदिवससपर्येकेबालकेनेंडसामरिंकेस्वयं

चारसमयलगें॥सिद्धांतमेंविरोधहोया॥यांतेंसंसारीड्नीवकीछद्मगतिकहीहैं॥
तेईमांननी॥छद्मगतमनमाननही॥छद्मांकोईओरपुछे॥वक्रगतिकेउत्किष्टी
नसमयअंतगतवहीकहे॥सरलगति॥काक्यात्वपुछे॥तिसकाउत्तर॥प्रदा
तिसतीविकोंपहलेहीसमयआहारहोयतिसकोंसरलगतिकहीये॥
सिद्धांतमेंविरोधहोया॥यांतेंसंसारीड्नीवकीछद्मगतिकहीहैं॥
जिससमयसंसारसोमुक्तहोयउसहीसमयसिद्धिअविषयोंहै॥प्रभयांतरन
ही॥बा॥॥॥अरचाएकसोसऊंसमी॥प्रह॥अरतचत्रीनेकैलाशोपैएकचैत्याना
करायाहै॥यहवातवडोपद्मपुराण॥विषंवालीमुनिकेप्रसंगमेंकहीहै॥रावण
नेकैलाशउठायाहै॥तहांवालमुनिनेचिंतनकीया॥तथाहै॥कारितेंभरतेमेदं
जिनायतनमुन्नमं॥सर्वश्तमयंडुगंबडूरूपिविराजितं॥छ॥इहाकोईकहे॥

नरसत्त्वेन विषेन च मज्जीवप्रतिवर्षदीपमालिकासां सस्योदयकैः दातव्यो निर्व
णपुजाकोरहोस्तवहीसोलोकविषेदिवालीकानुत्सवमार्गेनेहदिवालीवीति
निर्वाणपुजामचाहियो। जैसे विवाहकसमयमंगलगीतगानेन हो। विवाह
तिंभीतगावने कि सत्रार्थ हो। योतिंचौदसिके प्राप्त हो। निर्वाणपुजा उत्ति
हो। तदुक्तं सहृदयैः ॥ चतुर्थकाले चतुर्थमासकैर्विदीनता विश्वपुर
षके सकास्ति के स्वातिष्ठकलक्ष्मस्तु। सुप्रज्ञात संश्रया समग्रे स्वभावतः ॥ ६ ॥
अघातिवर्माणि निरुच्योगकोविधूयघांती धनवद्भिवंधन
वापन्नोचने निरंतरायोरुत्तुत्तुवंधनं ॥ असंयमकल्याणमद्वयमद्वय
निर्वाणमद्वेचतुर्विधैः ॥ आरीरपुजाविधिना विधानतः ॥ पुनः स
मिष्टन्नासनः ॥ एतज्जलत्प्रदीपलिकया प्रवक्ष्या

कथनावसरैकयितं॥ब॥१३॥चर्याएकसौचौबीसमी॥प्रष्टः॥ऐसमलीनहैकिअलीन
होसमाधान॥शास्त्रकीपुजाविधानविषैरेसमनकावस्त्रचढावनकाकह्यहो॥अलीन
कैसंकह्यजायातहक्तं॥सिद्धंगुणैर्नत्रविशालरम्पं वस्त्रैवरस्त्रीचदनोपमानंस
सोमकौत्रायकपटुकूलददामिजैनश्रुतवेदताया॥वल्लोरक्रियाकोत्रामेंतथा
आरजागेंनवजापविष्येणकजापैरेसमकीकह्यहो॥चौप्रश्न॥प्रथमफटकमणि
मोतीमाला॥रजतमुवर्णसुरंगपवाल॥नीयापोतोरसमजाना॥कमलबीजअर
सूतवषाणा॥एनकजांतिजापकेभेदाज्ञावसहितजपियेतजिषेदा॥ब॥१२४॥च
र्याएकसौपच्चीसमी॥प्रष्ट॥दिवालीकेंदिननिर्वाणपुजाकासमयकोंनसा॥स
माधान॥तीनवर्षसोटआठमहीतेंचोथेकालमैवाकीरह्यतद्वांकार्तिकवदि
चादसिकीपुजानतसंचंधीसंध्याकिसमयश्रीवर्द्धमानस्वामीमुक्तहुए॥तवते

न॥ श्री कृष्णेनेपसुएकत्रयदीकीयेदेनातरेसेमांसनच्छीरात्रात्राएतिनोनेएव
त्रकीयो। यदवातहरिबंशमेदे॥ २१॥ चरचाएकसौवाइसमी॥ इष्टमा। राजमतीकोम
राजाकीवेदीदे। समाधान। राजमतीराजाभोजकीवेदीदे॥ इहकीईष्टदे॥ उग्रसेनव
वेदीतौप्रसिद्धे॥ भोजकीकैसेहे॥ तिसकाउत्तर॥ भोजकाहसरानामउग्रसेनदे॥
सकायिताउग्रसेननजामना। नइत्तेहृष्टहरिबंश॥ सविधियाचितनोभमुताकर
दहादिदुबिवाधितवांधवः॥ नरपतीन्सकलानसकलत्रकान। कृतसन्निहित
कृतगौरवान्॥ २२॥ चरचाएकसौतेइसमी॥ प्रह्लादः॥ स्वसांवराग्न्यायविवेनोनवे
अतिसन्निधिसानेदे॥ दिगंवराग्न्यायविवेकेयाकरदे॥ समाधान॥ दिगंवराग्न्यायव
नोनसन्निधिसकहादे॥ तइत्तं॥ धर्ममत्तप्राबकाभरे॥ हरितांडुरबीजांडुलवला
आसुकंत्यजनूजागृत्कपश्रुतुनिधिः सचित्तविरतः स्मृतनावा। सचित्तआगजति

ऋचलायागं ममीके चामसो अनेक विद्याधर लोपा मगे इत्यादि राजपद में त्रसवध
 वा मुनि ये हे ॥ और पांचु वंगुण स्थान विषे त्रसवधक निषेध हो ता ते यदप्रसंग को या क
 रवने ॥ तिसका उत्तर ॥ पांचु वें गुण स्थान के दर्शन प्रसिमा प्रमुख गार ह भे दे हो ॥ तिन
 में जहां पूर्वोक्त पंच उदं वगैदिका त्याग दो या तहां पहिले दर्शन प्रतिमा कहिये
 अरत गंगादि के सधु मांसादि का गुह्य नही ॥ तो ते त्रसवध के परि त्याग विना भी ॥ ५
 ने के पांचु वा गुण स्थान में भवै जै सैं मावस पीछें चंद्रमा की कला के दर्शन विना ही
 सुकल पक्ष कहियो ॥ और व्रत प्रतिमा वाले के त्रसवध का निषेध है सो भी सुल त्रस
 वध का निषेध है ॥ सख मत्र सवध का निषेध तस के भी नही ॥ तहां भी गुण स्थान पांचु
 वा हे ॥ २७ ॥ अश्वा एक सौ इक्की समी ॥ ३५ ॥ ॥ मादों वं त्र के राजा मुत्तम जै नी हो ॥ तहां
 ने मनाथ जी के विवाह मंगल की वरियां श्री कृष्ण में यमु एक त्र को को य ॥ समाध

जीवगणाः भवन्ति॥ ८॥ अन्यत्रायुक्तं॥ संनिम्नं द्विदलं देयमासेस्तु मथितद्विभिः॥
निष्पद्यते यतस्तत्राविधिः स्रस्त्रसद्विनिः॥ इदं काद्रुद्वं॥ यस्य तो अन्नविदल
कादोषकत्वा॥ काष्ठविदलकान्वादिषदै॥ तिसकागुहग॥ काष्ठविदलकदिष
किसदीमूलनास्त्वमेकस्यादियतौ प्रमाणदोवा॥ चरन्ना॥ ए॥ संपूर्ण॥ पुनः एक
सौवीसमीकथ्यते॥ प्रश्ना॥ अरतगामादिसम्पकदिष्टीदं इन्नके केन सागुणस्थान
कद्विये॥ समाधाना॥ जिनके पंचउदं वरती नमः कारकात्यागदोय॥ औरसामतविस
नकात्यागदोयतिनके पांचुवांगुणस्थानकद्विये॥ तदुक्तं॥ अश्वमाल इस्सलपुण
विसणुन एऊकविदोद्रासमेने सुविसुद्रमद्र॥ पटमउसाधयसोद्रा॥ इदं काद्रुद्वं॥
जिनके संगमक्रियादोय॥ जिनके सायसो पंचेन्द्री जीवतथा मनुष्योकावधदो
या॥ तिनके पांचुवांगुणस्थानके याकर संभवे॥ अरतजीने वास्सुवलके मारने केने

इह कथन न तत्तथा कोत्रा मं जानना ॥ १७ ॥ चरचा एक सो अवारमी ॥ प्रश्ना ॥ वार्द
 म अन्न च विषे लोनी अन्न च विषा कही ॥ समाधान ॥ दोड मुहूर्त के अतं तरलोनी वि
 षं सन मूर्ख न अन्न स उपजे दे ॥ तिसरे अन्न छे दे ॥ स डुर्क ॥ आ मिस स रिस उना सिय उ
 सां अंध उजावा प्रदोय मुहूर्त न दं उपरि दं लोणि उ स मुखा द ॥ १८ ॥ ओर मला चार
 गंथ विषे व डुत म द कार क कही दे ॥ तिसरे संयमी को दोय मुहूर्त के उर मो अ
 न छे दे ॥ १९ ॥ चरचा एक सो उनी स मो उ च्यंते ॥ प्रश्ना ॥ विदल का क्या स्वप्न पै दे ओर
 तिसरे कया दो स दे ॥ समाधान ॥ जिस अन्न के दोय दल दोया मंग म स ए उ र द च ना ड
 त्या दिक अन्न अपक्व दही तक्रा दिसो मिले तो त ल्काल सन मूर्ख म जी व उपजे ॥
 मुख की वाफ सो मरि जां या छि प्रे से जे न द्रास्त्र मे क ह्य दे ॥ त डुर्क ॥ यो पक्त त कं धि दे
 लान्न मिश्रं नुक्ति विधत्ते मुख वाष्प संगे ॥ तस्यास्य मध्ये मरणं प्रपन्नाः ॥ संमूर्ख का

सतीनवर्षीयहव्रतअनेतवीर्यनेकीनांसेचक्रवर्त्तिपटकीप्राप्तिनईविमयउत्तमार
नेकीनासेसेनापुतिऊवा॥राजासिंधनेकीनासेअत्तिवासदेवऊवा इसव्रतकेप्रम
वसेस्वर्गमोक्षकीप्राप्तिहै। व्रतकीपूर्णताविषेउद्यापनकरै। जिनमेंद्विगविषेचंड
उछाहसोंकोनपूर्वकपूजाबिस्तोरै। धुजाचंदोवाघंटाचमरतालकंसालकलसजा
रीइत्यादिचौबीसप्रकारेदंडरेंदेय॥मष्टकूलसेनेहलेकीडोरीप्रमुखत्रास्रकोंदेयअ
ष्टप्रकारपूजाकरै। आहारदानऔषधदानत्रास्त्रदानअस्त्रेदानयथायोग्यकरै।
अजितिकाकोसाडीदेयदुस्त्रककोवस्त्रदेयचतुर्वर्णसंघकोनोजनकरावै। इतने
करनेकोंसमर्थनहोयतोथथात्राक्तिकैरोघतछिगुणकरैइसप्रकारजोकोईस्त्री
छुसवअष्टाक्तिकव्रतकोअत्राचारै। भावनानावैतिसैत्रभसोंस्वर्गमोक्षहोया। त
थाइसकाव्याख्यानकरै। अत्रावणकरै। अघानकरै। तिसकोंसहापुन्यहोइ॥बु॥॥

श्रीकोंपूर्वोक्तविधिवरिक्कैघरआइसंपूर्णज्ञानकरै॥इसदिमकोपंचलहरासंज्ञा
 होचौरासीलाघउपवासकाफललेहै॥इसहीकोमुखसोक्षियाकहेहै॥अतिरसको
 समस्तविधानकरिक्कैगोनविनाअंवलनीकरससोअकेलचावलकेजातकानो
 जनकरै॥इसदिवसकोस्वर्गसोयानसंज्ञाहै॥चालीसलाघउपवासकाफलहै॥
 यहआंबिलजनना॥होचिोदनाकोपूर्वक्रियासवकरिक्कैघरआवे॥आसुकतीन
 तरकारीसोअकेलजातकानोजनकरै॥अटकवालाअन्ननानकरै॥यहसर्वसं
 पत्तिकरदिनेहै॥एकलाघउपवासकाफलजानना॥इसंत्रिवेल्डीकहेहै॥१॥
 ऐमासीकोंपूर्वविधिसमस्तकरिक्कैउपवासकरैश्रुतिदिभकथासुने॥इसदिम
 कानांचइंधजैहै॥तीनकाडिपंचासलाघउपवासकीयेकाफलहै॥१॥यहव्रत
 उत्तममध्यमजघन्यजेदसोतीनप्रकारहै॥उत्तमसातवर्ष॥मध्यमपांचवर्ष॥जघ

बन्नारीरसंस्कारकानियमकैर॥ चैत्यालयकेसधर्मंडपकरिकेंऊपरस्वंदोबावांये
 तिसमंडपविषैमेरुथापै॥ अष्टमीकेंदिनदेऊरेंआइअनिवेकपूर्वकपूजाकाउ
 छाहकै॥ तिसकेअनंतरप्रभुकीतीनप्रदिछिनादेययथाशक्तिपंचनमस्कारमे
 त्रकेंजपै॥ तिसदिनउपवासकै॥ इसप्रथमदिनकानांमनंभीष्टरनामदिनदे॥ इ
 शलाषउपवासकीयेकाफलदे॥ यानवमीकेंदिनसमस्तपूर्वोक्तविधिक
 इयात्रदानकेअनंतरपारणाकै॥ इसदिनकानांयअष्टविभूतिनांमारिनेदे॥ इ
 द्वादशाहजारउपवासकीयेकाफलकहादे॥ २॥ वन्यामीकेंदिनभीपूर्वोक्तविधिव
 रिकेंप्रा नीनातसोंएकाग्रनकै॥ इसकानावत्रिलोकसारनामदिनदे॥ इहांसाव
 लाषउपवासकाफलजानना॥ ३॥ एकादशीकोपूर्वोक्तसवकरिकेंअल्पआहार
 एकवारलेय॥ इसदिनकानावचउर्गवैद्योंभलाषउपवासकाफलदे॥ ४॥ श्राद

यस्मोतिथिसंपूर्णज्ञानमी॥ तउक्तांयातिथिसमनुप्राप्यउदयंयातितास्कर॥ साति
 थिःसकलाक्षेया॥ दानाधयनकर्मसुतिसकाउत्तरायहश्लोकैर्जनकानदी॥ निन्दे
 सिंघनामैवैश्वर्यकोहो॥ जिनैमैतीनमुहूर्त्तसोघटतीउदैतिथिकहीनही॥ ती
 नमुहूर्त्तसोघटतीउदयतिथिमानैसैंआज्ञाभंगकादोषलगैहो॥ औरउपवा
 सकेदिनउपवासमकुवा॥ सोतैव्रतभंगनीहो॥ फेरबोलाहैमैतौउपवासकरनाब्र
 तभंगक्वोंकरकुवा॥ उत्तरासिंदूकेसमयमेहकीवर्षाहोयतो॥ धसम्यवउत्तहोय
 ॥ १६॥ चरबाएकसोसत्रहनी॥ ॥ प्रश्न॥ ॥ अष्टाष्टिकव्रतकीविधिकिसप्रकारहो॥
 समाधान॥ आषाढतथाकर्तिकअथवाफाल्गुनकेमहीनैंशुक्लपक्षकीसप्तमी
 केदिनदेकुतै॥ त्रौवै॥ अश्विने॥ वैश्वकिपूर्वकआनंदसो॥ अष्टपुकारे॥ पूजाकरे॥ तिसदिन
 सोंरहो॥ सवहीसो॥ नमिसयनपूर्वकब्रह्मचर्यकाधारणकरे॥ तांबूलप्रभु

मुहूर्त्तत्वापि नीतुदयति एको न सन्नास्त्रमेकही हो तिसका उत्तर ॥ आत्रा
धरक्तसयसाचारविषे कहि हो ॥ तथालि ॥ त्रिमुहूर्त्ते पियत्रार्क न देसत समयस्य
यसातिथिः सकलाज्ञेया प्रायः धर्मेषु कर्मसु ॥ ७७ ॥ आयस्यवयस्यस्यकोर्यः देना
कालादिवशादपथापि न भवति ॥ तदन्यथा भवने किं ॥ तदुक्तं मुनिमुच्यते पुराण ॥
ब्रह्मांशो पुदये ग्राह्यः तिथेः व्रतपरिगृहः पूर्वो न्यतिसंयोगाव्रतहानिकरो यतः
व्या ॥ अत्रार्थः ॥ व्रतपरिगृहः सूर्योदये तिथेः षष्ठांशो पिगाह्य इत्यत्रापि त्राष्ट्र
षष्ठांशादधिको ग्राह्य इति निर्ववादः नन्वत्राष्ट्रसिद्धोत्पत्तेरुक्तः यस्मात्तत्र
नपरिगृहाणां षष्ठांशात्पूर्वमन्यति तिथ्यसंयोगः व्रतहानिकरैः व्रतनाशकरो भ
वतीत्यर्थः ॥ त्रिमुहूर्त्ते पियत्रार्क न देयस्तर्गतेषु चान्तिथयः सकलाज्ञेया उपवा
दिपर्वसु ॥ ७८ ॥ इहा कोऽपि रक्ते ॥ इमेतोयो सुनहि ॥ जित्तिथिमे सूर्ये न देहो

प्रास्य क हिये मूल दिन सो अरंभ करि के ॥ उत्तर दिव सो ॥ कहिये ॥ अगले दिन विषे
 व्रत संपूर्ण भवति ॥ कहिये व्रत संपूर्ण होया ॥ अष्टाक्रिका दिव्रत की विधि न विषे तो
 यद्वत्प्रार्थ्य संत वै हो ॥ नावाथी ॥ तथिका प्रमाण च उवन घड़ी सो लेये पेंस घड़ी तां द्वे
 हो ॥ तथा कुछ घाट छुास व घड़ी होय पूर्ण छास व नही होय ॥ सदां जो पहले दिन
 सो उपवास का आरंभ कीजे ॥ अगले दिन मेमें पांच घड़ी दिन चेटे तव समाधि कीजे
 पांच घड़ी के उरें पाणों न कीजे ॥ इहां कोई के दे अगले दिन मेमें भी छह घड़ी होय
 तव काथे ॥ पेंस व घड़ी सो वटती ॥ तथिका प्रमाण होय ही नही ॥ प्यो ते अगले दि
 न मेमें छह घड़ी कहें ॥ तें आबो ॥ जो पहले दिन साव घड़ी सो कोई घड़ी तिथि घट
 ती होय तो अगले दिन उदय काल मेमें छह घड़ी पाइये ॥ सो तथि उपवास को योग
 हो ॥ जाते तीन मुहूर्त की उदय तिथि जें न मेमें लेनी कह ही है ॥ इहां कोई प्रच्छेती न

पचमीकृष्णपंचमीति। एगुणसंपत्तिर्जेष्टजिनवरकचलचंद्रायणमेघमालारत्नाव
 लीमुक्तावली। दत्तादिजितनें जैनव्रतेहं सितनें सब प्रमाणदे॥ १६॥ चस्वाएक
 सत्रहमी॥ अश्व॥ चतुर्दशीआदितिथिकी घटतीआनिपेडैदे॥ तद्द्वंद्वतविधन
 कैसें होइ। समाधान। गाय। नयविहीणं चमद्रमे॥ तिदियपटाएहोइ जइयाऊ
 मूलदिएणंपारं नित्यअंतदिवसमिहोइ सममंत॥ ७॥ अतविधनिमधेतिये। पत
 नंमचतियदाखलुमूलदिनंप्राप्तअंतदिवसेचवत्तिसंपूर्ण। अतविधीनांस
 ॥ कदियेअष्टमीचतुर्दशीआदिव्रतकीविधिनविषे॥ यदातिथेः पतनं नवति।
 ॥ १७॥ कदियेजवत्तिथिकापतनकदियेअमहोय॥ आचार्य॥ जहांअदयेमेंती
 नमुहूर्तबायनीतिथिनहोया॥ तिसतिथिकान्त्रोमहुवाकदिये॥ तदामूलदिन
 प्राश्नउत्तरदिवसेव्रतंसंपूर्णभवति॥ ॥ तदाकदियेतत्वा॥ मूलदिनं

दनामदनामधुर्वपतिवैसरागनदोहि॥तिनकोन्प्रतिनदशध्वीसाधुकद्विद्ये॥
 यद्ववातमूलाचारविभेकदोहि॥१४॥चरचाएकसोपंडमी॥प्रह्ला॥अष्टप्रकार
 पूजाविधेवडाधुन्येह॥इसधुन्यकीप्रसंसाक्चनगोचरनद॥तिसतेसर्वारंभके
 त्यागीमुनिराजपूजाकाउपदेशकरं यद्ववातप्रवचनसारसंकदीहि जिलिंदर
 जोवरणसोचा॥इतिवचनात्॥१५॥चरचाएकसोसोत्तमी॥ब्रह्मरोहणीकेवसवि
 धानकाक्यासरूपेदे॥समाधानाजैसैशुक्लस्मयप्रबैकेपंडदेदिनअष्टमीचो
 दन्निकाठपवासदोहो॥सैसंमन्नाईसवैदितगोदणीवामनमदनअवैहेतहाउ
 पवासदोहो॥ग्रास्त्रविबेइसकीमर्यादकदीहि॥उद्यापनसमैतयद्वनममहाप
 लकादातोहो॥तुर्क॥योगीइदेवैः॥ ॥दीवइदिसइजिएवरहं॥मोदहुंदोइ
 रावाइ॥अहउववासइरेहिएहिं॥सोयविपलयदंजाय॥छि॥अथवाशुक्र

तद्वाञ्छन्नुदयडीपर्यंततीर्थकारप्रभुकीवांनोप्तिरहे। आरमुनीस्वरकेसामायिकसे
बंधीनीनहीकालदेअर्घरात्रनही॥ तिनकीमर्यादाजुदीहे॥ तिसकाउत्तर॥ चोरा॥

थिकचारघडोरान्नसौंदोहे। स्त्रयोदयतांईतिसकीसमप्तिहे। मध्या
सामायिककालदेयघडीहे। फिस्त्रपरान्नकेसामायिककालचारघडी
। मन्त्रकेदर्शनसंतिसकीसमप्तिहे॥ इहांकोईपेछे॥ ॥ यहमुनिकेसामा
यिककालकीमर्यादकहांकंदीहे॥ तिसकाउत्तर॥ ॥ इइनेदिआचार्येकतनी
दीहे॥ तथादि। घटीष्वुष्टयरात्रेः कुर्यात्सर्वोक्तवंदना

नियमो। नादोघयमुदाहृतं॥ ६०६॥ अफराफ्रेनुनालीनांचउष्टयाः समा
तांमन्त्रवर्तनान्मुच्येत्सामायिकपरिगृहं॥ ६०७॥ ॥ ३॥ चस्वाएकसोचनुदना
मी॥ ॥ ॥ १॥ अत्रतिनवत्रापूर्वोसाधकैर्नैसंकविये॥ समाधानाविद्यानुवा

क्रमणपट्टदिकल्पाणोपरस्वित्तसंविन्तो॥ जिएजिएधरवंदगाडंच॥ ११॥ भचर
 चारैकसौवारमी॥ १२॥ मुनिराजकोषडावस्पकक्रियाकेपाचमेंकहीफेर
 देअत्याचारविषेकेंकोकरहे॥ समाधान॥ समाइक॥ लुतिशवंदना॥ अतिक्रमण
 भाप्रत्याख्याना॥ कायोत्सर्ग॥ एछहोंआवनपकक्रियाकेतांवहे॥ गाथा॥ समर
 युवोयसंदणपडिक्कमरांतदेवगायबं॥ पचरकाणविसगोकरणीयावासयाछे
 प्यावा॥ तथान्चोत्कंअमृतचंदस्सुरिणा॥ अर्थो॥ इदमावनपकषट्समतस्तववंद
 नाअतिक्रमणप्रत्याष्यामंवलुबो॥ बुत्तर्गश्चेतिकर्तव्यं॥ ॥ एछहोंक्रियासाधके
 समायककालविषेजानमी॥ १३॥ चस्वाएकसौतरमी॥ १४॥ तीर्थकरकेसमा
 वसरणमेंतीनकालवानीबिरेसोईमुनीस्वर्गेकेसामाइकासमर्थहे एदेनोंकार्यएक
 कालकोकरसंभवे समाधान पूर्वक्रमभाक्तप्रपराक्तअरुएचारकालहे

नाष्टशीमध्यलोकासंबंधोद्विक्त्रधोलोकासंबंधोदे॥समाधाना॥सुमेरुपर्वतकीर्णंचाई
 कंदसेमतलावचो॥जनकोदे॥तिसतेयहचित्राष्टशीमध्यलोकासंबंधोद्विक्त्र
 कासंबंधोजुदीहो॥वहचित्राष्टशीमध्यलोकासंबंधोद्विक्त्र
 द्वाज्जो॥जनकीसुटाई॥सकीनी॥जा॥मनी॥यहकथनविस्तारस्वत्रिलोकासारवि
 चेहो॥ब॥ए॥अचर्याएकसागरमी॥प्रश्ना॥छेवगणस्यामवत्तौमुनिकेआहारकक्षा
 रीरसंदेहनिमित्तनिकेसैदे॥किज्जोरनिमित्तनी॥निकेसैदे॥समाधाना॥आदारिकेर
 हसो॥अगोचरहस्त्रे॥विषेकेवली॥श्रुतकेवली॥हो॥हितिनके॥निमित्तआहारकक्षा
 रीरनिकेसै॥तथानिक्रमणादितीनकल्याणकेकर्तमानहुवेनिकेसै॥
 टाई॥धायवत्तीतीर्ययात्रादिके॥निमित्तनी॥उद्यमी॥मुनिराजके॥निकेसै॥प्रदकथन
 ॥अटसारके॥वेदमार्गणाधिकारमैदे॥तथा॥हिएयखित्तेके॥वलिङ्गविरहएणि

आ सुमेरुपर्वतकी उंचाई कंदसमेत लाषे जो जनम को द्योति सके उर पर चाली स यो ज
न उर तीची वेडुय मणि मयी च लिको छे सो लाषे यो जनम मंग भित्तें दे कि जु दी हो सो मा धा
सुमेरुपर्वतें दृजार जो जनक दमै हो आर पृथ्वी सो पांचै स यो जनम ऊपर नंदन वने ह
ति सके सो दे वा स व दृजार यो जन ऊपर सो मने नंदे ॥ तिसके छत्ती सदृजार यो ज
न उर पर पांडु कना मा वने द्योति सके मधु चाली नार्यो जन ऊंचे चिन्ह लिको द्योति सके स
षे यो जन ने भंग भित्तें नंदी जु दी हो ॥ इस मनांति वेडु हरिवंश मे कत्या द्योतया द्योति विदे दंते
त्रम भस्तुः ऊरु छे त्रय या वधिः ॥ यो जनानां सदृश एण न वति न चो छितः ॥ अथ मे स
लात्रय संयुक्तः रत्ना तो मरु
द्रासी स च त्वरिंश उद्धया ॥ ८३ ॥ चरचा १०६ संयुही ॥ एक सो दनु मी ल छ्येत ॥ सुमेरु प
र्वत दृजार जो जनक दमै हो सो कंद दृजार यो जन की मोठी चित्रा पृथ्वी विवे चें दे ॥ वह सि

रघुं डड्डये । इस प्रकार कलनाकर तेंलाषदशलाषको डों वरुषं डड्डो दि। यति
 कानि विभागा स्वष्ट एषु मागे मतमें सिद्ध जवानही। नीकें विचारि देखौ ।
 स्वष्ट ए जे नहुं मे सिद्ध है ॥ १७७ ॥ चरबा एक सौ अष्टमी ॥ प्रश्ना ॥ समी श्वर के विमान का
 वर्ण स्पाम कहुं हो । वनारसी दामें भेभी नौ गही के कवि तें मे सां मदी । लियो है । सो कैसा
 है ॥ समाधान ॥ त्रिलोक प्रदक्षिना मंत्र य विषें सनी श्वर का विमान सुवर्ण मयी कह्या
 है ॥ तद्यथा ॥ गायत्रा ॥ चित्तो चरिमत तला दो गंत ए यण वसयो डजो यण ए उ वरि सु च
 ए मया ड्रां स ए य राणिं य दे कुं ति । ॥ चित्ताष्ट छी तें न बसे यो जन न उर पर सनी श्रु
 र का पद तन मध्य लोके में है । य ह बड्ड वचन का प्रयो जन जान ना ॥ १७८ ॥ तथा वडे ह
 रिवंश विषें चो ड्स ही भोति है ॥ तथा हि ॥ भोने श्वर विमाना नित पनी यम यानि
 आ भ्रं गार क विमाना निलोहित सप्तम्या निच ॥ १७९ ॥ त्वस्वा एक सौ नवम ॥ अत्र

दूसरा नांव वंसी है। वेई जालांतर प्राप्ति सर्य की। कि राण करि गोवा से दिवाई दें है। एह छंद
 वंशी मिले तव एक मरीचि नामा होय। छंद मरीचि की एक राई होइ। एतावताराई के
 एक हजार अस्सी बंड कुबो। यही बंड परमाणु का प्रमाण सिद्ध हुआ। इस से तै अोर ऊँ
 सुस्म वस्तु नही। याही हेतु सो परमाणु संज्ञा हो। इस प्रकार सांध्य मत बाले ने परमाणु
 एकालक्ष न कह्य। तव जे न कह्य है। यह तो उभय सत्पंक हो। परमाणु सांध्य अोर कुछ
 सत्त्व वस्तु नही। जिसका दूसरा बंड न होय। तिस परमाणु का द्विषे यो तै एक राई के
 एक हजार अस्सी बंड करि। परमाणु का उनमान कह्य। अत्र प्रपेने जेने तुम परमाणु
 एको वहुत सत्त्व सत्ता साधी। परंतु परीक्षा कीये परमाणु का यदुन मानव न
 तामही। कोहे तै राई राई वरावर द्वा हजार अौषध एक त्रयी सत्त्व की जे। तिस के
 एक राई मात्र सत्त्व विषे को न सी अौषध नही अत्राई त्रै से एक राई के द्वा हजार

मिलें तव एक दुष्टिरेणु नाम धं होय । आचतुष्टिरेणु मिलें तव उन्नम नो गच्छ । मित्रिका
 एकवाला ग्रहोय । आचतुष्टिरेणु मिलें तव मध्यम नो गच्छ । मित्रिका बालाग्र होय । आचतुष्टिरेणु
 तव एकजघन नो गच्छ । मित्रिका बालाग्र होय । आचतुष्टिरेणु मिलें तव कर्म भूमिका । एकवा
 लाग्र होय । आचतुष्टिरेणु मिलें तव धर्मगुण । आचतुष्टिरेणु मिलें तव ज्ञान । आचतुष्टिरेणु

स्मर्तुं नो भवेत्कदापि । इदं कोटि सांख्यमती । कहे । असी सुस्मता

की अनवस्थसी । इजो हे तिस तें सांख्यमती । एवा दिल दृष्टां दर्शयति । त्र
 अक्षीतरद कदापि । तदुक्तं । सांख्यमती । एवा दिल दृष्टां दर्शयति । त्र
 सरेणुः बुधैः प्रोक्तः । त्रिनाता परमाणुनिः । त्रसरेणुस्तु पर्यायैर्नाज्ञा बन्त्री । निगद्यते
 जालं तरंगतः सर्पैर्कैर्वेत्री । विलोक्येता । तानिः । यद्विर्मेशिः स्यान्नामिः । यद्विश्चरा
 जिका । याश्चोक्तो विषयं यदुतात्पर्यं है । तीस परमाणुका एकत्र सरेणु हो । तिसही का

णगलनरूपेह। योर्त्तिपुङ्गलकीपरमाणुकोपुङ्गलसंज्ञाहै। तदुक्तं॥ वार्णगंधरसस्पर्शः
 मूर्णगलनचयत्त॥ कुर्वन्तिस्कंधवत्तस्मात्पुङ्गलाः परमाणवः॥ इहांकोईफैरकहे॥
 वार्णादिकेपूरागलनसोपरमाणुकोपुङ्गलसंगपासिद्धउद्गीघगणुकादिवंधकोबका
 कहेगो॥ तिसकाउत्तराध्यणुकादिवंधनोहिंतेअपनेछेदेअकेपूरागलनरूपस्व
 भावकरिपरिणवैहै॥ परिणवैंगेपरिणयेयेयांवंधकोनीपुङ्गलदीकहेगो॥ इहां
 कोईपूछै॥ परमाणुकासंख्यानकोहै॥ उत्तरा॥ त्रिपुराणकेवीसमेंपरमाणुका
 आकारगोलकहोहै॥ तथाहि॥ अणवः कार्यलिंगाः सुः॥ द्विसप्तर्षीः यमिमंडलाः॥ ए
 कवर्णरसानित्पाः॥ सुरनित्पाश्चपर्ययै॥ औरनीकोईपूछै॥ परमाणुकाअनुमान
 क्याहै॥ तिसकाउत्तरा॥ अनंततामंतपरमाणुमिलेंतनएकअवसंडनामस्कंधकी
 जातिहै॥ अत्राचअवसेइमिलेंतवसेंज्ञासंज्ञनामएकबंधहोय॥ अत्राचसंज्ञासंज्ञ

विषडंशत्वकहेदोषनदी॥ तडुर्त्त॥ श्लोक्तः॥ आद्यं तरहि तं प्रयं विश्वमरहितं त्रा
कं। स्कंधोपादानमत्युद्धं परमाणुं प्रचक्षते। पात्रप्रथी। परमाणुं एतादृशां प्रचक्षते॥
परमाणुनामवस्तुकोऽसौ साकद्विचो। कैसो हे। आद्यं तरहितं॥ आदिश्रं तरहितं
अनादिनिधनेन। न शैरैके सो हे॥ प्रयं॥ द्रव्यरूपे दो। भावार्थं। पर्यायस्त्वप्युपरि नदी
द्वौ दो। इत्यरूपपुङ्गवपरमाणुसदाश्रविनाशो हे। शैरैके सो हे। विश्वमरहितं त्रा
अंशकीति न्तता सं राहितैव। भावार्थं। पर्यायार्थिकं सं परमाणुविवेचं षडंशकीकल्प
नात्वा। इत्यर्थिकसो। निर्मत्रा दो। शैरैके सो हे। स्कंधोपादानं। स्कंधस्त्वपुषुङ्गलकोका
राणो दो। शैरैके सो दो। अत्युद्धं। अतिंद्रिय हे। किमींद्रंद्रियसंशतवनदी। यह कथम।
शास्त्रादस्यैके सम्यक् प्ररूपणाधिकारसो हे। इदं को इ प्रश्रवैके। परमाणुको पुङ्गव
संज्ञाकही सो काहेतं। तिस्रस्का उत्तर। अत्रैके सत्रारिसवर्णगंधकरिस्कंधकीनां ईश्वर

षाई देहो॥ तिसका उत्तर॥ तिनके विमान बाहू के देवतानुकी देह बिरती दिवाई
 देह॥ १०६॥ चत्ता एक सो सप्तमी॥ प्रभ्रा॥ परमा एको षट्कोण कदना वसंत
 के देह॥ सो षट्कोण का कदवै॥ समाधान॥ पुञ्जल की परमा एनि विनाग
 प्रदेना मान दे॥ जिसका अदि अंश मध्य एक ही देह तिसमें षट्कोण को कर संज्ञ
 बोयाते॥ जिस अना के प्रदेना विषे परमाणु बोलत हां षट्प्रदेना का स्पत्री है॥
 चारों दिना के चार प्रदेना का स्पत्री है॥ दोनो अंध के प्रदेना का स्पत्री है॥ प्योतप
 रमाणु षडं अत्वं है॥ षट्कोण नदी॥ इहां कोई अा संका करे॥ पुञ्जल की परमा ए
 तो निरंज है॥ तिसको एक काल एक प्रदेना विषे षडं अा का योग देतो तिसको
 अणु मानत्र बंध है॥ परमाणु कदि को कहे॥ तिसका अंश॥ यहनु मसांच कदी
 यद्यपि प्रमार्थिक नय करि परमाणु को निरंजाल है॥ तो भी पर्यार्यिक नय क

चैजायनवस्स्येकान्नास्तजानना॥१०५॥त्वरचाएकसोषधी॥प्रश्ना॥अनाका
 उक्तापातहोहो॥लोकविवेति सकोतारादटाकदेह॥सोवचाहे॥समाधान॥तारा
 गणके बिमानतौसासंतै॥एकेंकावरपेडंगे॥जोतिषीदेवकीतवअपुपरीहो॥
 ॥उसकीदेहगिरतोदिषाईदेहे॥इसकाउदाहरणदेहसमपुराणमेंदेखुमा
 नविरक्तप्रस्तावविवेदे॥तथाहि॥अथोपरिविमासनिषणः॥शिरवरांतके॥आया
 पुत्रालायाःकैलाश्राधित्सकेनपमे॥१५॥ज्योतिष्यथासमुत्तुंगा॥स्मृतस्फुरि
 तप्रभो॥ज्योतिर्विवर्धंभक्तस्सुरालोकततमेतवत॥१६॥अग्निंमयच्चहाकष्टसं॥
 मोरनास्तितपत्तं॥यत्रनत्री॥उतिस्वेकुंस्तुःसुरगोषपि॥१७॥मडिडल्का
 तिमंगुंजन्मसर्वसः॥देवानामपियत्रान्मप्राणिनां॥तत्रचाकथा॥१८॥॥इहो
 हंसंदेहरहा॥दिवतातोअपनेखिमानमेंतिहैदे॥उनकीदेहकोकरिषिरीदि

एकसौपांचकी॥ प्रश्न॥ जंझहीयमें द्योयचंद्रमां दायसर्सैं हैं। एकसूर्यका प्रकास
 लाखबोजनताई सुमां हो सो बंधो करे दो॥ समाधान॥ भुमेरकी प्रदब्धनाकरतनि
 षिदपर्वतये सूर्यका उदै इ समारते दो॥ त्रिविधंतव द्योयदें॥ जवपर्वतकी नुजकि
 विस्तारमें पच्छयनसे ~~होइ~~ पचदत्तरजो जनववाकी रहै है। तहां सूर्यके चलने
 के एकसौ चौरासी मार्ग हैं। तिनमें कर्ककी संक्रांति के दिन प्रथम मार्ग विषं उदय
 होइ। तहां सें सेंतालीस द्जार द्योय सैंतिरे सबजो जनम ग्रयो ध्राऊं छसरसदे
 योतें सेंतालीस द्जार द्योय सैंतिरे सबजो जनम ऊंछसरसा सूर्यका प्रकाश आ
 गें ग्रो रहै। सब चौरांगे वे द्जार पांच सैं छत्तीस जो जनसरस ऊंछवा॥ आधे सुमे
 र ताई दहिनी जर समुद्र के छे वे नागतां द्वां ई उरय दसूर्यके प्रकाश की म
 री दत्रिलोक सारमें कही है॥ पच्छपनसे पचदत्तरयो जनपूर्वी कनिषिध पर्वत

प्रमाणतारागणदीपकेच्छत्रविष्वक्सेसमांदि॥ तिस्रकारुत्तर॥
 धीतं सानैसै नैद्वेयोजनअपरएकसौदत्रा योजनप्रमाणजोतिषीपटलकीमु
 टाईहै तिसपर्यंततारागणजानेना॥ फेरप्रच्छे॥ यहवातकहांकहीहै॥ तिसका
 न्नर॥ त्रिलोकसारमेंकहीहै॥ गाय॥ अच्छइसणीएवसंयोगचित्रादोतारागदि
 वदिये॥ जोइसपडलवदह्वांदससहियंजोयणाएसया॥ ३५॥ टीका॥ आस्तेश
 न्नवत्रातयोजनानिचित्रातः तारकात्रपितावत्तवत्रातयोजनपर्यंततिष्ठंति
 तिष्ठपटलवाकुलसंद्यासहितं योजनानां सतो असेही त्रिलोकप्रज्ञप्रिमेंक
 था॥ एवदिजुदससंजोयणासदणिंगंजणउवगिचित्रादोरागपणतलेतारा
 णिवहलेदकुत्तरसदग्नि॥ अर्थ॥ नवतियुक्तसप्तयोजनत्राता निगत्वा
 तः गगनमेलताराणां पुराणिवहलेदन्नोत्तरत्रोता॥ ३६॥ क्रिया

कोनायेडहे किं ब्रोटेहे। समधान॥ जितिवी। विमानों के जो जनवा कोनाया। स्वमेव
 उकेहेहे। एक जो जन के एक समनाग की जेति ने मे छप नभाग चेंद्रमा कि संडलका
 बिस्तार है। अतनाली सनाग सूर्य का बिस्तार है॥ ओरगृह न छन्न तारागण विषे॥
 उत्तिष्ठ विमानका विस्तार॥ बिस्तार कोनाएक। जघम बिस्तार कोनाया वात हां
 एक चंद्रमा का परिवार चंद्रमा इंद्रा सूर्य प्रतिंद्रा॥ अतनासी गृह॥ अतनाद्रसमस्तत्र॥
 कासमृदुजार नौ सै पचद्वेत्तर कोडा कोडितारागण॥ यदुप्रमाण है। प्रहां उन्नीस
 अंकमात्र तारागण विषे जघम अंतर कोस का सातुवां नागमभ्र अंतर योज
 ना॥ ४०॥ नात्किष्ठ परस्पर अंतर योजन दृजारा १०००॥ इहा कोर्द संदेह करे॥ लाष
 जो जनका जंवी धीपे दे सोरे दीप का छिन्न फलमा तसे नै च कोड छप नलाय चौरां
 गौवेदुजार एक सौ पंचास योजन कस्या है॥ तिस कै दशा अंक दो बेंत हां उन्नी

नतादिचारांस्वर्गमिंदेवरिद्धिकादर्शनसमम्पत्ककोंकारणनही॥ औरवाकीका
रणहै॥ नवगैवयविवेजानीस्मरणधर्मश्रमणसमम्पत्ककोंकारणहै॥ तथाकोई
समम्पत्कदिष्टीअहमिंदृष्टास्त्रकीपरिपाटीकरताहोयतिसकाश्रवणज्ञाननाआ
येअनुदिष्टाअनुतरवालेपूर्वगृहीतसम्पत्कहै॥ यातेतिनकेंजानीस्मरणधर्मश्रव
णकीकल्पनानही॥ तिर्येचमनुष्यकेंजानीस्मरणधर्मश्रवणजिनविंवददर्शन
इत्यादिएसम्पत्ककेकारणहै॥ इहांकोईसंदेहकरै॥ नारकीतथादेवताकेबिभं
गावधिसोपूर्वजनमकास्मरणहै॥ सोसम्पत्ककोंकारणनही॥ जातीस्मरणकारण
क्योंकरहै॥ तिसकाउत्तरविचंगविधकेजोडेसोज्ञानहोहै॥ सोसबहीकैहै॥
यतिंसम्पत्ककोंकारणनही॥ जातीस्मरणसदजहै॥ होहै॥ यातेसमम्पत्ककोंक
रणहै॥ ॥२३॥ ॥ चरचाएकसोचारकी॥ प्रश्न॥ जोतिषीविमनोंकेजोजनन

स्पविष्मृतिं तं कुमारः परिपृष्टवान्। सोऽपि महारकं पृथ्वीवर्णयित्वा पुरुं परं। २५। पश्चा
 द्वावर्णयामास। प्राज्ञा हि क्रममेवेति नः। श्रुत्वा तन्न त्रिं जाता। स्तीर्थं कृत्वा मधुघ
 वान्। २६। अथ एवमुनर्मुक्तमापदि त्सु पयोगवान्। सात्त्विकं तनिजाती त सर्व
 प्रभवसंततिः। २७। विजृम्भितमस्मिन्नामादयोपनामैवेतवान्। लघुबोधिः पुन
 र्लोकांति कदेव प्रबोधितः। २८। ॥ अश्वरत्नी केते तीर्थं कस्मै न वस्मरणा सो विस्त
 क्ते नमहा। पुराणविषयं कदेहं। तथानरकं मे मी विनं गवधिदेहं। तद्वांती सरे नरक
 तोई जाती स्मरणा सो तया धर्मप्रवण सो वेद नानु न व सो सं उप जै देहं। २९। अग्नें चो
 पे सो सा त्रैवे नरक तोई जाती स्मरणा सो तया वेद नानु न व सो सं उप जै देहं। धर्म प्रव
 ण तद्वां न वं। देवतां न के मी अत्र वधिदेहं। तद्वां मी जाती स्मरणा धर्म प्रवण जिन
 म हि मां दर्शनं देव रिद्धि दर्शनं सह श्रारस्वर्ग तां ई ए सम्पत्क के कारणं। ३०। अ

वाहिरकोंनोंकीजानेनयद्वयोरगोममदसारकेज्ञानाधिकारमैदे॥१२३॥ ॥च
रचाएकसेतिवातरमो॥धृश्ना॥जातीस्मरणकाकास्वरूपेदात्रिरकोंमसेज्ञान
कतेतदेह॥समाधानाजैसंरात्रकेसुपनेकावितनेमेंस्मरणदोहोतैसेंअग्रगलेभव
कस्मरणवर्तमानभवमेंदेहा॥तिसैजानीस्मरणकद्वियेऔरभेदमति
है॥इहांकोईकहेहै॥हूमंतोअवधिज्ञानकभेदजानेंदेहामति
जातिदेह॥तिसकाउत्तरा॥श्रीपार्श्वनाथतीर्थकरतीनज्ञानविरजमानभवस्मर
णमेंलिखबोधजैजोजातीस्मरणअवधिविकजेदहोतातोपदलेंहीलखबोध
होता॥तउक्तंमहापुराणमभेपार्श्वनाथस्यैवरागप्रावमं॥साकेतनगराधिशो॥
जयसेनमम्हीपतिः॥भगलीदेवांसंजाताद्वयादिप्राप्ततान्वितो॥२०॥अनादासोनि
सृष्टार्थेप्राद्वणोत्पार्श्वसंनिधि॥गृहीत्योपायनंप्रजवित्वाहोतसमंमुदा॥२१॥साकेत

संवज्जरिषमनराचसंदमनक दियै॥ इहां कोई और पूछे॥ जो दाइ वज्जरमई हो
तो नारायण के चक्र सो षंड क्यों छवे॥ तिसका उत्तर॥ नारायण के चक्र सो षंड
नहीं छवे हृदय में दऊवे॥ २०॥ चक्राएक सो षंडोत्तरमी॥ प्रष्टु॥ मनः पर्यय झग
नवालो नुक्ति छुआ दाई दीपवत्ती नीव न के मन की जाने किं हिरकी जो जानो॥ स
माधान॥ मानुषोत्तरें वाहिर चारों को न विषे देवता तथा निर्धे चर दे दे नित के
भी मन की जानो॥ इहां कोई के हृदय में कांइ की भावावधनि को मेमनुष्य लो
क प्रमाण मनः पर्यय जानन का विषे कह्यो हो॥ सो क्यों कर तिसका उत्तर पितो
सलक्ष्यो जन प्रमाण मनुष्य लोको है॥ सोई पेंताली सलक्ष्यो जन प्रमाण मनः प
र्ये का विषय है विनाष इतमा इहां गोल की ओर चो दाई की अपेछा है॥ मनुष्य लो
क का इन्द्रगोल है॥ मनः पर्ये का विषय है चक्र चो कोर है॥ निसमें तें अठारई दोष के

मरंतिमुच्छंतिच्छवंते॥८५॥स्वगतिरिगंगाद्वेदो॥पुनर्विलादिद्विसंतित्रासम् ॥
लोतिदयारक्वरसुरामणुस्सजुगलादिवकुञ्जीवो॥८५॥ ॥८६॥ ॥चरचाएक
सोऽकोतरमी॥प्रश्ना॥वज्ररिषभनाराचसंहनकाब्धेदमेददोद्वेकिनदी॥समा
ना॥वज्ररिषभनाराचसंहननविनासात्तुर्वेनरकनजाद्रसवार्थसिद्धिभजाद्रा
क्षनजाय॥तद्वांनारायणकचक्रसोपहलेप्रतिनाराद्राकडवातुकमालस्वा
प्तालनीकेउपद्रवसोसर्वार्थसिद्धगयो॥गुरुदत्तपांडवादिउपसर्गदीप्तोऽंनस्तद्व
त्केवलीहोयमुक्तडब्बो॥इत्यादिअनेकप्रसंगविषेवज्ररिषभनाराचसंहननका
ब्धेदमेदद्रुवाप्रसिद्धे॥इत्यांकोईपृष्ठेवज्ररिषभनाराचसंहननका
पदे॥तिसकाउत्तर॥रिषभनोववेचनकोद्दे॥नाराचनोवकीलकोद्दे॥संहनननो
वभारीरकेहाडकोद्दे॥जद्वांएतीनोवज्रसंहोयमांसादिअपनेस्वस्फुटोद्देति

ज्येष्ठयद्वसंभ्रमत्रायुकीसमाप्तिविना विषयस्त्रादिकेयोगसौन्दरीरणामरणकैरे
 गा॥ इहसंज्ञांतिज्ञानमेप्रतिज्ञासिद्धिः॥ सिद्धिद्वेयत्रन्यथानदी॥ ९७॥ चरन्वासौ
 मी॥ प्रश्ना॥ छेवकीलकेत्रं तप्रलय विषेवं वदत्तरजुगलकौ विद्याधरलेजां हिं
 सोयद्वत्वातक्यां करदो॥ समाधान॥ नेमचंप्राचार्यकृतत्रिलोकसारमेतौ वद
 त्तरकानियमकीनामदी॥ छेवकालकेत्रवसानसमयसंवर्तकनामप्रलयप
 वनचलेगी॥ पर्वततटस्थीवृत्तादिसर्ववर्णदोजां हिं गेसवदिज्ञानकेत्रं ततां ईन्त्र
 मत्तजीवमंगे मूर्त्ति तदो गे॥ विजयार्घ्यपर्वतकेतया गंगे सिंधुमदीकीनेदी छुद
 विलादिविषेनिकटवत्तीजीवप्रवसकरंगे॥ ज्येष्ठयसनुष्णादिव ऊतजीवनकेजुग
 लविद्याधरतथादिवत्तादयाकरिलेजादिगे॥ रसभांति कथनेदो॥ तथादि॥ ग
 था॥ संवत्सयणामणिलो गिरितरुमृपुडुदिबुसगां करिया॥ भममदिदिसंतीजीव

ओकसमाक्रान्तोषोवेदयद्विदंशचः॥१४॥देवदेवेधराचक्रंरक्षतिक्षेममन्त्रनः॥किंत्वं
 तत्केनमस्तुत्रोद्धार्योराजीवतावेधेन॥१५॥प्रियान्ममैषएवासौनायुषास्तेनजीवितः॥
 नानीतश्रेत्वयासोद्यतेनमामपिपन्नपन्नः॥१६॥तवविघ्नशतोनीतंकिंकुर्वन्तिनगर्वि
 ताः॥आलाटुभक्षरोगोलोलःकिंपुष्कंतत्पजेद्विति॥१७॥सदाकर्णसदृद्राजाद्विजाकिं
 वीत्सिनांतकः॥सिद्धैरेवसवार्येन्मिर्नसगिप्रालविश्रुतं॥१८॥अप्रववस्योद्युषःकेचिद्ध
 द्वायुजीविनःपेरा॥मान्सर्वात्संदरसेवयमोमृत्योरगोचरः॥१९॥तस्मिन्बहसिचैद्धरं
 जीर्णोमाचूर्येदेवृषा॥सोददीक्षांप्रहाणाशुभ्रोर्कंहित्वद्युवाचतं॥२०॥इत्थादिनु
 दीरणाभरणैकैश्चैकनुदाहरणैर्है॥इत्हांएकओरसंदेहरह्य॥जिसजीवकीआयु
 सौंवरसकीज्ञानमेंप्रतिमासीहै॥साघटतीकोंकरिदोय॥तिसकाउत्तर॥यहम
 नुष्यसौवरसकीआयुकाबंधकरिआयोहै॥सोअपनीआयुसमाप्तिकरिमेरेगा॥

मंजारी के जोग से ती बालक की मृत्यु होनी है। यह बालक नगर के राजा ने सुनी वाराह
 मिहिर सों कह्य वाराह मिहिर बोलत। महाराज भद्रवाङ्मय दोष आ वसों कह्य है। मिहिर
 ज्ञान अथवा नही। राजा बोलत। जानिये गी। यह बालक तो अग्रपे में द्वाय की विलस्ति मध
 है। तिसके अनंतर साधु वैदि महधपी बने बालक पे मंजारी के पाव सो आ गल पड़ी
 बालक की मृत्यु हुई। इस प्रकार अग्र युद्धों ते उत्तर निमित्त सों मृत्यु हो है। उदीरण
 मरण तथा अकाल मृत्यु का और एक कल्पित दृष्टांत है। कि नही पुरुष ने अश्वधि
 ज्ञानी साधु सों तर्क की नी मेरे द्वाय में चिडी है। सोय द्वाय की बुद्धि कि अस्मा बुद्धि सा
 धु बोलत। इसकी अप्राप्त तेरे द्वाय है। और एक प्रसंग महापुराण विषे जहां सगर चक्र
 के सम जा वने को मणि के पुना मे देव मृतक पुत्र को वि क्रिया करि लाया है। चक्र
 वत्ति सों कह्य है। यह प्रसक्त है। तथा हि। तदा प्रसक्त मणि के चक्रः समेत्य ततो महा

रायः॥ अथ युर्येसपि देवदेः परिज्ञाते हि ज्ञातके॥ तस्यापि क्षीयत्तसद्यो नि
 न्नरयो गतः॥ १॥ इमं दोषं श्लोकं विवेकं दत्तात्पद्येदं॥ जिसमनुष्यकी आशु जो तिगी
 पंडितों ने लयादिके विचारों से दीर्घ जानी है। सो श्री घट्टो निमित्तोंतर से
 है॥ इस अर्थ का अनुदाहरण लिखिये है॥ प्रतिष्ठा न नाम नगर विवेक दोषों का स्थापन है
 एक कानामगराह मिदय हजका नाम नद्ववा ऊ दो नूं नार्इ दिक्षाले नंगयो अचार्य

धवानेदं विचार पमापद भद्रवा ऊत्को दीना॥ वाराह मिहरे नं आ पको वडा जा
 निदोष मानां॥ भगरमें ब्राह्मण कर्म भय पलटि के वाराही संहिताना मज्जो निषणं
 थकरि जीवका करण लगा॥ एक पुत्र कुस्वा लग्ना दि केवल से कही मेरे वाल कडवा
 सो आना बुद्धे॥ सो वर सजी वेगा॥ नद्ववा ऊत्ते सुनि के कही॥ जो तिके कवल से कहे
 नां ही॥ नालक की आशु सो वरष की है॥ परं दुसा छुबें दिन मि

होहा इमदीकानोवकदलीधातमरणवै॥ कोइकैहुरुधिरकेनाज्ञातंमरसाबोकोकर
 होहै॥ तिसकामुत्तर॥ श्लोकः॥ विक्रिस्माज्ञास्त्रमैउक्तं॥ जोबोवसतिसर्वत्रत्रिभुस्यने
 होहै॥ विप्रोषतः॥ त्रिभिः क्षयेक्षयंयातिभुक्केस्केतथाभले॥ तथाचहृदयद्रुणसंसार
 स्पेवचिन्मवर्णनावसेरकथितं॥ श्लोकः॥ विप्रपतेद्रव्यनिर्मुक्तः॥ ग्रियंतेवालताशु
 चष्वर्षोपायुविक्षोणेदुनुनाचोपसंदत्ते॥ इ०॥ अर्थ॥ अस्मिन्विप्रपतेचोहिता
 कारेमानवसहेकोवित्द्रव्यनिर्मुक्तः॥ किंपते॥ चचितुनःवालताशुवाल्मा
 वस्त्रासुन्त्रियेतो॥ कथंपक्षोपात्तायुविक्षोणोहर्वमर्जितंयदायुः॥ तस्यक्षयेसति
 कथंपक्ष॥ इत्सप्येक्षायांदिनुनाउपसंदत्तेकारणांनरेणकृतोपसंहारेसंके
 चक्षरेत्सपर्थः॥ सारसमुच्चयेकुलनंद्रेणायुक्तंमनुष्यायुषः॥ अनित्यत्वनिरूपणं
 ॥ अलायुषानरेणहृदधर्मकर्मविजामता॥ नशायतेकदाशुः॥ अविष्यतिनमं

मुन्ममामत्रायुकीहोयाऽहंकोईफेरकहैहै॥विषयशस्त्रादिकेयोगसोंआयु-
कीस्थितिकाछेदहोययहवातहमारेबिषयविषेक्योहीप्रवेसमहीकरेहै॥ति-
सकानुत्तर॥श्रीकंदकुंडाचर्यनेनावयाड्डमैंकह्याहिसोअनु॥गाथा॥वि-
रत्नरक्तयन्मयसच्छगाहणंकलेसेहिं॥आहारुस्मासाणंणिरोटहणासिऊकयेआ-
नु॥२५॥औरगोस्मदुसारेविषेनेमचंडुजीनेनीयिहीकहोहै॥गाथा॥विसवेयएर-
नरक्तयन्मयसच्छगाहणंसंकलेसेहिं॥आहारुस्मासाणंणिरोटहो-
नु॥२६॥उल्लया॥विषयवेदनारक्तचयन्मयशस्त्रघातसंलेकणे॥

निराधुःखिद्वयेतसःकदलीघातः॥अर्थ॥विषयनदहण॥शेगकीवे-
नारुधिरकानात्राभयसेंफिफकनाषडगादिकेघातकसंलेकणउत्वास-
॥अमवरोधअन्नजलका निरोधइत्यादिकारणसोंआयुकीस्थितिकाछेद-

मर्मका आवाधकाल आवाधोमात्रेह॥ आवाधो॥ अवतां ईवं मर्म उदेउदीरण रूप
 होय नपरिणचो॥ जो का तपोरह्य॥ तितेने कालको आवाधकाल कहियो॥ सो उदे प्रति
 आयु विना सात कर्म संबंधी को डाको॥ डि सागर की॥ स्थितिका सो बर्य का आवाधा
 काले हो॥ इ स लेखें सत्तर को डाको॥ डि की॥ स्थिति तां ई जॉने लेनां॥ अोर आयु कर्म का
 आवाधकाल अनुसमान अयु बिषे पृथ्वी तत्रि नागो से बहे॥ यद आवाधकाल
 उदे प्रति कल्या॥ उदीरण अति सात कर्म का आवाधकाल आवाली मात्रेह
 ॥ अर अवायुषः॥ उदीरण नियते ननास्ति॥ परभव संबंधी अयु की उदीरण सवेष
 नहोय॥ आवाधो॥ निकाचित विना आवाधकाल वीति उदयागत कर्म की॥
 उदीरण होति॥ तिसे तेन ब्रह्ममान अयु का आवाधकाल अनुसमान आयु का
 त्रि नागो खेव हेति॥ त्रोते परभव संबंधी आयु की उदीरण कै से होय॥ एतावता

स्थितिकाच्छेदनिमित्तांतरसोद्दोषजाया। यातेपूर्वोक्तदेवतादिकेउदेमर्णजान
ना। नाकीरक्षेतिनकेउदेउदीरणामरणदोनोंजानने॥ तदुक्तं। गाथा॥ छच्छिदसु
दमाजीवा। भोगभुवाचरमेदहणिरयंगा। उदयेपाणविणासा। सेसाएउदीर
नणिया। छ॥ एकत्रैरभीद्वेतिविचारणा। उदीरणामरणजगत्तमेंनदोया। तोद
याधर्मोपदेशाविकिन्सात्राएसबहीव्यर्थकुवे। इहांकोईपुछेआमुकीउदी
णाकौनभोगास्त्रमेंकहीहो। उत्राज्ञाहंवंधसदिदशाकरणकदेहो। तदंआ
मुबिधेंसंक्रमणविमानवर्करणाकदेहो। तिनमेंउदीरणानीकहीहो। आसो
मत्सारकेउत्रार्थविधेंनीकहीहो। तथाहि। अर्चवलियंआवादाउदिरणमा
सिजसत्तकम्भाणं। पर। नैवियआउगस्सउदीरण। एच्छिणियेमेनादी। उदीर्णोआ
अस्ससप्तकर्मणं। आवाधावलिसात्री। स्यात्त। उदीरणप्रतिआसुविनासातक

तीर्थं कर॥ असंख्येयवर्षाद्युषः॥ कहियो॥ भोगच्छमिकेतथाकुभोगच्छमिके॥
 जीवभावाधी॥ चरमोत्तमदेहनालेतीर्थं करयातेकत्वे॥ चरमदेहनालेगुरुर
 तपांडवादिउपसर्गकरिमुक्तहुवो॥ उत्तमदेहनालेसुभौमचक्रीतथात्रह्मदत्त
 कीअकालमृत्युद्रोहरसुभारकेवाणसुहृत्सुकीअपमृत्युनशो॥ इत्यादिसक
 लचक्रीअर्द्धचक्रीनैकेभीअनपवर्त्त्यायुकोनयमनही॥ यदकप्रमन्यायकु
 मुदचंद्रोदयनामनास्त्रदेहतथागजवार्तिकालंकारनास्त्रदेहतदांकीयाहो॥ मा
 तेचरमोत्तमदेहतीर्थं करदोहो॥ इससस्त्रविषेयहसिद्धांतहुवा॥ दिवनारकीती
 र्थं करभोगच्छमिकेजीवइतनैकेविषयास्त्रादिकेयोगसोआमफलकेपाकव
 तआयुकीउद्धारएनिहोया॥ इमविनाकर्मच्छमिकेतिर्थेचमनुष्यनैकेहोय
 नेसंप्रदीपतेलसोअराहोयपवनकेयोगसोकुमिजाइतेसंसंपूर्णआयुकी

कालके अंत कुलकर्णों की आयु संख्या तब वर्षों का रहे है ॥ तिस से ते भोग भूमि के समनुष्मति
र्थ च समयाधिक कोटि पूर्व वाले भोग भूमि में जानें ना कोटि पूर्व वाले कर्म भूमि में जाना
में ॥ यद्दं कथन गणमत्स्यार के लेख पाधिकार में है ॥ इहां कोटि यों कहें ॥ आयु की घट
ती वटती का कथन झली झोंति हमारे समुमें अभाव नानदी ॥ तिस का उत्तर ॥ इस कथ
न के निरै किं दशाध्यायी सत्र की फा की का अर्थ विचारणा ॥ तथा हि ॥ अथादिक च
र मोक्ष मे देहा संख्ये वर्षा युबान पवर्त्तो युषः ॥ अर्थ ॥ एते अत्रनुपवर्त्तो युषः नैति ॥ इ
तं अत्र न पवर्त्तो युवा तै देहा भावार्थ ॥ जिन की आयु का अत्र पवर्त्तन कहिये फेर फा
या समय सम भ करि क्रम से पूर्ण होय विषना स्त्रा दि के योग करि उपक्र
म से पूर्ण होय ॥ अत्र न पवर्त्तो युवा तै जानें ॥ ते को न ॥ अत्र अथादिक चर मोक्ष मे दे
हा अत्र संख्ये यव बी युवं ॥ आयु पादिक कहिये देव नार की चर मोक्ष मे देहा कहिये

गीहो जायति सै सो पञ्चम स्तराग क हिये ॥ सदां प्रथम निरुपक्रम आधुवा ने हसरानां
 वञ्चन पवत्सु बालो देवतानाग की तया नो गच्छ मि के तिर्ये च मनुष्य अ संस्था त
 अथ वा संस्था त वर्ष की आधु बालि और चर मोत्तम देह बालि इ न के आधु की स्थिति
 का स्तराग क्रम सो दौ हो ॥ इ जे सो पञ्चम आधु बालि हसरानां च क दली घात आधु
 बालि ॥ कर्म भूमि के मनुष्य तथा तिर्ये च दौ ॥ इ न के आधु की स्थिति का स्तराग क्रम
 सो तथा विषय आदि के योग करि नुपक्रम सो नी एक ही वार क दली कां ड की
 नो ई हो हो ॥ य द सो पञ्चम आधु की स्थिति पूर्वोक्त आठ अ पुरुष म सो बंधे हो ॥ ५
 हां सर्व त्र जीव के परिणामों का ही हेतु जानना ॥ ५ हां एक और संदेह उपजा ॥ ऊ
 पर जो म भूमि के मनुष्य तिर्ये च अ संस्था त तथा संस्था त वर्ष बालि के दो त दो अ सं
 स्था त वर्ष बालि तो हो ॥ संस्था त वर्ष बालि के जो क दो ॥ उ जे ॥ अ र से और अब त में तो सर

धकरतें जीवों के परिणाम का निमित्त पाइबघ्यमान आधुकी स्थिति घटती हो
 या निसको अल्पवर्त्तन घात संज्ञा दे ॥ भुज्यमान आधुकी स्थिति घट जाइ ॥ ति
 कदली घात संज्ञा हो ॥ प्रश्न ॥ आवकर्म विषे आधुकर्म की स्थिति का चरण
 कर्म कैतै दे कि जे प्रकार दे ॥ समाधान ॥ आधुकर्म की स्थिति का चरण सात क
 मी स्थिति के चरण सों जे प्रारंभ प्रकार दे ॥ सात कर्म की स्थिति विप्रशुद्ध परिणाम के
 बल सों अंतर्मुहूर्त्त विषे कै ई कोडा को डिसा गे की घटै जे सें आधुकर्म की
 स्थिति घटै नही ॥ आधुकी नब स्थिति समय समय ही करि पूरी होय ॥ एक समय वि
 ही समे की घटै ॥ जे सें आधुकर्म का चरण दे ॥ निस के जे दश एक क्रम ॥ इ

सा जो आधुकी स्थिति समय समय करि क्रम सों पूरी होय ॥ तिसें उपक्र
 नों निरुपक्रम चरण कहिये ॥ प्रारंभ जो क्रम विना उपक्रम सों एक ही बार प्र

मामतीनव्यवस्थाहोहैतेकोदिसोहोहो॥ यद्वकहेहो॥ गाय॥ इगवारं वज्रिना॥ वहीदाण
 अनविदं होदि॥ उत्तहगाघादोपुणपरिणामवसेणजीचाण॥ ए०॥ अर्थ॥ अप्रकर्ष
 पुमधेप्रथमवारं वर्जित्वा॥ पूर्वोक्तआचो॥ अपकर्षेनविषेयहलीवारं छेडिके॥ वधिह
 निः अवस्थितिर्वर्जवति॥ परभवसंबंधीआयुकीहृदिदानितथाअवस्थितिहो
 हो॥ आचार्य॥ प्रथमअपकर्षकीवारं जोकुच आयुकीस्थितिवंधीहोआतिसवि
 नाक्षितीयादिवारविषेयव्यमानआयुकीस्थितिवैद्यतथाघटेअथवाजोकीसो
 जीरहे॥ तहांजोवैद्यहोसोप्रथमवारकीबंधीस्थितिकेलेखेंवैद्य॥ आरघटेसोसोइ
 सहीलेखेंघटे॥ पुनः जीवानांपरिणामवशेनअपवर्त्तनंअपिभवति॥ वक्ररिजी
 बोंकेपरिणामसेवैकरिवद्यमानआयुकाकृस्वीभावस्त्वअपवर्त्तनभीहोहो॥
 ॥ तदेवघातइत्युच्यते॥ तिसहीअपवर्त्तननामघातकहिये॥ आचार्य॥ आयुव

युवंधन होय तो ॥ नुअमान न आयु के अंत की आबली का असे ख्यानुवां जागना की
रहे ॥ तहां पर नवकी आयु का बंध अक्षय न हो ॥ इस का विशेष व्याख्यान गोममट
सार के उतरार्ध विषे है ॥ तथा हि ॥ गाथा ॥ एकै चक्रं अक्षयं नवंध्रमेदिना गपदे ॥
अडवारं वात तत्त्व ॥ वित्ति नागो मे सै च सच्च ॥ १८ ॥ अर्थ ॥ एक जीव एक ही नवंध्र मेदिना गपदे ॥
क सै च सै ॥ गपको ले अष्टवारं वदनाति ॥ एक जीव विषे एक ही आयु एक ही नवंध्र मेदिना
काल न विषे आठवारं वंदे ॥ त न सर्वत्र अयि त्रि नागो अष्टय ॥ तहां सवही जागो ॥
त्रि नागो अष्टय ॥ नावार्थ ॥ एक जीव एक नवकी नुअमान आनु मे एक पर नव
धी आयु को आठवार अष्टय वर्षे एक रिवां धे ॥ तिन आठो अष्टय वर्षे विषे त्रि ना
गो अष्टय सर्वत्र है ॥ नुअमान आयु के नागो उसार पर नवकी आठु वंधे है ॥ या ते ड
न की अष्टय वर्षे संज्ञा जाननी ॥ अगो ॥ आठ अष्टय वर्षे विषे नवमान आठु की बह

सों लेय छुट्ट जुगल पर्यंत अध्याधसागर आयुर्वेद उभरवों नवै ॥ उभर ॥ ऊ
 परघातायुबाले की उत्पत्ति नही ॥ ९७ ॥ चरवा अचाणमी ॥ प्रश्न ॥ मुजमान आबु
 के त्रिभाग त्राष विषे परस्त्रवकी आयुर्वेद ॥ सो कों करि वं धे ॥ नावार्थी कर्म
 भूमिके मनुष्य निर्देचन की मुजमान अयुर्विषे आतत्रप कर्षण ॥ ते पर भ
 वकी आयुर्वेद कों योग पदे ॥ तिसका विचरण ॥ मुजमान आयुर्वेद अंस ५६
 इतने में दोय भाग वीति तीसरा भाग नाकी तिसके अंस २१ ॥ तिसका प्रथम
 अंतर्मुहूर्त परस्त्रव आयुर्वेद कों योग पदे तहां नवै ॥ तिसका तीसरा भाग
 की तिसका अंस २४ ॥ तिस भाग का प्रथम अंतर्मुहूर्त वं धयोग पदे ॥ ते से ही
 इवचासी ७ ॥ सत्ताईस २१ नवै ॥ तीसरा एक अंश तां ईजान न ॥ ए अंश अ
 प कर्ष कुवो ॥ इतने में भी वं धका नियम नही ॥ वं ध कों योग पदे ॥ जो इन विषे अत्रा

धिककहीहै॥ तथादि॥ सौधर्मज्ञानयोः सागरोघमेन्द्रधिके। सौधर्मईसानकेजुगलविभेज
त्किष्टर्च्युदोयसागरसौंक्छुअधिकैह्य॥ इसससत्रके आगेतीसरेसूत्रकेननुत्राष्टके
ग्रहणेतेंयहअधिकत्राष्टसह आरस्वर्गपर्यंतअधिकारवानजानना॥ इसमना
पूर्वैक्तिस्वर्गलोककीउत्किष्टअत्रायुकेकथनविभेजफेरहुवांसो। किसअपेछासोहै॥ सु
धान॥ सत्रविभेसहस्रारस्वर्गपर्यंतउत्किष्टआफउक्तप्रमाणसोंअधिककह
सोधातायुकीअपेछासोकथनहै। जोवद्यमानअत्राबुहद्विरूपदोयघटेतिसेधाता
॥ तिसधातायुवालाजीबस्वर्गलोकविभेससत्ककोंप्राप्तहोइतौतिसदे
कीअप्रपतेकसकीउत्किष्टआयुसोंआधसागरआयुबढे॥ तहुक्त॥ त्रिलो
कसारमध्येभागाया॥ समेघादेअणसायरदलमदियमासहत्सारंज्जलहिद
अपउलंपडिजाण॥ हाणिचयं॥ इहांकोईपूछे॥ सौधर्मईसानकेजुगल

इतनी स्थिति का छेद और होता तो गति का छेद होता। सो नदी हो दे। त डुक्तों स्वाभिक
 त्रिकेयटी कायां श्लोकः॥ दुर्गति वायुषो वंधे सम्यक् यस्मात्तायेते गतिं छेदो न तस्या
 स्ति तथाप्यन्यतर स्थितिः॥१६॥ चरन्नात्ता एमी प्रश्न निमर्चं प्रकृत त्रिलोक सा
 विषे स्वर्गा की आयु का वर्णन प्रसन्नोति है। सो धर्म प्रसन्न विषे जघन्य आयु एक प्रस
 कीर्त्यो न त्विष्ट सागर यन्मनुकुमार मादिष्ट विषे सागर यन्ब्रह्म ब्रह्मोत्तर मे सागर
 लां तव का पिष्ट मे। एषु क्रम दा शुक्र मे र्ध। स तार सदस्वार मे र्ध। आनत प्राण त
 मे। एव आरा अच्युत मे। प्रभायो ते अक एव सागर वदती न वगे वेक अनुतर
 सर्वा ये सिद्धि पर्यंत गण रद स्थान विषे ते तीव्रा सागर जाननी। त डुक्तों। गाथा॥ सो ह म
 वरं यत्नं वर मुवदि विसत्त द समय चोद संवावी सो ति ड वदी॥ एकै कें जा व ते तीसां। छ
 और दशा ध्याये स्त्रि विषे स्वर्ग की पूर्वीं कृत्ति छ आयु ते वार हं स्वर्ग तां ड कुठ अ

काउदादराजानना॥औरराजाअणिकेनेमुनीश्वरकेकंगबिबेमुतकसर्पडासि॥ति
सकालसाउबेनरककीतेतीससागरप्रमाणआयुबंधीफेरश्रीवीरनाथकेसमबसर
एविबेच्छायिकसम्पत्ककेवलप्रथमनरकसंबंधचौरासीहजारवर्षकीस्थितिरही
इहप्रसंगबडेहरिवंशमेंहै॥तथादि॥अणिकेननुयत्पूर्ववफारंनपरिगृह्णातापरस्मिन्
कमारक्षंनारकायुस्तमस्त्वमे॥३॥तनुद्वायिकसम्पत्कात्स्वस्थितिंप्रथमपरास्थितिः॥
वर्षसहस्राणामग्नीतिंचतुरस्रतरां॥३॥अथयस्त्रिंशत्समुद्राशुःक्षययमपरास्थितिः॥
अहोदायिकसम्पत्प्रप्तावोयमनुत्तरा॥३॥अथदश्रायुकेअपकर्षणकाउदाहर
णजानना॥इहांकोईतर्कणाकर्षे॥अणिकराजानेनरकायुकीउत्किष्णस्थितिछेदके
दायिकसम्पत्ककेवलसौचौरासीहजारवर्षकीस्थितिराषीउत्किष्णस्थितिकीअ
पेच्छोतोयहस्थितिवहुतहीअल्परही॥इतनीकाछेदकोजनीया॥तिसकाउत्तरांजे

जायतौ उमति स का उपाय करे ॥ थव सु निषदि सार बोला ॥ हरे रात्रां ए स मां न वं धु दे ॥ तु
 के अथ वचन कहे नें योग पदे ॥ असे नरक कारण अहित वचन कौ कहै दो ॥ मुफें मरण इ
 छे दो ॥ अति ज्ञा अंग इष्ट न हे ॥ इस सत्रां तिष रि र सौ का निश्चय देषिय ही का हतांत क ह्य
 तिन सु नि कै स मस्त हिं सा के त्याग रूप प्राचक के व्रत लीयो दिह त्याग करि सो धर्म कल्प
 विषं देवता कुरवा ॥ स्खीर तिस की अवसान क्रिया करि अत्र पनें नगर कों चला ॥ भार्ग
 में वदय दूणी पूर्वी मेरु मै धुन ननु म्हरा पति कुवा ॥ यदिणी बोली संपूर्ण व्रत के स्वी
 कार सें वं तर गति सों परा न्मुख सों धर्म कल्प के भोग का अत्र नु न व करै दो ॥ मिरा पति क
 हां सों होय ॥ अत कामा ह्य तप ज्ञा नि स्खीर समाधि गुप्ति के समीप प्रावक कुरवा ॥ य
 ह कथा चा मुंड गय हत चारित्र सार मै है ॥ इस प्रकरण दिर सार मिलि पति नें वं तर की तु
 छे अत्रु वां धी थी ॥ फिर सौ धर्म स्वर्ग मिं दाय सागर की आनु भोग वी ॥ यद अत्रा धु के न त्कर्षे ए

र्धणअथकर्षणकास्वस्त्वपेहो॥इहाकोईकहेहमयोसुनाहे॥आयुकेबंधकालही
 बंधुत्कर्षणअप्रकर्षणहोहे॥पीछेनही॥तिसकाउत्तरापीछेनीहोहे॥तिसका
 हंरण॥एकषट्दिसारनामभीलपतिथा॥तिनसमाधिगुप्तिसाधकेउपदे
 मांसकात्यागकीया॥कालांतररोगऊर्वेवैद्यनेकाकमांसवताया॥षट्दिसारने
 कहीसत्पुण्यहोयछेडीवलुयांऊनही॥यहसुनिसेरपुनरकाराज्ञासूखीरबदि
 रसारकाघदनेऊतिसैमांसषवावेनेचला॥मार्गमिंभट्टहृदभनविंएकयक्षीर
 नकरतीदेयी॥सूखीरनेपूखीरकोनदेव्योरोंवेहे॥बदवालीमेंयक्षणी
 लकणोगपीडतहे॥काकमांसकेनियमसोंभेरापतिहोनहारहे॥भ्रमांससोजन
 सौनरककापात्रकरनेचलाहो॥तिसतेरुदनकरोंहो॥यहसुनिसूखीर
 मांसभक्षनकरांऊगा॥तवअपनेंमालककोंदेधिकही॥जौकाकमांससोंरोग

९७॥ चरचा पञ्चाणवमी॥ अथ॥ मूत्सवा दारनिगोदजीवनकी आयुप्रमाण क्या है॥
समाधान॥ नित्य निगोद इतर निगोद मूत्सवा दार सबकी॥ आयु अंश मर्म मूर्त्त मात्र है॥
और एही काय जल काय तेज काय वायु काय के जीवों की नी आयु अंश तम मुक्त मा
त्र है॥ अतो मुक्त माता साहारण सब मुक्त माण इत्युक्त तत्त्व॥ ७॥ ए॥ चरचा मूत्सवा एवी
प्रश्न॥ आयु के स्थिति वंध विषे उल्कर्षण अर्प कर्षण कहा है॥ सो किस प्रकार है॥
समाधान॥ जहां बंधकी स्थिति वैदिते ते उल्कर्षण कहिये॥ जहां बंधकी स्थिति घेटति
सको अर्प कर्षण कहिये॥ किन ही जीवने अर्पने तीव्र मंद मध्य जावों के अनुसार उ
त्किष्ट जघन मध्य चूर्गति संबंधी आयु की स्थिति मुज्जमान आयु के त्रिनाग विषे व
धी होय॥ बहु रिघही जीवति मही काल तथा कालोत्तर विषे जाचों तर सो स्थिति व
दती करे निते से उल्कर्षण कहिये॥ स्थिति घटो वैदिते से अर्प कर्षण कहिये॥ यद्वनक

साकाशरीण॥ नारकीकाशरीरण॥ एवादर्निमोदरहितआत्मोअप्रतिष्ठितप्र
त्येकजाने॥ इनेतेंवाकीवनसप्तिकायेवंप्रीतेंप्रीचोइंद्रपंचेंप्रीतिर्येचनकेसरी
रअवशेषमनुष्यनकेशरीरवादर्निगोदसहितप्रतिष्ठितप्रत्येकजाने॥ इहां
कोईकहे॥ प्रतिष्ठितप्रत्येकवादर्निगोदसोअश्रितकह्यासोंव्हे॥ अशरापूर्वो
क्तसहस्रमत्तो॥ निराधारहे॥ यातेंवादर्निगोदकाश्रयप्रतिष्ठितप्रत्येककह्या॥
इसकीवादर्निगोदशरीरकेष्वेक्तसंभ्रादिपंचनेदेहे॥ इन्होकेअश्रयप्रतिष्ठ
तप्रत्येकहे॥ सोपूर्वोक्तआवस्यामविनासर्वत्रहे॥ सातनरककेहे॥ ठक्कोकरसंन
वो॥ इहांकोइसंदेहकरे॥ वनसपतिनामथाववरकर्मकेउदयवनसपतिकायमेंयाव
रजीवनपजैहे॥ मनुष्यतिर्येचकीदेहविवेचनिगोदकह्यायदकोनसेथावरजीव
कोभिदहे॥ तिसकाउत्तर॥ इनेकेंजीवनसपतिनामथावरकर्मकाउदयजानना

क्क्षीकासरीराचारेणरीरहेते॥निगोदद्वारीरैः॥अप्रतिष्ठताः॥॥वाटरनिगोदजी
 वनकेनारीरकरिन्ननाश्रितद्वे॥क्षेष्वातिअप्रतिष्ठितनारीराणिभवंति॥॥इम
 आवौतेवाकीरहेजवनमस्पतिकायादिकेशरीरतेवाटरनिगोदजीवनकेन
 रीरकरिन्नाश्रितद्वे॥आवार्थेवनमस्पतिनामयावरकर्मकेउदयजीववनमस्प
 तिकायमेनुपैजेद्वे॥निसर्केभेददोयएकप्रत्येकशरीरद्वे॥इजसाधारणशरीर
 द्वे॥एकजीवकाएकशरीरसोप्रत्येक॥अत्रमेवजीवनकाएकनारीरसोसाधारण
 बद्धरिप्रत्येककेदोयभेदद्वे॥एकप्रतिष्ठितप्रत्येकइमात्रप्रतिष्ठितप्रत्येक
 वाटरनिगोदकरिन्नाश्रितद्वे॥यतिसेंप्रतिष्ठितप्रत्येककोद्वे॥वाटरनिगोद
 करिन्नाश्रितनद्वे॥यतिसेंप्रतिष्ठितप्रत्येककोद्वे॥सद्वे॥सद्वे॥कायथजल
 कायथतेजकाय३॥वायुकाय४॥केवलीकनारीर५॥आहारकनारीर६॥देव

चगोलकबंधर ॥ अंशुरभ ॥ आवास ॥ अलवि ॥ अस्त्रवि ॥ आतनरकै ॥ देवमुने
द्वेति ॥ कौंकरै ॥ देवका ॥ स्वतृपदे ॥ समाधान ॥ एनिगो ॥ देवै ॥ पांचगोलक ॥ देते ॥ वादरनि
गोद ॥ संबंधी ॥ नारीर ॥ केने ॥ देहो ॥ इनके ॥ आश्रय ॥ वादर ॥ निगो ॥ दर ॥ देहो ॥ सस्त्र ॥ निगो ॥ दा
निराधार ॥ देहो ॥ सो ॥ सर्वत्र ॥ जानमा ॥ अस्त्र ॥ सलो ॥ कक ॥ प्रदे ॥ अ ॥ कै ॥ ष ॥ न ॥ क्षी ॥ म
निगो ॥ दन ॥ पा ॥ ड्यो ॥ सब ॥ बणि ॥ रं ॥ तरा ॥ मु ॥ कु ॥ स ॥ ष ॥ ति ॥ व ॥ च ॥ ना ॥ त ॥ ॥
न ॥ मु ॥ दे ॥ वा ॥ द ॥ र ॥ नि ॥ गो ॥ द ॥ सो ॥ अ ॥ त ॥ न ॥ गो ॥ न ॥ ही ॥ अ ॥ र ॥ स ॥ र्व ॥ त्र ॥ दे ॥ त ॥ उ ॥ क्त ॥ गो ॥ म ॥ द ॥ सो ॥ रा ॥
पु ॥ द ॥ वी ॥ अ ॥ दि ॥ न ॥ उ ॥ ए ॥ ह ॥ कि ॥ व ॥ ल ॥ आ ॥ द ॥ र ॥ दे ॥ व ॥ णि ॥ र ॥ यं ॥ गा ॥ अ ॥ त्र ॥ प ॥ दि ॥ वि ॥ दा ॥ णि ॥ गो ॥ य ॥ दि ॥
प ॥ दि ॥ मि ॥ दं ॥ गा ॥ व ॥ वे ॥ से ॥ सा ॥ त्वा ॥ अ ॥ र्थ ॥ प्र ॥ थि ॥ मा ॥ धि ॥ च ॥ तु ॥ वि ॥ ध ॥ जी ॥ वां ॥ गा ॥ नि ॥ ॥ ॥ ष ॥ ष्ठी ॥ का ॥ य ॥ अ ॥
ष ॥ का ॥ य ॥ वा ॥ त ॥ का ॥ य ॥ इ ॥ न ॥ न ॥ र ॥ र ॥ प्र ॥ क ॥ र ॥ के ॥ जी ॥ व ॥ न ॥ न ॥ की ॥ दि ॥ ह ॥ दे ॥ ते ॥ भ ॥ घ ॥ के ॥ व ॥ त्पा ॥ दा ॥ र ॥ दे ॥ व
ना ॥ र ॥ कां ॥ गा ॥ नि ॥ ॥ व ॥ क ॥ रि ॥ के ॥ व ॥ ली ॥ का ॥ त्प ॥ री ॥ र ॥ अ ॥ द ॥ र ॥ क ॥ त्प ॥ री ॥ र ॥ दे ॥ व ॥ का ॥ त्प ॥ री ॥ र

डीकहिगो। उमके घात सो पंचे डीकी दिंसा होइ। त्रिसे अर्थो सकाल विषे सवके स
 न प्राण संबंधी कर्म काउद पाइये॥ इस अर्थे च्छामा त प्राण के हो। फिर पुछी। ज्ञाति की
 अपेछा सो अलक्ष के सात प्राण के दो जाति मै तो अलक्ष मनुष्य सम हो। मनु
 ष्य जाति अर्थे नीहाय मदी। तिस के मन प्राण का निषेध का द को कीया॥ तिस
 का उत्तर। ऊपर कह्या। प्रपय्या सकाल मे सात हो प्राण काउद हो। मीन का न हो
 र्द हो तै जानना॥ छ। ८२॥ चरवा तिराण वमी प्रश्न॥ अलक्ष पया से मनुष्य क हां क
 हां उपजे हो। समाधाना। चक्रवर्त्तिकी पहराणी विना कर्म अ मिकी स्त्री न के यो
 निकाय स्तन मूल विषे अति सस्त्र संसृत्ति मनुष्य निरंतर उपजे हो। और मल मु
 त्र सिन कष बाग दि अश्रु चि स्थान विषे नी उपजे हो। यह कथन गोगा मट सार के
 जीव समासाधिकार मे जानना॥ छ। ९३॥ चरवा चौराध मी॥ प्रश्नः॥ निगोद के पो

प्राणहो॥ चोईं डीकें मेअसेमेत आब प्राण हो॥ असें नीपंचें डीकें कानसेमेत नव
प्राण हें॥ सेनीपंचें डीकें मनसेमेत दशा प्राण हो॥ आर अथ पर्यासि अलक्ष पर्यासि
एकें डीकें सासो स्वास विना पुचेत्ति तीन प्राण हो॥ निइं डीकें सासो स्वास नाथा वि
ना बंद प्राण हो॥ पंचें डीसें नी तथा असें भीके सासो स्वास नष्टा मन इ नती नो॥
द्विनां सात प्राण हो॥ इह कोइ संदेह करे॥ अलक्ष पर्यासि मन्त्र नम नुष
क धर्नी सुनें हो॥ इहां सात प्राण नचो कं हो॥ तिस काउतरा सासो स्वास ॥ नाथा ॥ मन
इ नती नो प्राण वक्र मुदे अथ पर्यास काल मेम नदी॥ या ते सात ही कं हो॥ इहां भी एक संदेह
रहा॥ अलक्ष नेन तो कोइ भी पर्यासि पूरी करी नदी॥ तिस के सात प्राण कि स अथ
सो कं हो॥ तिस काउतरा॥ जानि की अथ पर्यासो कं हो॥ जे संकोइ पंचें डीजी वगने विषे
उप जा हो॥ अथ त मुद्र त तां ई तो उ स के कोइ इं डी मही परं तु जा ति की अथ छ

पर्याप्तनामकर्महोकेनदेहोदे॥ कोहते॥ जोजीबपर्याप्तोहोनादे॥ सोअवतां ईश्वारपर्या
 मिपूरीनकरैतिसे॥ तबतां ईश्वरपर्याप्तकहियो॥ ज्ञासुविषे ईसे॥ निहृत्यपुया॥ समंज्ञा
 हो॥ निहृति॥ कहिये॥ त्रारीकी॥ निष्पसिता॥ कश्चिप्रथया॥ सिकहिये॥ अग्रपूर्णहो॥ यदक
 यनगोमटसारे॥ क्तजानना॥ १॥ चरचावां॥ एमी॥ अश्रु॥ पर्याप्तिविषे॥ औरप्राणवि
 षे॥ कयाने॥ देहो॥ समाधन॥ प्राणके॥ दशमे॥ देहो॥ इंद्रियप्राण॥ आमनोबल॥ वचन
 बल॥ कायबल॥ सासो॥ स्वास॥ १॥ प्राणो॥ एवो॥ १॥ इनप्राणो॥ विषे॥ औरपुर्वोक्तय
 र्गसिद्धिविषे॥ यदने॥ देहो॥ पर्याप्तियोगपत्रा॥ क्ति॥ कीउत्पत्तिको॥ पर्याप्तिकहियो॥ तिन
 ही॥ पर्याप्तिकी॥ मेरि॥ एते॥ को॥ प्राणसंज्ञा॥ दे॥ ॥ ज्ञा॥ क्ति॥ रूप॥ पर्याप्ति॥ व्यक्तित्प्राण॥ ति
 ने॥ मे॥ ए॥ के॥ प्री॥ य॥ मे॥ के॥ चार॥ प्राण॥ दे॥ ॥ स्म॥ र्ती॥ ने॥ ई॥ ॥ का॥ य॥ बल॥ ॥ सा॥ सो॥ स्वा॥ सा॥ ॥ ॥ आ
 यु॥ ॥ वे॥ ई॥ ई॥ किं॥ जी॥ न॥ व॥ च॥ म॥ स॥ मे॥ त॥ छ॥ ह॥ प्राण॥ दे॥ ॥ ते॥ ई॥ प्री॥ के॥ ना॥ सि॥ का॥ स॥ मे॥ त॥ सा॥ त

कीअपेछाएआत्मांगुलहै॥अपेछविनाप्रमाणंगुलजानेनो॥उत्सेधोंगुलन
 ।इहोंअवयवहुंसेदहपक्षीसअंकअंगुलभावके॥विषंउमतीसअंकप्रमाणमनु
 कोंकरसमायो॥समाधान॥पक्षीसअंकप्रमाणंगुलसोंउनतीसअंकप्रमाणम
 वातगुणउत्सेधसमायो॥अपेछविनाप्रमाणंगुलसोंउनतीसअंकप्रमाणम
 नत्रात्तिकीविचित्रताहै॥संदहनकरणा॥मदकथनगोममत्सारकेजीवकांड
 छेउअधिकारविषंवेधना॥७॥ए॥नरनाइक्यागवी॥प्रश्न॥पर्याप्तअपर्याप्त
 क्या॥समाधान॥पर्याप्तकेबदनेदहं॥आहारपेचारीरभंडंइयभूमासोस्वास
 पमनहीइमछहोंपर्याप्तविषंपर्याप्तनामकर्मकेउदेएकेंडियादिजीवसुयोगपु
 पूरीकैये॥अपर्याप्तनामकर्मकेउदेअलसुपर्याप्तोहायएकपर्याप्तिनीप्रएनकैर
 ईकैहनीसराजेदअपर्याप्तकि सकर्मकेउदेहोहै॥तिसकाउतरा॥अपर्याप्तानीप

जायन्नेसीकहनावतिहोसो क्योकरहोस्माधान॥ पुष्करार्द्धोपकेमधमानुषोन्न
 रनामपर्वतहो॥ तिसकेपरेमनुष्यनदाजाड॥ विद्याधरतथा सिद्धमरीसाधुमीनजाय
 याहतिपर्वतकानाममानुषोत्तरहोमनुष्योकेपरेहो॥ मनुष्यउरैहो॥ प्रागमानुषोत्त
 रान्ननुष्याः॥ इतिस्त्रात्ता॥ तातेअटार्द्धोपकेवाहुरिमनुष्यनजाहो॥ षट्प्रदनियमह
 मनुष्यकाबालनजाया॥ षट्कहनावतिहोनास्त्रोक्तनही॥ असेंहोयतोतीर्थेक
 रेकबालक्योगोयो॥ ब॥ ८९॥ चरचान्नैवमी॥ अटार्द्धोपविषंउन्नतीसअंकप्रमा
 णमनुष्यकेहहो॥ तिमैमीनचारआगप्रव्यस्त्रीहो॥ तिसअटार्द्धोपकाविस्तारपे
 तालीसलाबयोयसप्रमाणगोलहो॥ तिसकीपरिधिएककोडिवयालीसलाषती
 सदजारदोयसेउन्नंचासयोयनएककोससअहसेच्छासवधनुषपंचांगुलमात्रह
 तिसछेत्रकेअंगुलपच्चीसअंकप्रमाणफलेहो॥ विदेहादिछेत्रतयाचतुर्थेका

रं नंदिमुनिना॥ नारकाणां खरः कायो॥ स्थुत्तात्तिन्तविक्रियः॥ करतः कालोडर्गो
ध्वान्नोतर्मुहूर्त्ततः॥ ८७॥ चरन्नात्र ठासिमी॥ अश्रादिवता कीदेहधनुवर्जित
हेतिनदेवता नैकैः मनुष्यमनकासास्त्रीपुरुषसंबंधी भोगव्यवहारहे॥ तिस्रैर्केरति
अवसानकैर्वाकरिहे॥ समाधानो जैसैः मनुष्यतिर्येचनैकैर्वेदकीजदीरणा
दोयकारणैरेकैस्तौ चित्रकारणहे॥ ह्जावीर्यनामधनुकारणहे॥ तैसैः देव
तामैकैः नदी॥ उमैकैः गीतनृत्यादिका कारणपादचित्रही सों वेदकी उदीरणाहे
हे॥ चित्रदी सों भित्तेहे॥ असें त्रिलोकप्रद शिविवेकत्वाहे॥ तथाहि॥ अमरादीभव
सुरा॥ अद्वैते तं कंतिव्यपडिचारा॥ वेदसुदीरणाये॥ अणुभवयों माणुससमाना॥
धाडविहीणं तादों॥ रेदविणिगाममच्छिण्डकृताणं॥ संकष्यमुहं जायदि
विगमि॥ ८८॥ चरचानुनासीमी॥ प्रश्न॥ अहार्दोपेकवाहिरमनुष्यकाबालन

श्रुतादिके उत्सव विषे प्रथम विक्रिया की देह सो जादो मूल सरार अर्पने । स्थान र हे सो
 क्या चेष्टा कै सो समधान । विषय सेवना दिख्ये चेष्टा न करे । योग प्रचेष्टा करे । मत उक्तै त्रै
 लोक प्रज्ञा सो । जमावयार पङ्क्ति सु । उत्तर देहा सुराण गच्छेति । जन्म रागाण सु सुहं मू
 ल शरीराणि चेतंति । एही चरन्नासना सिमी ॥ प्रस्ता ॥ उपर लिखा देवता एष्य कृ वि क्रिया
 की देह करि देहांतर विषे जादो । सो एष्य क वि क्रिया क्या कह्यो । समधान ॥ एष्य क
 कहिये और जुही देह रूप वि क्रिया कर से को देवता सामर्थ्य दै । जि सी देह तथा अप
 ने पुण्यांनुसार जित नी देह धरा च्चाहे तित नी धरे । इस प्रकार नारकी एष्य क वि क्रि ।
 या कर से के न दै ॥ अर्पने सरार ही विषे अश्रुता कार वि क्रिया करे । या ते नारकी न के
 अष्टम क वि क्रिया जाननी ॥ उक्तें च आदि पुराणे । अष्टम वि क्रिया स्पेष्टा ॥ मश्रु
 माडरितो दयात्मा । ततो विहृत वीज त्मा विस्तृता । तैव सामता ॥ आचार सारि प्युक्तं वै

यसौदेवतांतरकीष्टजाकैरतवसमुत्कजाय। जिनान्मायकीष्टजाविषेसमत्क
नजाय। द्व्यंकाकांक्षारूपश्चरतिचारलोगे। कोर्दपूछेकलिकुंडुदंढकअर्थक्या। त
ह। कलिनाचेनक्षेत्रे। घरास्तसुखंडुः समसूक्तः। त द्यातनेमखादंडुः। पार्श्वेनाथइती
रितः। बाणध। चरचापचासिमी। प्रश्न। अष्टादिकपर्वकेअवसरदेवतामंदीस्वरद
पविषेजोहो। तेआयदिनसार्दनुदांद्धारैद्वेहें। किमिन्नजांहे। समाधान। स्वाती। कागु
लुनआसाढकेमहीनेउजालीअष्टमीतिंजोहो। दोयदोयपदरचारै। दिसांमोंनिरंत
रपूजाकैरौअसेंआवौ। दिननंदीस्वरदीपविषेवितोवौ। उक्तंचत्रिलोकसारमधो। प
डिबरसंआसाहेतद्विक्रिगाफागुणेयअवसिमिंदो। सुखदिणे। सियनिरकंदोदोय
पदरेसमुरसेह। ७८। सोदमोर्दसाणेचमरौवरोयणोपदरिक्कादो। सुबुपरद
रिक्काणुतरदिसासुखंडुबंतिक्कल्याण। ७९। ८५। चरचावलीयासिमी। प्रश्न। दिवतानंदी

कीपूजासोविघ्नजातेरहें॥तोपूजावालोंकेंविघ्नक्योंउपजेंहें॥तिसकानुत्तर॥य
 यावत्तत्प्रसीतपुर्वकनीतवानुखरुषःप्रागधनकरेतोसर्वेषांविघ्नमिदं॥अत्र
 निर्वोद्धितबंधकाफलनमितेतोकलिउंडदंडकीत्राक्तिदीनमकहियो॥जा
 मेंनिकाचितबंधकाफलसोगेविमाजायनही॥अस्मानियमदे॥ज्ञैसंसीताज्ञैमि
 दुःस्वप्नेकेनयसोअनेकपूजाप्रज्ञानारूपशोभकर्मकीनं॥परंतुनिकाचिसनं
 धकाफलमिदंनही॥तोपूजामिफलनकहियो॥इहांकोईफेरकहे॥विघ्नकेन
 यसोकलिउंडदंडकीपूजाकीयेंमिथ्यात्वकादोषलोगकिनही॥तिसकानुत्तर
 कलिउंडदंडनामपार्श्वनाथसंबंधीयंत्रकोहो॥सोपार्श्वनाथसंबंधीयहजान
 ना॥फेरबोला॥जबविघ्नकाजयमानातबसम्पत्कानिन्नांकितअंगकह्यार
 हा॥जबनिन्नांकितअंगगयासबसम्पत्ककह्यारहा॥तिसकानुत्तर॥विघ्नकेन

मं सो कह्यो है। मध्याह्निक नुत्तम शुष्म नि सो है। अपराह्निक दीपधूप सो है। प्रनुके
द्या सो गार्धप्ये द्ये दहिने अंग दीप धरियो। इस प्रकार त्रिकाल पूजा की विधि है। गृ
हस्वके अंगमादिका आरंभ आवा प्रपक्यो। तहां यन्न कर ते त्रसका घात वच्यो है।
थावर की हिंसा कावचावसर्वथान हो पले है। तिस दोष के उत्तारने के
दुर्कर्म विषे प्रथम देव पूजन है। तहां अरु चिकीयंग गृहस्व क्रिया का दोष
उत्तरै। यह जानि अष्ट प्रकारी पूजा के आरंभ विषे दोष नंदी ज्ञान नों। एतन्न सो
करनी॥ एत्रा चरचा चैरो सिमी॥ प्रश्ना॥ कलिकुंड दंड की पूजा का ब्याख्य रूप है॥ स
माधान॥ इंकारं ब्रह्म रुद्धं। इत्यादि वीजा चरम यो पार्श्वे नाथ संबंधीयं त्रैदं
कलिकुंड दंड संज्ञा है। तिस की पूजा का म्पूजा है। गृहस्व को को ईजाति का उपस
उपजा होय तो तिस के विनाचा का कारण है॥ इह को इ कह्यो। जो कलिकुंड दंड।

तदांनसिकासंसुवा। सञ्जो वैह कि नही। ॥ ८३ ॥ चरचातिमासिम। ॥ प्रज्ज। ॥ प्रजोकि
 समयदीपजोयके चटावने योगपदे कि नही। ॥ समाधान। ॥ अष्टप्रकारी पूजा अत्रमादि
 निधनेह। ॥ दीपजोवनेका निषेधने कर संज्ञे वै। ॥ प्रसाकही कहानही। ॥ चोथेका
 लमें अत्रावद्वर्मसो पूजा की जो पांछु बे कालमें सात सो की जे। ॥ तिस तय न्न पूर्वक सो
 ने के तथा स्तूप के टकनी समेत दीपक की अत्राती करायये। ॥ तहां के पुर की वाती
 तथा एतसों जोय प्रभु के अगों चटाइये। ॥ बडे पुन्य का कारण होइ। ॥ तदुक्त श्रीयोगीं
 देवै। ॥ दीवद्विगाइ जिगावरहं। ॥ मोहदंष्ट्रोइ एताइ। ॥ अहनुववासइ रोहिणिहिं। ॥
 सोय विपल बहं जाइ। ॥ पद्म नंदि मुनि नायुक्तं। ॥ अत्रार्तिकं तत्तलवक्रिं शि
 खं विभ्राति। ॥ स्वच्छे जिन स्य वज्र विप्रति विवितं यत्। ॥ ध्यानानलो मृगयमान इवावशि
 हो। ॥ दग्धं परिश्रमति कर्म च यं प्रचंडं। ॥ अत्र त्रिकाल पूजा में पूर्वोक्ति क पूजा अष्ट

ब्रह्मरो॥३॥गमद्वेष्टपायणासियकसंनुरंगुलविहोणदिवीअजिनिच्चडुरकमूलो॥पु
 जादाणाइदद्वहरो॥अथखयउत्तिमूलमूलायिअयंदरजलोयरकसरो॥सीडुएदव
 सराया॥पुजादाणंतगायकम्मफलो॥३॥इहांकोईसंदेहकरो॥दिवपूजनविबेंतो
 फलपुष्पादिवस्तुसकचेंदेंहो॥उपरनेवेद्यहीकाग्रहमकेंकीया॥तिसकाउन्नर
 नेवेद्यत्राष्टकीरूढितोपद्धानहीमैंहो॥औरजोवस्तुदेवताकेनिमित्तनिवेदन
 कीजतिससबहाकोंनेवेद्यकहिये॥निवेद्यतेनिनेवेद्योंकिरकोईअरहीपूछे॥देव
 चढीवस्तुपायतोग्रंतरायकर्मकाआश्रवहोई॥औरदेवचढीगंधमालादिकाना
 सिंकासोग्रहणहोहो॥तिसकाकपादोष॥उन्नरादिवचढीगंधमालादिकीसुगंध
 मंघनेकेअग्निप्रायसोग्रहेतौदोषहो॥असातावेदनीकाआश्रवहोहो॥मध्य
 तामेंदोषनही॥समवसरणादिमेंदेवताअनेकसुगंधसामग्रीसोपूजाकरेंहो॥

उभयगदिवकेनैवेद्यमन्त्राणां कीर्त्तनादिभिः॥ विघ्नकराणामन्तरायस्य॥ इत्यस्य सत्रके विवरणं नि
 वेद्यं॥ तथा अथ मन्त्रं॥ इत्युक्तं तत्तत्कार्यं सारनामस्य सत्रकीर्त्तितं हेतुं है॥ त० तपस्विगुरु
 त्पानां पूजा लोपप्रवर्त्तनं॥ अत्र नाथदीनकृपणानि द्वादश प्रतिषेधनां॥ पञ्चावधेय
 निरोधश्च नाशिकाच्छेदकीर्त्तनो॥ अमादोदवतादत्तनैवेद्यगृहणं तथा॥ लक्ष्मि
 रवदोपकरणपरित्यागो वधो गिर्मादो नमो गोपमोगादिश्रमसूदकराणं तथा॥ प
 ज्ञानस्य प्रतिषेधश्च धर्मविघ्नकृत्तिस्तथा॥ इत्येवमन्तरायस्य मन्त्रं त्पानवदेतव
 यर्द्ध॥ इत्यस्य कथनं मन्त्रे देवचेतने चैव नन्दनकाफलकस्याहं जेदेवधनं कैगृहणाका
 फलकं दं कुंदाचार्यकृत्तरयणसारविषेकस्याहे॥ तथा चि॥ जिगृक्षारपदृष्टा जिग
 पूजातिष्ठवन्देण विसेसधरो॥ जोमुं जइ सो नुं जइ जिगृक्षि सो॥ एरयगइ डुरकं॥ अथ
 तत्कलत्तविहरोदारिद्र्योपेगमूकवदिरं धो॥ चिं डालादि कुं जादो॥ पूजादोणा इद

सकौ॥ भावार्थः॥ स्वामी के आंगें दास का तेज दो तान दी पीछे हो है॥ संस्कार कट की भी फ
ल पुष्पादि धरें पीछे सो भाइ इ है॥ और कै सो है दास निर्माल्य वाहिन्क हिये निर्माल्य का
धारण करे है॥ भावार्थः॥ स्वामी जिस का भोग कर चुका होय तिसै गृह है संस्कार कट
भी देवता का निर्माल्य गृह है॥ इस प्रकार दृष्टांत विषे निर्माल्य धरें ते क उपपादकी सू
ना है॥ संभवे तो अष्टान करमा॥ इहां अव को ई प्रच्छे॥ जो कोई निर्माल्य मं स एा करे रति
क्या होय है॥ तिस बन नृतरा॥ निर्माल्य के ते द दोय ए क देव प्रभु॥ इज्ञासि वधन॥ जि
बज आदि वलु देवता॥ निमित्त निवेदन करिये समर्पण किये चढाईये तिसें दे
प्रभु क दिये॥ और पुंज नै चै स्याले आदि का प्रव होय तिसें देव प्रभु का दिये॥ तिनमें
दिव चही बलुषा इ तिस के अंतराय कर्म का वंध होय॥ और जो देव वधन का
कार करे सो नर क जाय॥ इहां को ई प्रच्छे॥ इह वात को न से शास्त्र मै कहो है॥ ति

ति सीता को वन में छोड़ न गयो है ॥ तहां दुखी होय अथपनें दासपद की निंदा क
रै है तिस जागै टूट घांत करि संस्कार कूट आया है ॥ सो देवालय विषे निर्माल्य धर दे
ने की ओर है ॥ इस ही को स्वतां वगान्ताय मे निर्माल्य कूट के दंड है ॥ तद्यथा ॥ संस्का
र कूट कसेव ॥ पञ्चा निर्वर्त्तते जसा ॥ निर्माल्य वाहिना धिग ॥ नृत्य नाग्रासु
धारण ॥ अर्घ्य ॥ नृत्य नाग्रा ॥ अमुधराण धिग ॥ नृत्य समन् ॥ कहिये दास लेन
मजिस का तिस को ॥ अमुधराण ॥ कहिये प्राण धारणा ताहि ॥ धिग ॥ धिग ॥ कहिये
धिग ॥ धिग है ॥ को न की मंझी ॥ संस्कार कूट कसेव ॥ संस्कार कूट की नां दी जावा
यो ॥ चित्पालय संबंधी एक निर्माल्य धरनें कास्त न दौ है ॥ तिसें संस्कार कूट स
जा है ॥ तिस की नां ई दास कजीवन है ॥ तिसें धि कार दौ नो कै सो दै दास ॥ पञ्चा
न निर्वर्त्तते जस ॥ पञ्चा ॥ कहिये पीछे निर्वर्त्तते जस ॥ कहिये प्राप्त दै ते जति

दिके चटाइयेह ॥ असें तो निर्मोत्य का चटावनां ड्रवा ॥ वडा दोष उपेजा ॥
तसों जे सैं आपक हो दोत सैं कों कर सैं वेया तें देव कों चेटे सो निर्मोत्य हे ॥ आ

धरा निर्मोत्य नही ॥ इह को ई पूछे हि वचटा सो निर्मोत्य ड्रवा ॥ फेर ठे सैं क्या करे ॥
निस कम न चरा ॥ जो वस्तु देव कों चटाई तिस वस्तु सैं चटावे नै वाले का बुछे नी प्र
या जन न रहान ही ॥ जे सैं किस हो पर वस्तु विषे ममत्व न हो ॥ ते सैं देव चढी वस्तु सो
बुछे ममत्व ही ॥ अथ वा जे सैं फला कांही कि सान उत्तम वेत सैं वीज वौ वै हो ॥ फि
र उस का वीज सों बुछे प्रयो जन न ही ॥ फल सो प्रयो जन न हे

प्रयो जन न ही ॥ जो इ सैं किस ही कों देय तौ ममत्व आया राखै तौ ममत्व आया

उपाइ कि स ही जे न ग्रास्त्र विषे प्रगट स्फुरि जाना गाया न ह
धुरांण विवै एक प्रसंगे हे ज दारा मजी की आज्ञा सौं द्रुतां त मुख नामें सनाप

स्त्रीपूजाकरयदत्तोदमन्तोसुनोदो॥ परञ्च निषेकनकैरासमाधानपूजातोञ्च
निषेकचिनाहोयमदो॥ यद्वनियमेदो॥ किपरमेनासुंदरिनेञ्च निषेकनकोनामही
तो गंधोदककदो सोलाश्रोतयास्त्रीके स्पर्शकाकुछञ्चैसा दोषहोनातो॥ स्त्री
काकीयातयास्त्रीकै द्वायसोञ्चाहारसाधुकादकोलेतो॥ तिसते उत्तमपति
व्रतागुणवतीस्त्रीनको पूजाकानिषेधनही॥ यथाचरचायैयासिमी॥ प्रश्नानिमा
स्यकिसेंकहियो॥ समाधान॥ देवकोमन्त्रपूर्वकजिसवस्तुकासमर्पणकोजो
तिसैनिर्मोत्यकहियो॥ देवचढानिर्मोयल॥ यद्वकहनावतिमेजीकहदो॥ ५
होकोईनर्ककर॥ इमतोयो जानैहो॥ देवके आगे धरासोनिर्मोत्यकुवाचदा
बनंतोईकरोदो॥ तिसकानुशर॥ नो॥ जो देवके आगे धरासोनिर्मो
हो॥ ज्ञातोप्रथमपूजनसामग्रीदेवके आगे धरियेपीछे मंत्रप

त्य

कलगाया॥ यद्वक्थ्याप्रसिद्धहीहो॥ तथा अंजनो देवी के भवांतर विषे विजया
हो॥ ऐं अरुणामनगरतहो श्री कंचराजाति न के पंढराणी कनकोदरी॥ हसरी
लक्ष्मी मती॥ सो परमधर्मात्मा॥ मंदिर विषे प्रतिमा की थापना करि निनय स
क्ति सो पूजा करै॥ ~~एक~~ एक दिस कनकोदरी आपने पंढराणी पद के अनिमान
सो अंग सपत्नी माने सो॥ लक्ष्मी मती राणी की प्रतिमा में दिखे स्थान सो बाह
निका संधरी संयम श्री नाम अर्जि का के उपदेश सो प्रतिमा यथा स्थान
हा आने दो सो आप पूजा करी॥ यथा अति तय करि सम अधिसरण

हूँची॥ सदां सो अंगराजा मे दंड प्रदे अंजमाना नाम पुत्री दुर्ग कनकोदरी के
नेम के त काल प्रतिमा की अभिजा रही॥ तिसही कारण सो अंजजन सो विषे पा
सो विच्छेदा कवा॥ यद्वत्संग बडि पद्म पुत्राण विषे जानना॥ इहो कोई कहो॥

वीसीकीस्तुतिविवेचनमस्कारकीजहो। यातेंतीर्थेकरसदाकालपुज्येदो॥८॥ चर
चाइक्यासीसो॥ प्रश्न॥ स्त्रीकोपूजाकरनेकाअधिकारहेकिनही॥ समधान॥ किस
हीकथापुराणमेंस्त्रीकोपूजाकानिवेधतैत्रायामनहो॥ पूजाकरनेकाप्रसंगतोके
ईजागैत्रायोहो॥ प्रथमवार्तासीविवेचराजाअकंपनकीसुलोचनानामपुत्रीति
नअष्टाक्षिकपूजाकरिपिताको॥ १॥ अत्रासिवादीनी॥ राजाभेअंजलीक
रिमाथेधरीयदकथामहापुराणविषेहे॥ तथाहि॥ विधसयाष्टाक्षिकीपूजा॥ म
मर्चीछोयथाविधिहस्तोपवासामतन्वी॥ प्रोषांदाउमुपागता॥ ८॥ सृपंसिंहास
नासीनो॥ सोपुच्छायकतांजलिः॥ तदन्तं प्रोषमादाय॥ निधाय त्रिरसिस्वयो॥ ८॥
उपवासपरिश्रान्ता॥ छुत्रिकेत्वंप्रयाहिता॥ द्वारणंपारणाकाल॥ यितिकम्पावि
सर्जयत्॥ ८॥ ३॥ ब्रह्मेश्वरमेंनासुंदरीनेपूजाकरिकरिप्रीपालकीदेहेकेगंधोद

की अहो फेरंगं धेद कसों कवा द्रव्यै आगं और विधि दे असे गंधो द कका गदहा घनी
जागै है ॥ और अग्रे गपदो ता तो महा पुराण विषे कादि कों कहते ॥ ४१ ॥ अचर चाउ
नासमी ॥ अश्मा ॥ ऊपर शेषादत कहे सो कया कह्यो ॥ समाधान ॥ पूजा करे ते अद्वसत

विना चंदे वा की रहें ॥ तिन कों शेषादत संझो है ॥ तथा आसिषा कहे अप
त्रमानि मायें धरे नें योग पद ॥ उक्तं च ॥ महा पुराणे सज्जाति क्रियायां ॥ लें नयं सुचि
॥ निनी सुषे तथा दहे ते ॥ स्थिती करण मेतस्मि ॥ धर्मो सादनं परं ॥ ४२ ॥

अस्समी ॥ अश्मा ॥ प्रतिमा जी के अतिषे कसमय दर्शन प्रणाम कर एगयोग
है ॥ किनही ॥ समाधान ॥ हे प्रसादे शकाल को ई नदी ॥ जहां तीर्थे कर को प्रणाम नर्क
जे ॥ तीर्थे कर अमुके नाम थापना प्रत्यजावचारों निहें पे पूज्यो है ॥ तहां इत्यमक
रि श्रेण कर जानर क विषे दें महा पद्म प्रथम तीर्थे कर हें नहार है ॥ न

कलेनां योगपदे किनांही॥ समाधाना॥ भगवानका अभिषेक जल इंद्रादिक रिपु ज
हो॥ अत्यंत विनय भक्ति सो लेनां योगपदे तदुक्तं॥ निर्मलं निर्मलीकरांप वित्रं पापना
त्रानां॥ जिन गंधेदकं वंदे कर्मोष्ट कथिना त्रा मोक्षे॥ धर्ममत्रा सुक्तं॥ नाडा पत्र पत्तिद
समा मय परीक्षार्थं गृहीत्वा भिषक्॥ स्पृष्ट्वा राजवंती ततः कुच युगं स्पृष्टुं किमिच्छ
स्पृष्टे॥ दिव्य सार्चन सार वस्तु निचया तर्गं क्षम तु पुष्प त्रयं॥ ग्राह्यं त्रयो यम त्रेय वस्त्वनु
चितं ग्राह्य त्रिर त्र्ययं॥ गंधोदक के प्रत्ना व सेराजा श्रीपालिकी कुक्ष्या धिग
दी॥ अयोग पदो तातो मोक्ष गामी जीव के लंगा वते॥ अरम हा पुराण विवेग ना
धन प्रमुष एक सो आच क्रिया कं ह्यो॥ तिन में एक वाल क के वाल उत्तरा वने
की के त्रा वापन ह्म स र नाम चो ल क्रिया दो॥ सो गुरु प्रजा पूर्व क हो दो॥ त हां वाल
क के मस्तक पे त्रोषा रुत धरि कै॥ गंधोदक से कि त्रा आलि क रि चो दी रा वि सुं डन

पूजाति सकेपीच्छं श्रौरनैमित्तकपूजाकीडा॥ तदुक्तं॥ जिनेन्द्रसिंघांतयतीन
 तं॥ यिपूजां जिनेनाथशास्त्रयमिनां॥ इत्यादि॥ जिनेनक्तिः॥ जिनेनक्तिः॥ शु
 : श्रुतेनक्तिः॥ गुरोः नक्तिः इत्यादि॥ लुंकारविंडसंयुक्तं॥ नित्यं ध्यायेन्नियोगिनः॥ का
 मदं मोक्षदं चैव लुंकाराय नो नमः॥ अत्र विरलश्राद्धघनो धप्रदगालितसमस्तमूल
 लंका॥ मुनिनिरुपासिततीर्थार्थी समस्वती हरलुनोदुरितं॥ अत्राज्ञानतिमिरांधां
 नां दानां जननालाकया॥ चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरुवे नमः॥ छ

मुणिवरदं श्रुति एषु एह वै प्र॥ इत्यादि॥ नैकजागैयद्दीकृतमैह॥ अत्रौरमा
 । स्त्रकी विनयनक्ति करेहं॥ यातिं देवपूजाकेपीच्छं श्रुतनक्ति यौगदे।

। उक्तं च यत्रास्ति लोके॥ स्तपनं पूजनं स्तोत्रं जप्ते ध्यानं श्रुतस्तत्राष्टाक्रियो।
 . तासां हिः देवसेवासु गेदितुं॥ चरचा अत्र वदन्तरमी॥ प्रश्ना अत्र गवानकां धेद

अंहीउत्तमएकांतजागेंदोयतदांगपरद्वजंगुलतार्ईकीप्रतिमापूजे॥एकत्रास्रविषे
वारहेजंगुलभीकहीहो॥बदतीविंबदोयतोदेऊरेंथोपे॥अन्यथात्रागपानंगहो
॥तडुक्तंप्रतिष्ठात्रास्रे॥आरंभेकांगुलाधिंनं॥यावेदेकदशांगुलांगुदेष्टुपूजेय
द्यात्सा॥उर्ध्वश्रासादेकेष्टुनः॥७४॥चरन्वापन्बहन्नरम॥प्रश्नादिवपूजमयोमपु
रुषकेसान्नाहियो॥समाधानाष्टुभिः॥प्रसन्नोगरुदेवभक्तोदृढव्रतः॥सत्पदयासमेत
नादहः॥पटुर्वीजपदावधाश॥जिनेंद्रपूजासुसएवत्रास्तः॥शानाकुलीनोमडुर्दृष्टिर्न
पापीनाप्यपंडितवानिक्लिष्टक्रियावृत्तिर्नोतंकपरिद्विषितः॥शानाधिकांगोन
दीनांगोनातिदीर्घोमवामनः॥नविस्सुपोनमूढात्मानातिदृष्टोमवालकः॥शून
द्वसिकेवषासीमात्रास्त्रुद्धामलोन्नवान्नातिक्रोधोनदृष्टात्मानोभक्ता
नविकल्पकः॥७५॥तमायावीनमोहीवानमृष्टोमादृढव्रतः॥नार्थाधी

सास्त्रमें कहे ॥ तथा हि ॥ जीर्णे चातिशयोपेतं ॥ तद्व्यंगमपि पुजयेत् ॥ त्रिगोही नमनसु
 जं स्यान्निर्देयं तन्न ददादि ॥ ७४ ॥ चरमावदक्षरमी ॥ प्रश्नप्रतिमां जीविषं कामका
 आकारकोधे संलग्ना दोषो ॥ साकोदहेत् ॥ समाधाना ॥ प्राधानकी प्रतिमा जीके कामका
 रदाका नुपाये ॥ सोई धर्मकी प्रतिमा विषे रूढ चल परी ॥ और कारण कोई न
 दी ॥ ७५ ॥ चरमातिदक्षरमी ॥ प्रश्ना ॥ त्रणस्वती प्रतिमा ॥ हेतिन काव्यास्व रूपे ॥
 गाथा ॥ सिंहासणा दिसा दिया ॥ बिणील कुंतल सुवज्र मय दंता ॥ विदुमन्त्रहरा
 किसलय सोदायर दछ पायनला ॥ ७६ ॥ द्वाताल मागलक्षण ॥ त्रियोपेकं तद्व
 वदं तं वा ॥ धुरुजि एखुंगा पडिमा ॥ रयण मया अथ अहिय सया ॥ ७७ ॥ षट् अक्षर म
 प्रतिमा कावर्णने नमचंद्र सिद्धांती ॥ द्वात त्रिलोक सार विषये ॥ ७८ ॥ चरचाव दोन
 रमी ॥ प्रश्ना ॥ गृहस्थ ॥ अर्पने घर में प्रतिमा पुजन करे कि नही ॥ समाधान ॥ सब सो

स्थानकावयास्वरूपेक्षेति स काव्योऽङ्गः। अङ्गस्य लयमधमाङ्गं गुलीताङ्कैः प्र
णतालसंज्ञादौ। सोऽत्र ये सं अङ्गलसो वारहङ्गं लमात्रं होदौ। जोऽप्रतिमाजी
तालद्वेयतिसं सौ दशागुणी उच्चं ताद्वेय। पाटवाटनद्वेय। तिसं स मचचुर
स्थानकद्वेयो। तिसं सै जे न की प्रतिमां दनातालप्रमाणवाहिये। और देव
की प्रतिमानवतालप्रमाणद्वेयो। त उक्तं। त्रिभिर्नास्त्रे। अथ वीजां कुं। ए मथ ना

दा प्रातर्द्वार्यविभ्रवसं मेता। त्ति देवाः दशातालः। ओषादेवाः भवंति नव।
तालः। अथ दस मचचुरस्व सं स्थानकास्वरूपतया तालकाप्रमाणं अत्र भयं नंद
सिद्धं। त्विचक्रवर्ती कृतकर्म प्रकृतिनाम गद्यग्रंथेक्षे। तदां जानना। त्रिसे पूर्वोक्त
महाणसं सेत प्रतिमापूज्येक्षे। और जोऽप्रतिमा अतिशय वानं होइ सो जीर्णभीष
उपेक्षे। अंगदीन। भीषज्यकदीक्षे। त्रिरोही नद्वेय तो प्रज्जपनां दी। त्रिसे प्रतिष्ठा

ममत्सारेके उन्नराक्ष विषे सिद्धांतोक्तकह्योह॥ याने क्रानक्रियामे दोषमानमान
 ही॥ तथा श्रीयोगी प्रवे वक्तु तत्रावकाचार विषे नीक्रानकह्योह॥ दोहकचंद॥
 आरंभे जिण एदा विया एजो सावजू भणंति॥ इंसण ते एजिमइ लियउ॥ इच्छुणां को
 इउभंति॥ एखुणरासि एहवणा इयहं पाठलहुउ किं ते ए विसकणिय हं वडुउ व
 दिजनु एउहु मिजुइ जे ए॥ ७७॥ चरचाइ कदत्तरमी॥ प्रप्ता॥ प्रतिमाजी॥ विषे प्र
 म्पका विवरण को करेह॥ समाधान॥ जो विं नम्रि लिखा स्त्रोक्त समच्चतुरस्व सं
 स्थाना दिलखुन युक्त होय॥ सांगो पांग करि योगपदो ज्ञा प्रतिष्ठित होय॥ सो पुडुप
 हो॥ तडुक्तं प्रतिष्ठापावे॥ यदि वंलसहो र्युक्तं॥ शिलिपना स्त्रनि वेदितं॥ सांगो पां
 गं यथा युक्ता॥ पूजनं यं प्रतिष्ठितं॥ नासा मुखे तथा नेत्रे द्रुदमेना निमंडले
 स्थाने पुर्वंगि ते सुप्रतिमाने वषु जयेत॥ ७८॥ इहां को ईष्ट ह्ये॥ समचतुरस्व सं

मताकेनिमित्तहै॥ अंकतरन्नमयीप्रतिमाकाप्रच्छालदेवविद्याधरकौंकरहैं॥ तववे
हफेरकहैं॥ देवविद्याधरअकृतमप्रतिमाकाप्रच्छालकरै॥ यहकौंकरजांनीजाय
॥ निरसबगुनहर॥ मांनस्तंनसंवंधासुवर्त्ममयीप्रतिमाकाअभिवेकद्रुद्रादिदेवता
करहैं॥ तडुक्तं॥ अदिदुराणामध्ये॥ श्लोक॥ हिरण्मयीजिनेप्रसन्नोस्तिषांनुभ्रप्रति
ष्ठिताः देवंद्राः पूजयत्तस्मदीरोदांनोन्निषेचनैः॥८॥ औपरस्वर्गविषंभ्रास्रवतीप्रति
माकाअभिवेकदेवताकरहैं॥ तिसकीसगिणिनिमचंद्रसिद्धांतीकृतत्रिलोकसा
रविषंहे॥ गाय॥ सन्ने॥ सुहसयणगोदेवाजायतेदिणयरोवपुच्छरणगो॥ अंतोमु
द्रुत्तपुष्पासुगंधसुधिफाससुचिदेहा॥ ५५॥ आणंदत्तरजयसुदिरवेणजमं
संपत्तं॥ हृद्यं संपरिवारं॥ गयजमंउद्दिणालेच॥ ५६॥ धमंयसंसिद्धं॥ एवाद्वा
ददन्तिसेयलंकारं॥ लक्ष्मिणाभिसेयं॥ पूजंऊचं॥ तिसदिही॥ ५७॥ ऐषिहीअर्थगो

हो॥ प्रतिमा विषे केवल ज्ञान के समय की विधि चाहे जे॥ समाधान केवल ज्ञान की साक्षात्पूजा विषे क्रोन नही॥ प्रतिमा की पूजा क्रोन पूर्व कही कही दे॥ जेसे समय सरणें मं पार्थना यजी के भक्त के फणी होय नही॥ प्रतिमा विषे विद्यमान है॥ इस पक्षे क्रि दृष्टांत में प्रतिमा की पूजा विषे क्रोन विधियोग है॥ त्रिरज हां पूजा की विधिका निरूपण है॥ भद्रां प्रथम क्रोन ही कह्यो है॥ तदुक्तं॥ यशस्विलके॥ श्लोकः॥ स्तपनं पूजनं स्तोत्रं जपो ध्यानं श्रुतं सवः षोढा क्रियो दितो सद्भिः देवसेवासु गहिनां॥ ह्य॥ इत्यादिकथन ते जा नये है॥ क्रोन का बड़ा पुण्य है॥ इहां को ई के देगा वडा पुण्य तो अष्ट प्रकारी पूजा कह्यो है॥ जलादिके आरंभ सो न्ने न विषे को न मा विज्ञोष पुण्य है॥ हम तो धर्म पाषाण मयी कृत्य म प्रतिमा प्रख्या ल उज्जल सा के निमित्त करे है॥ तिसका उत्तरा॥ कृत्य म प्रतिमा का तो प्रखाल उज

ह्मणकासंदेहगयाइत्यादित्रौस्त्रीउदाहरणहै॥तिसंतेंप्रतिमाजीकिमस्तक
देषत्ररुचिनकरण॥६॥चरचाउमहत्तरमी॥पार्श्वनाथजीकीप्रतिमाके
स्तकपैसातफणहै॥तिसकाहेतंतो जानियेहेसुपार्श्वनाथजीकीप्रतिमापैनोफ
है॥इसकाक्याहेतुहै॥समाधन॥सातफसुनौफनगपारहफनवलीयावंत
तितनीसवपार्श्वनाथकीजाननी॥परीचाकरिलेनी॥६॥चरचास्तरमी॥प्रह्म
चौवीसतीर्थकारकीप्रतिमाकेआसनविवेदबभादिकचिह्नहै॥सोक्याहै॥स
धान॥तीर्थकरकेदाहिनेपांउमेंजोचिह्नजन्मसोंहोहैसोईप्रतिमाकेआसन
जानना॥सुदुक्तं॥जन्ममाणकोलेजस्सुदाहिएपायग्निदोयजंविह्नंतं
लरणपउत्तं॥आगमसुत्तेजिनंदेहि॥७॥चरचाइकहत्तरमी॥प्रह्मउपरलि
षज्जनविवेके॥मक्रियाउचितहैसोयहतो जन्मसमयकीवि

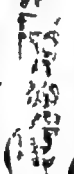
खंधरणोऽप्यद्यावती आऽमस्तकैप्येफणकामंदपकीयाकेवलज्ञानसमयरह्यान
 ही अत्रवप्रतिमाविषेदेधिथेदे॥ सिकेयाकरसंनैवो॥ समाधानाजोपरंपरासोरीतच
 ली आऽदेहो सोऽप्रयोगपैकेसैकही जाऽश्रिआरतोऽश्रिसेकारणहे॥ समवसरणोमं
 विद्यमाननदी प्रतिमा विषेययोगपदे॥ जे संको न क्रियाकेवलज्ञानकी पुजावि
 षं नही॥ प्रतिमा विषेयगति नही॥ आरव नारसीदास ने न सीपास्वनाथकी स्तुति
 विषेसातफणालिखेदे॥ सजलजलदतनमुकुटसपत्तफणश्रुति॥ तथा माघनंद
 मुनि की करीवंदे तानूकी जयमालामें लिखा है॥ फणिमणिमंडपमंडिते देही पाश्र्व
 निजगतदत्तसंदेह॥ इति॥ कथाकोशोमैं इसका उदाहरण है॥ पात्रके सरीनामत्रा
 यणोंकें अत्रुमानके लच्छणोंमें संदेह कुवातवपुहावती देवी पाश्र्वनाथकी प्र
 तिमाके फल विषे अनुमानके लच्छणका श्लोक लिख गई दर्शन करतें ही ब्रा

वं॥ धनिकथ नात्त॥ न ग्रोचोक्तं॥ चैतन्यनक्ति॥ निरूपणे यन्नस्तिलके॥ औमयंतरमर्त्यमास्क
 रसुरश्रेणीविमानाश्रिताः॥ स्वर्ज्योतिःकुलपर्वतांतरधारांध्रः॥ प्रवंधस्त्रिनीः वंदेत
 रवालमौलि विलसद्वनप्रदीपाचिताः॥ समाप्ताज्मायजिनेन प्रसिद्धगणधृत्स्वाध्यायि
 साध्याकृत्तीः॥ नाधैरेणंदकीः॥ प्राज्ञासो संजयंत मुनी॥ कीप्रतिमा विद्याधरो नैथापी॥ मृ
 गधृजनामकैवलीकीप्रतिमा कामदेवसेवस्थापनकरी॥ एहो नो प्रसंगवडुहरिवं
 शविषेदं॥ अरकरणाटेमं॥ अवारदधनुषप्रमाणवारुवलिजीवीप्रतिमा विद्य
 मानंद॥ तिसहीको गोमूटस्वामी कंददं॥ निर्वाणकांडमं॥ तीगोमटस्वामी कीप्र
 तिमा पुष्पकहीदं॥ तथाहि॥ गाथा॥ गोमटदेव वंदमि॥ पंचसयधणुहदेह
 नं॥ देवाकृणंति वित्री॥ किसरकुसमाणि तस्सुवरमि॥ न॥ यदप्रतिमा किसहीदी
 पोंतरविषै जाननी॥ ६॥ चरचाग्रसुचिमी॥ प्रश्न॥ श्रीपार्श्वनाथजीके तपकालवि

रीसेवाकरै॥ तिन कर्मनां म० ध्यान की सेवा का प्रसंग प्रसिद्ध नही॥ यह क्यों कर जाना ग
या॥ समाधान॥ इन कर्मनां वतौ एक जागै लिखा है और छ द कुल च ल वा स नी ग न से
धना कहै॥ बाकी इंद्राणी माता को प्रछन्त सेवें॥ घाट न दह॥ उन का अत्र साही नियो
ग है॥ यह कथन अदि पुराण में अयाय है॥ इह॥ चरचा स त स व मी प्रश्ना॥ ब्रह्म व ल
जी की प्रतिमा पूज्य है कि नां दह॥ समाधान॥ जिन लिंग सर्वत्र पूज्य है॥ भक्त में पाषा
ण में काष्ठ में जहों दहत हों पूज्य हैं॥ याही तें पांचों परमेश्वरी की प्रतिमा पूज्य है॥ इहां
को ईष्ट छै॥ तीर्थ कर प्रभु की प्रतिमा पूज्य सुनी है॥ पांचों परमेश्वरी की प्रतिमा कहों
कही है॥ तिस का उत्तराणी मंदिर मध्य पांचों परमेश्वरी की प्रतिमा कहों जीव
कों उके मंगल चरण प्रस्ताव विषे देषि लीजो॥ तथा हि॥ तत्र नाम मंगलार्ह स्ति
चार्योपाध्याय साधुनां मत्स्वापना मंगलं कृत्रिमाह कृत्रिमें जिनादीनां प्रतिवि

तो॥ इन्द्रादिपदपादके क्रमसो मुक्ति दोगे॥ परिग्रहवानसंसारमैपरिचमनकरेंगे इस
 भ्रांतिपरमार्थके जाननहारपरमेश्वरबंधमोक्षका स्वस्व कहसे ऊवेयद्वष्टसंगम
 ना॥ तथा विजयसंजयनामदोयचारणमुनिकों कि सही अर्थ वि
 धें संदेह उपजा॥ जन्मके अन्तरश्रीवर्धमान तीर्थंकर का दर्शन करत निःसंदेह
 तब महाप्रतिभा वसों प्रभु की सन्मति संज्ञा करि स्वस्थान गये॥ यदनी असे
 गमहापुराण विषे है॥ इस भ्रांति तीर्थंकर सो मुनि राज सो नेछा दुई॥ ईपा॥ चरना
 सखी॥ प्रह्ला॥ तीर्थंकर की माता को गन्तोवतर के अर्चन छपन छुमारी देवांगन से
 बेंहे ते को न सो॥ समुद्धान॥ कल्पवासी की इंद्राणी १५॥ भवनवासी की १६॥ अंतरे
 न की १७॥ चंद्रमा सूर्य की १८॥ कुलाचलवासी की १९॥ आदि २०॥ एवं २१॥ इहां को ईक
 हो॥ श्री आदि कुलाचलवासी की माता को सेवन आचो॥ यह तो सुनी ही छ

रकी माता सो सार्ध करे हो। कैसी है ए श्री पुष्पवति। कहिये देव दूत न पुष्प दृष्टि सो। पुष्प
वती है। माता पद्म गभीरान को यापे हो। आर कैसी हो। अरज स्वला। कहिये देव
कृता। धोदक की वर्षा सो रज र हित हो। माता पद्म स्त्री धर्म सो र हित हो। आर कैसी
हो। नाति राजस्य समता। कहिये नाति राजा को अनी छ हो। दोनो पद्म नाति राज
को इष्ट हो। इस उत्पत्ता सो तीर्थ कर की माता अरज स्वला जाननी। ईश। मरचापे।
सहिमी। प्रप्राप्तीर्थ कर प्रनु का मुनि राज सो जे ता होय कि नही समाधान। एक दिमा
श्री कुंथ नाथ चक्रवर्ती वन विषे विदार करि कै आपने नगर को आवे धे। मार्ग विषे
आताप न योगी साधु तर्जनी अंगुली सो मंत्री को विषये मंत्री मुनि को नमस्कार की
या। स्तीर्थ कर पूछै। देव का असा डर ए पर करे के साधु के से फल को प्राप्त होगे। प्रसन्न
मुख जग वास बोलै। कर्म नात्रा करेगे तो इस हो न व मुक्त होगे। कर्म नात्रा न होय ग

स्कमेकोई एक सम्यक् द्वाय तब तीर्थंकर प्रकृतिका वंध द्वाय ॥ तहां भी तब वंध हो ॥
 या जव केवली श्रुत केवली का समीप द्वाय ॥ केवली श्रुत केवली के समीप भी तब
 वंध द्वाय ॥  ॥ जव सो लह कारण विषे कोई कारण मिले
 सो लह कारण विषे भी तब वंध द्वाय ॥ जव नु स कारण के नु त्किष्ट भाव द्वाय ॥ चरवा
 चो स वंध ॥ प्रश्ना ॥ तीर्थंकर की माता रजस्वला दोइ कि मदी ॥ समझान ॥ आदि पुराण जे
 के गता वतरण पर्व विषे तीर्थंकर की माता के रजस्वला निषेध की ना हो ॥ तथा हि ॥ श्लोक
 सम्यक्तानां भिराजस्य शुष्मवत्परजस्वला ॥ तदा वसुंधरा ने जे जिन मातुर नु क्रिया ॥ १० ॥
 अथा ॥ वसुंधरा तदा जिन मातुः ॥ अनु क्रियां ने जे ॥ तदा क हिये तिस काल वसुंधरा कहि
 येष्ट पीजु हे सो ॥ जिन मातुः ॥ अनु क्रियां ने जे ॥ जिन माता की समानता सी धरे हे ॥ मावा
 स्वर्गावतार के नव मदी ने प ह ले देवता पंचाश्रय के रं द्वा ॥ तिस काल पृथ्वी ती

तीर्थं कर कर्म को कारण है। तै से छायायिक समय स्वप्न के लातीर्थ कर प्रकृति को कारण
नहीं। और असे न द्वाय तो द्वायायिक समय स्वप्न विना तो कोई मुस्कंदो
तानही। सब वही तीर्थं कर द्वाय के मोक्ष ज्ञां हो। या तै च्चायिक समय स्वप्न से और दर्बाना
विशुद्धि में प्रगट न दै है। इहां कोई और स्वप्न। एक पंडित ने यो लिखा है। सो लक्ष्मण
मध्यमुख कारण समय स्वप्न गुण है। सो चाहिये और पंड द्वाय कारण में स्वप्न को ईसा कार
ण चाहिये। तीर्थं कर कर्म का बंध द्वाय स्वप्न। तिलिखने से संयत द्वा नाग या समय स्वप्न
के और दर्शन विशुद्धि में न दन गिना परं न दै है। तीर्थं कर कर्म का समय स्वप्न कारण
नहीं। तीर्थं कर प्रकृति का स्वामी है। जो तै समय और आहार कद्विक का स्वामी है।
जो तै समय स्वप्न विना इन तीनों प्रकृति का बंधन वही कारण पूर्वोक्त है। यद्वांग सं
काय कृति से विचारनी। अब स्वप्न स्वप्न का सिद्धांत लिखिये है। प्रथम तीनों समय

विश्रुद्धिविषे क्त्वा विशेषेद्दे॥ तिसकाग्र॥ सम्यक्चेतो न भेदे॥ उपग्रामे वेदकक्षा
यिक एतीनां सम्यक् तीर्थं कर कर्म कां कारण न दी॥ इति विषे उक्तिष्ट निर्मलता को
दर्शन विश्रुद्धि संज्ञा है॥ सो तीर्थं कर कर्म कां कारण है॥ यद्द विश्रुद्धि ता के वली के
कट विना होय नही॥ कि वल एव इस ही सो तीर्थं कर कर्म का आग्रव हो है॥ और
यद्द न होय तो तीनां सम्यक् वाले के वली श्रुत के वली के समीप वा की पंद्रह कार
णों में तीर्थं कर कर्म का बंध कै॥ इहां कोई और पूछे॥ क्षाधिक सम्यक् तौ अत्यंत निर्म
ल है॥ इस में और विश्रुद्धि ता क्या हो है॥ तिसकाग्र॥ दायक सम्यक् तौ चोथे गुण
वा में श्री है॥ तहां दर्शन मोह संबंधी मल नही॥ या तें निर्मल है॥ चारित्र मोह के उदेय
प्रायोग्य नां कादि मल युक्त हो है॥ क्षाधिक की अलोकनें अपघात की या हो॥ इत्यादि
कारणों क्षाधिक सम्यक् में और दर्शन विश्रुद्धि में भेदे है॥ जिसे दर्शन वि श्रुद्धि एक ही

कर्मकाश्रमवद्वैतसहस्रांतिश्रयश्रमत्रगुणयोगेनतथाश्रमवैगुणानेनिरा
लं वश्रवस्मद्वैतं वंद्यवद्वैतं कश्चावतदीति सकालविनयसंपन्नतादिकेतेकारणा
क्यां करि संभवेति स ते सोल्लंघां का नियम न दही ॥ अथ समादितीनां समस्त विषे सो
ल्लंघकारणं सं एककारणा कोऽसामिलो तथा दोषश्चारि मिलो अथ वा सवमिलो
तीर्थं कर कर्म काश्रम वद्वैत ॥ समेवति स्त्रवंधो ॥ इति कथनात् ॥ अति समस्त
के विद्यमान दर्शन विशुद्ध प्रमुख जुदी तथा सव तीर्थं कर प्रकृति को कारण
द्वैत इच्छां ॥ सर्वार्थ सिद्धि दी कार्यां ॥ ता एता निष्ठा दुःश कारणति संमृता व्यमाना नि
व्यस्ता नि समस्ता नि तीर्थं कर नाम कर्म कारण नि प्रत्येत वा नि ॥ अतश्चोक्तं ह
द्वारि वंद्ये ॥ आर्था ॥ तीर्थं कर नाम कर्मणि बोद्धव्यं तत्करणं समस्य निश्रं ॥ व्यस्तानि
समस्ता नि भवंति सद्भा व्यमाना नि ॥ अतश्चोक्तं ॥ इत्येव ॥ समग्र दर्शन विषे ओरदर्शन

द्विपुराणमें कहा है॥ तथा हि विवस्वत उवाच॥ तत्र तत्र प्रजितः स तत्रैव परमं भवेत्॥
तत्रैव तत्रैव यदक्षरं॥ तत्रैव संस्क्रिये तत्रैव तत्रैव प्रजितः स तत्रैव परमं भवेत्॥
इति नामासीत् स तू जायते केवलं॥ तत्रैव चरचावसन्निमी॥ प्रश्नः॥ युगकी आदि विषे प्रश्नः स
वाङ्मनसि जी मुक्त इव त्रिसें सुमी हो॥ पुराण विषे क्यो करि हो॥ समाधान॥ प्रथम हो
अनंत वीर्य नाम गजामुक्त इव॥ तदुक्तं॥ आदि पुराण मध्ये विंशतमे पर्वणि॥ श्लोकः॥
संबुद्धे नंत वीर्यश्च पुरोः संप्राप्त हो॥ स एव सुरैरवाप्तः स प्रज्जर्द्धिरप्रोप्तो मोक्ष गता वन्तः॥ ६॥
चरचादि शास्त्रमी॥ प्रश्नः॥ तीर्थ कर नाम प्रकृति के आश्रय को दर्शन विप्रश्न्या दिसाल
हकारण के देहों तदा एक सत्त्व जी की चाखा टीकामें यों लिखा है॥ सोलह कारण स
व मिले तव तीर्थ कर प्रकृति का आश्रय होया एक भी घटे तौ न होया॥ सो क्यो कर
हो॥ समाधान॥ त्रयोपगुण स्थान में त्रैयत्रां वने पर्यंत पांचों गुण स्थान विषे तीर्थ कर

य उपधाभ्यामः समाहितौ ॥ हो ॥ सर्वद्वंद्वविनिर्मुक्तो व्याख्यानादिषु कर्मसु ॥ विरक्तो मा
 नवान्ध्यानी साधुरित्यन्निधीयेत ॥ १९ ॥ सामान्यपने साधुतीनां को कद्विये ॥ बित्रो
 वबिभारबिषे साधपदसाधही कौ जानन ॥ जाते आचार्य नपाधाय को साधु कसे
 साधु को आचार्य नपाधाय पद न कद्विये ॥ तिसका नोरा ॥ आठई समूल गुण की
 अपेक्षा तीनों को साधु पद समाने दो ॥ साधु के अत्र वाईस गुण जु देहे ॥ तिन कवि
 वरण ॥ गद्या ॥ ददद स ए स से नेया ॥ त्रियापेच वडूँ ति एण स ॥ तेरद्विदस
 चरण ॥ अत्र उर्वी संडूँ तिसा हूण ॥ अर्थ ॥ आइ दिस ममत्क ॥ २० ॥ मसादिज्ञान ॥ अ
 हिंसादि मद्या व्रत ॥ ईर्यो दिस मित गुप्ति आ एस धुम द्वारा जने के अत्र वाईस गुण जु
 दे जाने नो ॥ इहा को ई हूँ ॥ साध के अत्र वाईस मूल गुण ॥ किस अपेक्षा सो दो ॥ औ
 र ए अत्र वाईस गुण की को न अपेक्षा दो ॥ तिसका न सर ॥ अठईस मूल गुण का क

उजीवसोऽघाटकजीमुक्तनदोद्वि। यह नियम दे। तीसरे संमन्निदका बौगाजघ
नजीवसंख्या। त्विष्टजीवसंख्या ॥२०८॥ तिसका बौगा ॥ एक समय विषे एकज
वमुक्त होय तिसे जघमजीवसंख्या कहिये ॥ एक समय विषे एकसो आवजीवमु
क्त होद्वि तिसे त्विष्टजीवसंख्या कहिये ॥ एक समय में इन सो वटती जीवमुक्त
नदोद्वि। यह नियम जानना ॥ ४०॥ चरचार कसाली समी ॥ प्रश्न ॥ आचार्य उपा
धाय साधु इन तीनों पद विषे त्विष्ट पद को ना समझाना ॥ उपदेशाकार्य विषे
आचार्य मुखोद्वि। पवन पावन विषे त्विष्ट पदो संभम के साधन विषे सा
धकी वडी शक्ति दे। मोन मूलं वीपर धिस्त दे। या तं साध पद उ त्विष्ट है ॥ तदुक्तं
नीत सारो ॥ पंचाचार रतो निमं मूलाचार विदग्रणी ॥ चतुर्वर्णस्प संघस्य सत्रा नि
र्यदस्ती र्षंते ॥ ए। अने कनय र्से कीर्ण त्रास्त्रार्थ व्याकृति च मः ॥ पंचाचार रतो ज्ञे

रंतरतमोसंलग्नरूपमोक्षमार्गचले॥ तिसैअनंतरकहिये॥ तिसकेनेद२ एकजघ
 न्माएकउत्किष्ट॥ जघनअनंतरसमय॥ उत्किष्टअनंतरसमय॥ तिसकाबो
 राएकसमयमोक्षमार्गचले॥ दूसरेसमयचले॥ इसनातिसंलग्नदोयस
 मयचले॥ बढतीसमयमचले॥ तिसकोजघनअनंतरकहियो॥ आठसम
 यलग्नगमोक्षमार्गचले॥ तिसैउत्किष्टअनंतरकहियो॥ इसकाबोरा
 तचछद्दमासकाउत्किष्टबिरहकालमोक्षकावीतै॥ तवछद्दसेआवजै॥
 वआठसमयमांदिलग्नगिमोक्षमांदिपहलेसमय३॥ दूजेसमय४॥
 तीजेसमय५॥ चौथेसमय६॥ पांचुवेंसमय७॥ छठेसमय८॥ सातवेंस
 मय९॥ आठुवेंश्री१०॥ इसनातिआठसमयकाउत्किष्टअनंतरहो॥ इसही
 कथनकीअपेछातंसंसारविषेआठसमयअधिकछद्दमासमेंछद्दसेआ

शीपविषैकरुवेकीटोंटीवतमोक्षकामार्गनिरंतरचलेहे॥असीकहुनावतहे।
इसकास्वल्पकैयकारहे॥समाधान॥निरंतरमोष्यकैचलेजांहिइतनेमनुष्यकहा
एकआवलीकेअसंख्यातसमयहोंहे॥मनुष्यसवउनतीसअंकप्रमाणहे
जीतीनचारभागखीकहीहे॥यांतैकरुवेकीटोंटीकादृष्टांतकैयकारिसंभवे॥
इसचरचाकानिर्नेतीननेदकरिहे॥मोक्षमार्गकाअंतरा॥मोक्षमार्गकाअन
तर॥मोक्षजीवोंकीसंख्या॥तिसकाद्योग॥अंतरकैनेद॥एकजघनमएकउ
त्किष्ठाजघनअंतरसमया॥उत्किष्ठाअंतरमासदी॥तिसकाद्योग॥एकसमय
मोक्षमार्गचले॥इहेसमयनचलेइसजांतिएकसमयकैअंतरसोंमोक्षमार्गच
॥यहजघनअंतरजानना॥विरहकलकीअपेक्षाछद्दमासतांईकोईजी
वमोक्षनजाया॥यहुत्किष्ठाअंतरजानना॥इहेअनंतरकाद्योग॥समयकी

सुनानही॥ तेनें कहां सो जानां॥ निसका मुन्ना॥ बडहरिवंश विषेय हउ अर्थ हे समज
 नें केवासें उदाहरण करि कै लियो दो॥ परीक्षा करलें नी॥ तथाहि॥ बहुरिवंशाना॥
 प्रमाण योजन व्यास स्वावगा हविशे भवत॥ त्रिगुणं परि वेषेण॥ कित्रपये तन्निशि
 कं॥ ५१॥ सप्ताहमा विरोमा ग्रे राष्ट्र्य कविनी कृतं॥ मङ्गदाय मिदं पसंभ वद्वारा
 मिष्यते॥ ५२॥ एक कस्मिंस्ततो रोमिण प्रसष्टा तमुदते॥ यावता सस्यः कालः
 यत्संस्तुतिमान्न कृतं॥ ५३॥ अत्र संत्येयाष्टकोटीनां समये रोमावंडितं॥ अत्रैकं
 र्वकं तत्स्यात्समुद्धारसंज्ञिकं॥ ५४॥ कोटीकोटोदत्रो तेषां पल्यानां सागरे पम
 तास्यामर्द्धे नीयां मां दीपसागरसंमिति॥ ५५॥ सो धृष्टिगुणानोरजुस्तनुना तो ज
 यां सन्नाक॥ निष्पद्यंते तन्त्रयो लोकाः प्रसीयंते बुधेस्तया॥ ५६॥ पूर्वोक्तं अर्थ इत्ये
 कोमें जानना लिखे सो विस्तार वटा जाहो॥ ३॥ एतच्चाबाली समी॥ प्रश्ना अटाड

तिवामहनें जो जनचला जाइ ॥ असी चाल चलैं तैं प्रवै कसवस मयरा शिपरी होय ॥ त
वराज की एक मजल ऊई ॥ असी पचीस को डाको डिमजल होइ ॥ तव आ
होय ॥ इस संहारा ज्ञान ना ॥ इहा को ईक है ॥ पचीस को डाको डिमजल का आ
धारा जूक ह्य ॥ तिसैं सौ धियुणो सारा जूक ह्य ॥ पंचास को डाको डिमजल का सा
रा जूक ह्य ॥ तिसैं सौ नर ॥ पचीस को डाको डिमजल पत्ये के रा मप्रमाण स
वधी पस मुद्र ह्य ॥ तिसमस्त ए दिनागत आधे रा जूमें हैं ॥ यो तें प्रथम आधे रा जू का प्र
माण क ह्य ॥ सर्व पञ्चिम तथा उत्तर दिशि ए दिनागत सब संख्या सदी पस मुद्रों
को द्वित्रली जै ॥ तव सारा जू होय ॥ इस ही रा जू सों तीन सैं ततालीस रा जू
क का घना कार है ॥ असे लो क स्वंध के उवाचें की शक्ति तीर्थ कर प्रभु की कर स
है ॥ इहां को ईक है ॥ यह रा जू का उदाहरण कि सदी गंथ विषे

त्वेकाऋतोऽणालं जायते जादेवो जाच्छमासीगमणोऽराजुऋकोयद्वायपरिमा
 णं नित्रके हिमकारे मं जादेवता लावजा जनजाश्चै मं जाच्छदमची नें कागामन
 सोराज्जकाप्रमाणो दे॥ इमगाथा मं यद् अर्थे दे॥ सो कै सें दे॥ समाधान॥ यद् अर्थे
 दगं वरा म्नायकान दे॥ राज्जकाप्रमाण इस्स मं निपट द्दी घोडा कच्छा॥ राज्जका
 प्रमाण वडुत्त दे॥ सो एकाग्रमन सो सुरणो॥ आगामोत्त पे ता लो स अक्क प्रमाणाव
 वहाण पत्तकी रो मगात्रि दे॥ तिसरो भगात्रि के रो मन को ए के कत्ति च्च करि थो पे॥ ति
 ना क ए क रो म नि प र अ सं ष्ठा त त र स के स म य की रा त्रि धरो॥ के रि इ स स म य रा त्रि को
 ए क त्र करि द्या अ व इ हां वि चारो व डी रा त्रि इ द्द॥ इ स ही स म य रा त्रि सो क ल ना
 कै रो॥ प्रथम ही को इ देवता॥ पहल्ले स म य ला ष जो जन चले॥ ह्मरे स म य देव
 ला ष जो जन चले॥ तीरे स म य चार ला ष जो जन चले॥ इ स चो तिस म य स म य प्र

।सभाधान्॥ सर्वार्थसिद्धिसौकर्यपरवारहजो जन अष्टम दृश्येहै॥ तिसका विस्तार
 दित्तणोत्तराज्जुपुर्व पश्चिम विस्तारणत्तु॥ मुटाई जो जन छ
 भाग रूपै के वणो न तो निखत्रे के आकार तथा अर्द्धगोलाकार सि म
 दुष्पक्षेत्र के प्रमाण मध्य विषे आठ्योग न मोटी है॥ क्रम से सो मुटा
 नी कि नो र सो ले के नीचे तां ई॥ तिस के ऊपर द्वाय के समोटा घनो दधि नाम वात
 है॥ तिसै पैं एक को समोटा घन वात है॥ तिसै पंपंडरु से पच दत्तर धनुष मोटा
 नुवात है॥ तिस के अंत अन्न नंताने तसिद्ध है॥ अन्न नंत अन्न वावा धनुष से तांत तिहें
 है॥ तिन को त्रिकाल नमस्कार दोनु॥ अष्टक थन अर्ध निम चंडाचार्य दत्त त्रिलोक
 सार से जानना॥ ३७॥ चस्वा अनुर्नंता ली समी॥ ॥ अश्वा॥ प्राज्जुत्का प्रमाण असंघात
 जो जन न को है॥ तिस के प्रमाण की गाथा इस नही है॥ मघाहि॥ एव एव दम

येति प्रकृतिहे। अवाद्संश्रुतिप्रकृतिहे॥ धेनुप्रकृतिविवेकासंख्यानप्रकृ-
 तिहे। सोऽनेकआकारकौकरहे। औरएकअनपूर्वीप्रकृतिहे। सोअंतविषे
 पूर्वशरीरेकेआकारकानाआकरहे। मोक्षपर्यायविवेकसमस्तकर्मप्रकृतिसिका
 अज्ञावक्रवा॥ योतेंदेहकाआकारज्योक्तासोंहीरहा॥ इहांकोदेकहे॥ आन
 पूर्वीप्रकृतिताअर्थतौहमअरहीनांतिमुनाहे। यहअर्थकहोलीषोहे
 तइअंकर्मकांडुलीकावुं॥ 'पूर्वशरीराकारविनात्रायासोदयाप्रवसितदा
 नुपूर्वनाम॥ तथाचोक्तं हृदहरिवंश॥' इदयाश्चास्पसर्वोत्तमशरीराकृतिसेंद
 यन॥ चतुर्गत्यानुपूर्वततयागुलधृदिता॥ ३७॥ अरचाअवलीसमी॥ अग्नामीन
 लोककेअग्रदृष्टत्प्रमानामअक्षमष्टीमुनीहे। तिसैकैमध्यस्थत्राकारसि
 छसिलाहे। सोवहकैसेछत्रकेआकारहे॥ औरउसकास्वरूपक्योंकरहे॥

एक नही। कुत्ता नही॥ कर्म के आवरण रहित मोक्ष मोक्ष में देह प्रमाण को रहा॥
लोक प्रमाण को न कुत्ता॥ समाधान॥ यह जीव निश्चेकरि लोक प्रमाण है॥
क्ति की अपेक्षा सो है॥ समुदात विना कभी मत्त रूप होता न हो॥ या तो क
वरण सो अनादि संसार विषे छोटी बड़ी देह पाइ देह प्रमाण रहा॥ कर्म ही ने
छोटा बड़ा कीया मोक्ष विषे कर्म भाव नया॥ छोटा बड़ा को न कैर॥ या ह
चरम देह प्रमाण रहा॥ जिसे कोई बड़ा जव डथान की घरी कैर दे॥ बड़ा जवि
ना बड़ बड़ी जों की त्योरहि जा दे॥ तेसे न कर्म के अभावे देह का आकार जों का
तो ही रहै देह॥ प्रत्यक्ष कर्म पुछे संसार में॥ आत्म कर्म विषे को न से कर्म करि देह का
आकार हो दे॥ अर को न से कर्म सो बिन सै दे॥ तिस का उतरा ज्ञाना वरणा दि॥
आत्म कर्म विषे एक नाम कर्म है॥ तिस की ति राणे वें प्रकृति है॥ तिन में पेंसव

हैतहां लिखा है॥ इहां कोई कहै॥ सिद्ध परमेश्वर मंदह सो किंचो न कहै तेन पर
 केश तो चरम मंदह सो निबहै॥ तिनकी अपेक्षा किंचो न ताको कर संतै वै॥ तिस
 का उन्नर नख के शही की अपेक्षा चरम मंदह ते किंचो न है॥ प्रदशों की अपेक्षा तो
 चरम मंदह की समान है॥ फेरव हवोला॥ चरम मंदह की समान कह्यो कहै है॥ ति
 समान वत्त नख के समान एतने कहै तेर दोष वै विषे कहै है॥ प्रोक्त॥ काला दिलिधि
 मासाद्य न को न द्वाह दुर्मंद॥ समस्त काद्यष्टकं प्राप्य प्राग्देह परिमाण नृत्त॥
 ॥ १७ ॥ ही॥ उत्तरे ब्रज्या स्वभाव न जग न्मूर्धनि तिष्ठति॥ जीर्णैः ससृक्ता वंजगाद जगतं
 गुरुः॥ १८ ॥ गर्ह्यं च स्वसंती समी॥ ॥ प्रश्न॥ ॥ संसारैः सममुद्यात विना जीवच्छेद
 बड़ी देह के प्रमाण है॥ अनादिकाल सौं कर्मो धीन योही चला आया है॥ सा
 वरण दीप की नोडी॥ लोक प्रमाण अत्र संख्यात प्रदेही अत्र नीत्र वगाहना प्रमा

दुहे ॥ श्री एक पूर्वोक्त कथने में हित विचारना ॥ सव अरहंत नि के स्थान निषि
 द्या विद्या रक्षार्थे भी पद आचार जोग क्रिया कहो ॥ मेघ संबंधी चोरे के चार दृष्टांत दी
 नो ॥ तिस से अरहंत नि के चोरे क्रिया का नियम ड्रवा ॥ तो जहां कायो त्सर्ग सन दो
 ॥ सहां पद्या सन न दो ॥ पद्या सन दोय तहां कायो त्सर्ग सन न दो ॥ तो एक केवल
 नी न दो ॥ क्रिया रक्षी चारि का नियम कुंद कुंदाचार्य एक मेघ के दृष्टांत सो का
 बु के सो न र ह्या ॥ या ते इ स कथन में इहां से देह कर नान दो ॥ ३५ ॥ चरचा छती समी
 ॥ प्रश्न ॥ मो न्ह विषे किंचो न आकार चरमे देह सो कह्या ॥ किं छणा चरमे देहो
 वा ॥ इति वचनात् ॥ तिस किंचो न का कया स्व रूप हो ॥ समाधान ॥ जो कु छ प्र प्रमा
 एतें कमी दो ॥ इति स किंचो न क ह्यो ॥ सो सि छ पर्याय विषे चरमे देह के प्रमाणो सो
 कत्रा कर्म दो ॥ यद किंचो न का अर्थ इत्थ संगल सूत्र का एक अ पूर्व दी का

इहां तो हलनचलनरूपकाययोगकी क्रियाका प्रसंग है॥ कायोत्सर्गसन तथा
 पद्मासन एकाग्रयोगकी क्रियानदी॥ शुभरेत्र प्रविशाय मे कायोत्सर्गसन पद्मा
 सन इमं श्रोतुं नदी स्थिर है॥ अहो मित्र स्थिर को योग संज्ञा नदी॥ मनोवचन
 कायकी क्रिया को योग संज्ञा है॥ क्रिया सिद्धांत विषे हलनचलन रूप कहो है॥
 यो तें स्थिर रूप कायोत्सर्गसन तथा पद्मासन को योग संज्ञा कै संसं नैव॥ व्याग
 विनास योग गुण स्थान को हूं सौं कहो है॥ श्रोतुं कायोत्सर्गसन को॥ तथा पद्मा
 सन को हूं काय योग की क्रिया मे॥ गिनिये॥ तो ए दो नों श्रोतुं सन चो द हं गुण ता
 ने नो पाइये दें॥ उदांती काय योग की क्रिया हुई॥ ओ जोग नाम गुण स्थान को
 कर कहिये॥ तो तें एकाग्र संसोइ स श्रुति को विचारिये॥ भावाग्रंथो का भोग सा न
 करिये॥ मूल ग्रंथो का अत्रि प्राप्त मिलोइये॥ श्रोतुं श्रमी न हूं जै तो य द्द च र चा सु

योगक्रियाकासद्भावहै॥ परं बुझोहकेअभावतेंइच्छाविनासहजहीहोहै॥ दृष्टांत
कहेहै॥ स्त्रीणां मायाचारश्च॥ स्त्रीनकेमायाचारकीनाई॥ नानाप्रतिसेस्त्रीजनोकेकु
टिलाचारगूंथेविनाआपहीसोहोहै॥ तेंसेअरहंतनिकेयोगक्रियासहजहीहो
॥ आरभीइमचारोंक्रियाकेचारउदाहरणकहेहै॥ जेंसेमेघकेवरसनाथिर
होयहरनाचलनागाजनाएचारक्रियायत्रविनास्वभावहीकरिहोहै॥ तेंसेप्र
वोक्तचारोंक्रियाकेवलीकेंजाननी॥ ऊहेहोनेकादृष्टांतवरसना॥ वैवनेकाहु
छांतथिरहना॥ बिहारकादृष्टांतचलना॥ बिम्बधनिकादृष्टांतगरजना॥ एवा
गोंक्रियाकेचारदृष्टांतसमफने॥ अथद्वैतार्थप्रवचनसारकीतत्त्वदीपकीनामई
तथाब्रह्मदेवद्वैतटीकाद्वेषलिषाहै॥ इसप्रस्तावकोईपंडितप्रवोक्तस्थानक
अर्थकायोत्सर्गसनकहे॥ निषिद्धाकाअर्थपर्यासमकहे॥ निसकानुत्तरः॥

गमं ज्ञाहे॥ कोऽसंदेहकरे हलमचलनादि क्रिया इच्छा विना के सें होइ॥ तिसकास
 माधान दृष्टांत प्रवचन सार सिद्धांत विषे उक्त है॥ माया॥ वागारणसे झवि
 दाराममुक्वण सोहि एणिय दयो ते सि॥ अरहं ताणं कोले॥ मायाचार छ इच्छीण
 स्वां न निषिद्या विद्वाराः धर्मोपदेशाश्च नियतयस्तेषां अहंतां कोलमायाचार
 इव स्त्रीणां॥ अर्थो तेषां अहंतां काते॥ तिन अरहं तं निके कर्म के उदय काल वि
 षो॥ स्थान निषिद्या विद्वारा॥ स्थान कदि ये अहं स्वि ति उ जे होना॥ निषिद्या कदि
 ये बैचना॥ विद्वार कदि ये चलना॥ एतौ नौ काय की क्रिया॥ च धर्मोपदेश॥ वक्र
 रिदि व्यध नि करि धर्मोपदेशाय वचन की क्रिया॥ निश्च तजः॥ ये चारों योग क्रि
 या अत्र वन पदों है॥ ज्ञा बाध॥ काय वचन की क्रिया के वली के मुखता सो दो है स
 न की क्रिया मुख पन ही उपचार करि है॥ अस मो तिके॥ औ दयिक भाव नि करि

देपेद॥ नुवेवनमसोगान्द्रुद्रुद्रिः पेटपेद॥ आरद्रुपदेनक्ततप्राक्तनज्जादिपुगा
 गार्थेद॥ तदांभीयांक्त्वाद्द॥ अनाब्द॥ पञ्चअगापच्छुपमिद्युत्तंति॥ गान्त्रणाड
 सप्तसप्तत्रिचलेति॥ जलदोदयपानतद॥ अगायकसत्तमुरसंज्ञाऽनमंचरऽविमल
 केवली॥ कीदलनवलनक्रियाकिविचारंभंगक॥ आरभुद्रादरणंद॥ तस्मद्गुगाताने
 कान्नावसयोगेद॥ तदाप्रथमयोगक्वाच्यर्थनानावादिद्योनिद्रुत्तंननायमस्त्रि॥
 कायवाद्यनम्कर्मयोगः॥ अर्थ॥ कायवचनमममंवंधांनुद्वेदकर्मकद्वियक्रिया
 तिसैयोगसंज्ञाद्वेद॥ समदीयोगक्रियाकसंवंधसांमयोगगुणस्थानकदावेद॥ अ
 गुणस्थानतांद्रयोगक्रियाऽस्वाध्वर्वकंद॥ तिरदंगुणस्थानविषेऽस्वाविना
 दाद॥ यातेनवानेकंदलनचलनानि क्रियाविषेयत्रभाद॥ आरचाददंगुगा
 नेमनावचनकायकाग्रस्तिस्वेद॥ परद्रुद्रनर्कप्रिवात्तक्रियानदी॥ मातंअ

बलयेपेदभगैकैः अंतराबच्चले॥ सत्तुर्कं॥ तत्तत्तामरसुवने॥ श्रीमान्गुगदेवः॥ ॥ ॥ ॥
 द्रह्ममनवपंकजपुंजकांत॥ पर्युल्लसन्तखमयूर्वाश्रित्वा त्रिगमो॥ पादोपदानित्तव
 यत्रजिनेंद्रधत्ता॥ पद्यानित्तत्रविबुधाः परिकल्पयंति॥ २०२॥ ॥ इत्सकाऽत्रर्यपेदित
 हेमराजकतनायावचनिकोसैदेवना॥ तथात्रावाविषे॥ ह्वाहा॥ विगसितसुवर
 एकमलडुति॥ नवडुतिमिलिचमकांदि॥ बुमपदपदवीजहंधे॥ तदंस्तुखकमल
 स्वांदि॥ ॥ ॥ ॥ तथात्रोर्कं॥ एकीनावस्तवने॥ पदान्यासादपिचमुनतोयात्रयोतिनि
 लोकां॥ हेमात्रासोभवतिमुग्निः श्रीनिवासश्चपद्मः॥ सर्वोर्गणस्त्रातिभगावत्
 त्वयत्रार्थमनोमि॥ अथः किंततस्वयमदरद्वयन्तमाभमुपैति॥ इत्समेमंनोभगव
 नपावधरिगैः सोनिकेकमलेपेऽत्रं तरीषचलेयदत्रार्थश्रीवादिराजमुनिनेकद्या
 हा॥ तथावडेदरिबंशविषेनीकह्याहे॥ श्लाकः॥ पादपद्मजिनेद्रस्पसप्तपद्मेः प

रेकिज्ञानासनतथासोत्सासनमेंभेदकह्याहे॥ तिसकाउत्तर॥ सोलहेंतीर्थेकरनां
 तनाथजीकिज्ञानासनविषेअरुसोत्सासनमेंफेरहे॥ पूर्वोक्तइक्कीसतीर्थेकरकायो।
 तसर्गासनसोमुक्तकुवेतिनेमेंसांतिनाथजीकामोत्सासनकायोत्सर्गदीआया॥ और
 ज्ञानपद्यासनसोऽकुवाऽसप्रकारसोत्सासनअरुज्ञानासनमेंफेरहुवा॥ तदुक्तं
 गणसंपन्नांतितीर्थेकरपुत्राणा॥ ॥ अष्टःषष्टोपवासेनधवलेब्धवामीदिने॥
 पुष्पेमासिदिनस्मातेपत्यंकासनमास्थितः॥ ८॥ निर्गुणोनीरजोबीजविघ्नो
 बाधवः॥ किवलज्ञानसाम्राज्यश्रियंत्रांतामन्निश्रियत॥ ९॥ इन्द्रदेवोऽस्त्रोक्वि
 षेत्रांतिनाथजीकोज्ञानपद्यासनसोऽंकह्या॥ मोत्सासनअपरकायोत्सर्गकहि
 याफिरकोईअपरपुच्छेनगवानविहारेंकोनसिआसनसोऽंकरो॥ तिसकानुत्तर॥ जे
 सेंजंघाचारीसाधजयाकेवलपेंडुत्तरकेंआकाशमेंअंतरीषचलो॥ तेसेसोनेकेक

ज्ञानरूप अरहंत की समान वैभवे आसन आत्मस्वरूप का ध्यान करे ॥ इहां भी पद्मा
सन ही आया ॥ और अद्वैत में चेत्यालो विषे समो सराग बतर च नो दो ॥ तहां भी स
मस्त प्रतिमा पद्मासन ही कहो ॥ उहां भी बहो देत जानना ॥ अथा समान्प्रभुनी श्व
रभीषंडे उपदेस करे नही ॥ तो केवली काषंडे आसन उपदेस क्यो कर संजैव ॥ अ
पवावार हसना के जो बवे वरै हो ॥ केवलीषंडे आसन रहो ॥ यदनी बने नही ॥ यो ते
आगम प्रमाण युक्ति प्रमाण सम बसरण मध्ये केवली पद्मासन हो संजैव ॥ इहां को
ई और पूछै जे सम हार जे को कायो तसो सन सो ज्ञान दुवा होयो ॥ तो सम वसरण
में को न से आसन सो रहो ॥ तिसका उत्तर ॥ तीर्थ कर प्रभु के कायो तसर्गसन तथा
पद्मासन को ॥ इसे आसन में ज्ञान उपजै ॥ समो सरण मध्ये पद्मासन हो रहो ॥ फेर बो
ला ॥ ज्ञान के आसन में और उपदेस आसन में भेद बतया ॥ असे संकिस हो तीर्थ के

हरिबंसके हस्ते सगी विधे संसरी सरण मध्ये नक्षत्रमान निन बैच दो कहें हो त था हि ।
सिंघासनोपविष्ट संसेन याच बुरंग या ॥ श्री लोकोपि च संस्राप्तः प्रणामा मुजिने श्रुं सर
इत्यादि अने क जागे समो सरण मध्ये वे दो कहें हो ॥ एक और नी इस प्रसंग कान
दाहरण विचारण ॥ ज्ञानार्णव नाम ग्रास्त्र में पिंडुस्य ध्यान की पंच धारण विषे
पार्थनी धारण की साधारणी ति कहें हो ॥ तदां प्रथम अ प्रपे नें शरीर विषे मध्य लो क
की वरावर एकरा ज्ञ प्रमाण निः शब्द निस्तरंग मोती के दार तथा नुसार सम उजल

मुद्र थाये तिस के मध्य जं नक्षत्र समान ताये सु चर्ण के वर्ण पथराग मयी के
नमर कौं धिय अत्सं त ते जो मय सहस्र दल कमल को चिंत

॥ तिस विधे सु मेर मयी प्रज्ञा जाल करि प्रकासमान दिव्य कर्णिका विचोरा ॥

ऊपर तार काल के चं ड मा समान स्व त उन्नत सिंघासन की कल्पना कैये ॥ तिस पे

विषे देवना ॥ तथा हि ॥ उत्तरस्यांदिनि ॥ समुत्तराणामधो ॥ प्रतिहायो ह कोपे
 तं ॥ सुरनरसुनिहं दवं द्य ॥ मानं पर्य कस्त्वं ॥ तीर्थं करे देव रूपं दक्षि तं ॥ अस्मै ही वडे
 हरि वं च विषे गज कुमार के प्रसंगं मेने मनाथ स्वामी समो सराण विषे यद्वा सन
 दी कहे ॥ तथा हि ॥ विवाहारं भसमये ॥ मुदिता रिलया देवो जाते तिमयतिः प्रा
 णो बिहरारि कां तदा ॥ सममागस्योपनिष्टं तमप्रैरेव तिके विभुं ॥ वंदिभुं निर्ययु
 : सर्वे यादवान्कुमगला ॥ इहां कोर्षकं देगाने मनाथ तोप द्यासन दी सोमु
 क्त ऊचे हे ॥ याति समो सराण मे चैव कहे ॥ इंसदित सोय दनु दादुराण तोव भनही
 ॥ तिसका उक्त्य ॥ इदं यमपुराणे के डम मसगी विषं कायो ॥ सगी सन सो सुक्त ऊचे
 जुहं वर्धमा नस्वां नीविनी समो सराण मे वने कहे दो ॥ तथा हि ॥ अत्रो कपादयस्या
 धो विनिष्टः सिंह विष्टरो नानारत्न समुद्योत जने तं प्रसरा सने ॥ बु ॥ अस्मै ही च हनु

र्थेकरसंवंधीसामान्यकप्यनकीनाहे॥किसहोएकतीर्थेकरसंवंधीनही॥सहा
समोसरणेकेसधभागात्रिमेवलपीवकेउपरगंधकुटीहो॥तिसमैसिंघासनहो॥

सपरकमलहो॥ऊपरभगवान्अंतरीषपद्यासनविराजमानहोसोडक
हो॥मध्मप्रदेष्टातिमारीमयपीठतदांवनेगंधकुटीसिंघासनकमलसुहाव
नो॥तीनवअसिरसोन्नितत्रिभुवनमोदियोअंतरीषकमलासनप्रभुतदंसो
दयो॥तथाचिक्तंयत्रास्तिलकनामिमहाकाव्यो॥समोसरणामध्येअर्द्धस्वरूपणो॥
श्लोक॥देवंदेवसत्रासीनंपंचकल्पाणानायकं॥चतुस्त्रिंशद्रूपेणैतंशान्ति

नितो॥१॥औरजंदारेवतीराणीकीपरीच्यानिमित्तदुल्लवकनेमायामयी

री॥नहांनीतीर्थेकरकस्त्रपद्यासनहीसमोसरणकेमध्म
दयावा॥यहप्रसंगश्रीसमंततत्रद्राचार्यकृतरत्नकरंडकनामग्रंथकीटीका

नरायकेदयतेत्तायिकदानलानादिकीप्रवृत्तिअनेतवीर्यअव्यावाधसुषकर
 संभवो जेसंअनेतवीर्यकेवलज्ञानकरिसंभवे॥यहकथनसर्वार्थसिद्धिनामद
 कोसंजानना॥३४॥अस्वचामैतीश्वरी॥प्रश्ना॥समोसराणविवैतीर्थेकरकेवलकी
 नसेअसनरेह॥समाधान॥तीर्थेकरमहाराजसमोसराणविवेपयमासमहारेह
 यहनियमहे॥औरजेसंवज्जवियेनकेरीप्रतिमानिश्चलदोयात्रैसंनिश्चल
 हे॥तदुक्तं॥महानुराणे॥श्लोक॥नवकेवललखादिगणारध्वबनुष्टनअने
 द्यसंहतिर्वज्जुशिलोत्कीर्णइवाचलः॥१॥इसश्लोकमेंअहत्केवलीकास्वर
 पसमोसराणविवैअत्संननिश्चलवताया॥इहाकोईकहेअहत्केवलसमो
 सराणमभनिश्चदेयहेतोप्रमाणहे॥औरपद्यासमहारेह॥औरसामानियमकहा
 कीनाहे॥निसकानुसर॥प्रथममहोस्तुचंदपंडितनेपंचमंगलविवेधसर्वतो

वसरसीससौ॥२४॥सदावर्णनमात्रिणसत्वरःसर्वसंगतः॥चक्रवर्त्तीतममेत
त्रिःपरीत्यक्तनस्तुतिः॥२५॥महामहामहोपुर्जाभक्त्यानिर्वर्त्तयन्सुखं॥चञ्चुद
नादिमान्निर्वन्तमसेवता॥२६॥३२चरन्चात्तोतीसमी॥प्रश्नाचौवोसतीर्थे॥
करकिसकिमज्रासनसौमोदुक्त्वे॥समाधान॥आदिनाथा॥वासपुजपा॥२७
मनाथा॥३१एतीनमद्वाराजयद्रासनसौमुक्तुक्त्वे॥वाक्कीड्कीसतीर्थेकरकायो
सर्गासनसौमुक्तुक्त्वे॥इसमंजातिन्त्रिलोकप्रङ्गपिननामग्रंथविवेकह्याहो॥स्त
थाहि॥गाथा॥उसहोयवावासपुजो॥एमीपल्वंकवद्रयासिन्नाकाउस्सगणा
जणा॥सेसामुत्तिंसमावत्ता॥३३॥चरन्चौतीसमी॥प्रश्नाकेवलीकेप्रतिसम
यन्त्रसाक्षरणपुङ्गलवर्गणात्ररीरसोंसंवंधक्ते॥यदस्त्रयिकलान्जवासिद्
पर्यायविवेच्छायिकलान्नकाप्रसंगेकसैसंज्ञेव॥समाधान॥पंचप्रकारश्च

होयचलेजां हि। छाणां भक्तरं न हं॥ यद्दवातकौं करहे॥ समाधान॥ ॥ प्रथमं तोती
 र्धं करं केवली श्रं सं मे विहार करि कैं श्रौ वै॥ तव यद्वा स म त था का यो स र्गा स न
 यथा नियोग निश्चल होय ति ह्ये॥ दल न च ल न रूप का य स्या ग की क्रिया उप देश
 रूप व च न योग की क्रिया स व र दि जा ॥ वार ह स न्नो के जी व श्रं ज ली जो ड र हं॥ ६
 स न्नो ति उ त्कि ष प ने ए क मा स य र्थ त योग नि रो ध का री त म ह्य पु रा णा वि वे क ही
 हो॥ रिष न्न दे व जी जो ग नि रो ध की ना॥ त व चो द ह्य दि न त्तो ॥ अ र त जी ने नि रं त
 र सृ ज्जा करी॥ त द्वा द श॥ आ दि पु रा णे स ह च त्वा रिं श त्त मं य र्वा ति॥ स त्तो स त्फ ल स म्प्रा
 प्त्यो॥ वि ह र नू स्व गे णः स मं॥ च त्तु र्द श दि नो पे त॥ स द्द स्या द्ये न पु र्व कं॥ २॥ ल च के
 ला स मा सा द्य श्री सि ष्च त्ति ख रं त रं यो र्ण मा सी॥ दि ने यो र्ण नि र छेः स मु पा वि त्रा
 त॥ २॥ धे नो नृ ग व ता दि त्पे सं ह ते मु कु ली न व त॥ क रं वु जा स मा जा ता पु ष्णी

त्रिलोकप्रज्ञ। सिमेदो। तथा हि। जिमिति। सितरूपे। मूले। उपपन्नं। ज्ञाणे। केवलं। एणं। त्रिसहस्रं।
 दिनि। एणं। तंचेव। असाय। रुकंति। ३३॥ ब्रह्म। तेती। समी। ३४॥ समवसरणमेन्द्र
 पकवेदो। तिमकी। उच्चता। तथा। विस्तार। कपोदो। ३५॥ समाधिः॥ इतंके। प्रमाण। का। कष
 नसांप्रतउच्छिन्नोदो। तदुक्तं॥ दीहृत्तं। रुंदमाणं॥ ताणं। संपदपण। ननु। वयसो। भ्रम
 अभिसयुच्चणपदाहिणं। तमुकुबंति॥ एज्जो। रइसगा। यामेयं। दही। बह्या॥ भवमज

इतकादर्शनोदो। ज्ञात्रभवको। नदोया। ज्ञेसे। दो। दुरवंसमेदो। भवकुरा
 खयास्य॥ ज्ञात्वत्कृतास्ततोपेरा। याननमानपन्नंति। प्रज्ञावांधी। दृक्तेदृणाः
 ॥ इतसंज्ञो। कमेस्तएनके। दायजे। दजानने। ३३॥ चस्वाचोती। समी॥ प्रश्ना। को। ई। असे
 कदेदो। जवती। र्थे। करके। वलीकी। अशुच्छमासवाकीरेदो। तवमुमप्रएहि। जा
 य। समवसरणकी। स्वना। नरेदो। वारहसना। विघटजाहि। द्वेवता। प्रमुषपाद

वै॥ ब्राह्मसुनैः प्रापसौ दैषे॥ ब्राह्मसुनैः मनसो जानैः॥ तव हृदयस्य त्वकीनां ईदं दीपानज्ज
 वा॥ सौ न संभवे॥ केवलं प्रभु केन्द्रं प्रियतां सवै॥ परं तु ईदं प्रियतमज्ञानमनहो ज्ञो
 न केन्द्रं नृपानमनुष्मगुणथे सो प्रगाढं देव स्वभाव रूप ईदं वे॥ ताते अती प्रिय
 ज्ञानसो सवजाने॥ अती प्रियदर्शनसो सवदेवै॥ तिनके अगै॥ ईदं प्रियज्ञाभव
 लं देवा सूर्य मंडल के समीप दीप के प्रकास की नाई॥ ३॥ अस्वावृत्ती समी॥ प्र
 भु॥ तीर्थं कर के वली के अत्राव प्राप्त दार्य विषय अत्रो क वृक्ष है॥ सो को दिका ह
 द है॥ समधान॥ जिन दक्ष के नीचें तीर्थं कर प्रभु को केवल ज्ञान उपजै॥ सो ईद
 व स सो सगण विषे अत्रो क वृक्ष है॥ अत्रादि माथ जो को वट वृक्ष नीचे ज्ञान
 देवा॥ अजित नाथ जी को सप्तपर्ण के वृक्ष तलें ज्ञान देवा॥ इत्था दिचावी सती॥
 र्णं कर के ज्ञान वृक्ष है॥ ते ईदो क निवारण ते अत्रो क वृक्ष जानै॥ यद कथन

नैऽनविषेपदार्थकाजवसृष्टसंबंधहोइ॥ तबव्यंजनावग्रहतेदोयतीनसमया
अर्थकाप्रगटग्रहणनही॥ कोरसरावैपैजलविंडकीनांइ॥ पीछेअर्थावग्रहसौ
प्रगटग्रहनहोइ॥ मनत्रोरनेत्रइंइ॥ इतंदोनोंकेंअर्थावग्रहहीहोइ॥ जोतेंइतनेकें
पदार्थकेसृष्टसंबंधविनाहूरहीतेंज्ञानहोइ॥ व्यंजनमस्यावग्रहः नबद्धरनिदि
य भा॥ इतिवक्तव्यात्॥ इसदेतसोंस्पर्शनादिचारोंइंद्रियनकेव्यंजनावग्रहइ
ग्रहदोनोहो॥ मनकेत्रोरनेत्रइयकेएकअर्थावग्रहजानना॥ इसप्रकार
अपेछासोंस्पर्शनादिचारोंइंद्रियविवेकयोगपचिष्यग्रहणारूपगणमुद्र
लीकहो॥ मनेंइनेत्रइ॥ विवेकआत्मीकगुणहो॥ यतेंयहवातसिद्धइइदिष।
नाजाननाएघरगुणजीवकेहो॥ बाकीस्वर्सग्रहणादिगुणमुद्रफलकेहो॥ ओ
सेनदोयनोकेवलीकि॥ श्रीतात्त्वकीबाधाहोइ॥ रसास्वादक्षोयसुगंधडुर्गंधआ

इसमंतिपदारथकाग्रहणमहीहोहो॥इमंकैपदारथकेसम्राधिनाहर्हीतैग्रहा
 होहोनेत्रकजलवत्॥यातेइमंकैअष्टसंबंधजनहोमिनेत्रिप्रियत्रपनेस्वामही
 तेरुक्वर्णाश्रमिकोदेवैहो॥स्मर्त्तनतिष्ठानाशिकाकारोप्रियकेविषयकीनार
 अग्निनेत्रसोंबंधनहीहोता॥अमेहोसमअपमेस्वामरहहो॥घटघटादिपर
 र्थकोहरिहीमैजामेहो॥घटघटादिकाप्रवेत्रामनविषेनचीहोहोन्त्रारसूत्र
 जीमैभीमतिज्ञानकेअधिकारविषेअप्रब्रह्मादिच्यारमेदकेदेहो॥सहस्र
 ब्रह्मनामप्रथमही॥अप्रपूर्वपदारथकेकिंचित्तग्रहणाकाहो॥तिसकेदारथमेद
 एकअर्थोवग्रहसूजाविंजनावग्रहो॥प्रगतअब्रह्महोयतिसेअर्थोवग्रह
 कहियो॥अरुजोअप्रगतहो॥तिसैव्यंजनावग्रहकहियो॥सोसम्राजनिक्रा
 नात्रिकाकानइनचारैइप्रियनकेव्यंजनानग्रहपूर्वकअर्थोवग्रहहोहेजा

मादिचारों इंद्रियन विषे सुकुल का गुण दैय ह निन्तता को कर जो नीगई ॥ निसक
भुत्तरा ॥ पदार्थ अरु इंद्रिय इन दो नौ के परस्पर संबंध गुण से तय दार्थ ग्रहण रूप ज्ञान
होइ सो भ्यां न दोय प्रकार हो ॥ एक स्पष्ट संबंध ज्ञान हो ॥ एक अस्पष्ट संबंध ज्ञान हो ॥
जो ज्ञान पदार्थ के स्पर्श सो होइ ॥ तिसे स्पष्ट संबंध ज्ञान कहिये ॥ अरु जो पदार्थ के
स्पर्श विना ॥ हरि ही तें गपान होय ॥ तिसे अस्पष्ट संबंध ज्ञान कहिये ॥ स्पर्श ना
नासिका कर्ण इन चारों इंद्रियन सो पदार्थ के स्पर्श विना ॥ ज्ञान न हो होइ ॥ स्प
न ही सी तो ह्मादि का गुहण तव करै हो ॥ तव ता ती शरी माल अा इ लगे हो ॥ ती अर
तव अा स्वादि हो ॥ जव मिष्टाम्नादि रस का स्पर्श करै हो ॥ नासिका त
धर्ग धनासि का भे प्रवे च करै हो ॥ कान तव सुने हो ॥ जव अाष्ट कान भे अावे
हो ॥ ता सें इन चारों इंद्रियन के स्पष्ट संबंध ज्ञान हो ॥ नित्रे दो अोर सने ही इन

च० स०

३५

विषय का गुण है देय ह्य गुण सामर्थ्य रूप गुण किस का है जीव का कहें तो
मुक्त जीव के व ता बो पु ऊ ल का कहें तो मृत के व ता बो ॥ समाधान ॥ जीव वस्तु तो
अपने दर्शन ज्ञान रूप गुण योगमय है ॥ जीवो उन गुणमय ॥ इति मन्वाना ॥ यो तं जीव
के तो मुख्य गुण दोय ही है ॥ देखना ज्ञान नां सो विना च अस्व विषे नें त्रेन्द्रिय सों देखे
है ॥ मन इंद्रिय सों जाने है ॥ और स्वभाव अस्व विषे केवल दर्शन सों देखे ॥ के व
ल ज्ञान सों जाने तिस ते सें साग विषे नें त्रेन्द्रिय तया मन दो नो विषे सुबो गप विषय
गुण रूप गुण दो सो जीव का है ॥ वा की स्पन्न निद्रा आदि ॥ चारों इंद्रिय विषे सुयो
ग्य विषय गुण रूप गुण दो सो पु ऊ ल का है ॥ अब मूल नवा ला बो ल ॥ तो मृत के म
क्यों न कहें ॥ तिस का उत्तर ॥ मृत के में कहां सो दोय देखें नें जान नें वा ला तो ज्ञान
रहा ॥ फिर पूछी ॥ नेत्र और मन इन दोय इंद्रिय न विषे जीव का गुण है ॥ वा की स्पन्न

अधमागधिकाकारनाथापरिणताखिलः। त्रिजगज्जनतामेत्रीमंपादनगणोज्जुतः॥॥ इहं को ईषुं वै॥ और संदेह करे॥ आव प्रात दार्य मे न गवानको द्विषध निमेष
की गरज समांन निरक्षरी है सो अर्धमागधी रूप के गों कर रहे है॥ तिसका उत्तरा। जाव
काल धुनि श्री ता ज न के कर्ण प्रे द शा पर्यंत पोहूंचे नही॥ तावत्काल निरक्षरी है। श्री
वै स क ल नाथा॥ रूप हों नें को योग्य अर्धमागधी होय परिणवै है॥ २९॥ चरचाती स
मी॥ प्रश्ना॥ समवसरण में केवली कह्यो तिसैं हैं॥ समाधाना॥ धुजा स्वान के अगोसद
उपर मंदोदयनाम मंडप है॥ तिसके परिवार मंडप विधेति है द्योद्वरि वं
त्रा विधे कथन है॥ ३०॥ चरचाती समी॥ प्रश्ना॥ स्पशने द्री गोता ह्मा दिस्य न्री का ग्रह
कर है॥ रसनारस ग्रहा का कर है॥ नासिका गंध को ग्रह है॥ कर्णे द्री त्राष्ट को ग्रह
है॥ नेत्रे द्री रूप देव है॥ मने प्री सब जानै है॥ एमन समेत छह इंद्रा अपने सुयोग्य

च० स०
॥ ३५ ॥

विषय प्रिय हित वचन कहै ॥ सो गृह स्थाश्रम विषय तीर्थ कर के वचन को प्रसं
सां कहै ॥ ओर स्वउदह देव कृत अतिशय में सर्वोर्द्ध मागधी भाषा हो ॥ सो सब को
हित करि अर्द्ध मागधी नाम भाषा रूप दे ॥ अगवंत की निरक्षरी धुनि मक्कल भाष
ा रूप हो ने को योग्य दे ॥ सो मागध नाम देवता के समीप भाव सौ ॥ अर्द्ध मागधी रू
प हो देया ही भाषा समो सरणा वन्नी सब जीव सम के दो ॥ यो ते देव कृत अतिशय
मै गिनी अर्द्ध मागधी भाषा जाननी ॥ इहां को ई पृच्छे ॥ अर्द्ध मागधी भाषा क्या कहा
वै ॥ तिसका उत्तर ॥ सात जात की प्राकृत भाषा ॥ सो एक अर्द्ध मागधी भाषा है ॥ तथा हि
॥ श्लोक ॥ मागधा च तिका प्राच्या सोरसे ए पर्व मागधी ॥ बाल्ही की दाहिणा समा च भा
षाः सप्त प्रकीर्तिताः ॥ ओर को ई पृच्छे ॥ समो सरण में सब ही अर्द्ध मागधी भाषा
सम के यद्वत् कहा कहै है ॥ तिसका उत्तर ॥ आदि पुराण मध्ये कहा है ॥ श्लोक ॥

॥ ३५ ॥

शेति कुवणणे हेण मसं मि ॥ २७ ॥ चस्वा अवा र्इ समी ॥ प्रश्ना ॥ तीर्थं कर प्रचु के दशा ज
त्मा ति श्राय मे अने न वल कत्था ॥ ता क रि मा हा रा ज लो क त्कं ध के उ वा वे ने को
स्मर्य हे ॥ कि व ल ज्ञां ने के स्म य अ ने त वी र्य कत्था इ ने दो नो मे वि त्रे ष क्वा ॥ स मा
धा व ॥ ज न्मा ति श्रा य वि षे अ ने न त व ल दे ह न ल की अ ये च्छा सो हे ॥ के व ल ज्ञा न
की वा र अ ने त श्र ति ज्ञां न नो ॥ स दु र्क त्वा दि दु र्ग मं प त न ज्ञे ॥ ज्ञे द क ॥ वि श्व
तो पी श्रा य से न स्तः अ म त्क मे ॥ अ ने न त वी र्य ता श्र त्ते ॥ स्त न्मा हा त्मं प रि स्फु टं ॥
रु ॥ च र द्य गु नं ती स मी ॥ प्रश्ना ॥ तीर्थं कर के व लो के च्छ या ली स गु ण वि य य वा नो का
प्र सं ग ती न वा र आ या ॥ प्र थ म ज न्मा ति श्रा य वि षे प्रि या हि त व च न आ ण फि र दे व
कृ तै चो द ह अ ति श्रा य मे स क लार्ध मा ग धा आ वा आ र्इ फि र आ व श्रा त ह्य र्ये वि
द्वि त्म ध नि क ह्यो ॥ ति ने मे वि त्रे ष क्वा ॥ स मा धा न ॥ प्र थ म द श्रा स ह्नु अ ति श्रा य

भवानुदुप्रिषत्परवति सोभवत् ॥ १ ॥ अग्नि रुचिश्चुचिश्चुक्कलोहितं ॥ सुरभि संपरं विर
 जौ निजं वसुः ॥ तव शिष्यमतिविस्मयं यत् ॥ यदपि वाग्मनीयमीहितौ इत्थादिच्छा
 गमोक्तं अर्थकोमिलायै कं यथावत् अज्ञानं करमानुचितं दे ॥ २ ॥ चरसा ह्ववीस
 मी ॥ प्रश्ना ॥ संहननं कौनजोगो दे ॥ और कौनजोगो नही ॥ ससाधान ॥ सुरा ॥ नर
 करे कैंदी दुकारमान ॥ आहारक ॥ चौदहांगुण स्थां नर्द ॥ न छह जागें संहनन न
 ही ॥ वाकी और जागें संहनन दे ॥ ३ ॥ चरसा सनर्द्धिसमी ॥ छिन्ना ॥ तीर्थे करके वली
 के वयाली सगुण कहे ॥ और सोमां नपु के वली के कितने होहि ॥ समाधान ॥ तीर्थे
 करके वली के तथा सामान्य के वली के अत्र नंत चतुष्टय तो समा न दे ॥ और गुण
 को र्त्तन होय ॥ माहितें त्रिलोक प्रज्ञाति विषे तीर्थे करके वली के वयाली सहगु
 ण कहे ॥ तथा हि चउतीसाति संये दे ॥ अष्टपदा पांडहर संजुंते ॥ मोख करे तिष्ठय

निषेधनजाननाकुधातनकानिषेधे॥ और जो इस कथनमें संदेह कीजितो तो ती
र्थकरके बलोकें छयालीस गणकहे हें॥ छायाला और हंता॥ तिन छयालीस गणवि
षेक्षीरवर्णोरुधिरवज्ररिषमनागचसंदननेहो॥ संहनननांवअस्थिकोहो॥ इना
वनाछयालीस गणको जो डकैसैं मिलो॥ या तें परमोदारीकसैं सातकुधातनह
॥ इतनें परनीचि तमें नअत्रावै तो अदिपुगणके पच्चीसवै पर्वविषे भगवंतके
समवर्णोंमें इंद्रने सुति कीनीहे तहंदेखना॥ तया॥ अश्वेदमलमा
नातिपुगंधशुभ्रलक्षण॥ सुसंस्थानमस्तासुगवधुर्वज्रस्विरंतवा॥ इस श्लोकमें अ
स्तास्तक॥ इसपदकीरिचीरवर्णोरुधिरकहा॥ तथा श्रीसमें तनद्राचार्यकृतद्व
हस्त्वर्थं॥ विषे भूमिमुद्यतस्यामिकेस्तवनमें श्रीअसें दीकह्याहो॥ तथाहि॥
अधिगतिमुनिमुद्यतस्थितिमुनिद्वर्षे तो मुनिमुद्यतानघः मुनिपरषदि

परमोदारिकत्रारीरविषैत्रोरकेवलीकेपरमोदारिकविषैफेरकयाङ्कवा॥अथवा
 तीर्थेकरहीकेवलीहोयतवक्यावित्राषदोय॥तिसकानुत्तरहारिदिगणस्नानके
 अंतसवहीकासरीरवादरनिगोदरहितहोय॥यदनिमयमदीहो॥तदुक्तं गोमहसा
 रोमसा॥युदवीआदिचउरुहं॥केवलित्राद्वारद्वणिरयंग॥अपदिनिदाणिगो
 दहिपदिवदंगादवेसमा॥इसगाथासंआवजोगेवादरनिगोदकाभिषेधकी॥
 या॥योतेंकेवलीकेपरमोदारिकत्रारीरविषैस्वतस्तुधिरस्वतमांसवताया॥आ
 रज्ञानार्णवनामआस्त्रविषैकेवलीकात्रारीरसरुधिरादिधातवर्जितकल्याण
 सोवदयद्वकथनकैसंमिला॥तथाहि॥सप्तधातुविनिर्मुक्तंमादलम्बसीकटा
 क्षिप्तं॥अर्नतमद्विमाधारंसंयोगापरमेश्वरं॥इसश्लोककेअर्थसोंकेवली
 कात्रारीरसातधातरहितहै॥तिसकानुत्तर॥केवलीकेपरमोदारिकमैधातनका

ज्ञो॥ तत्तद्भाहि॥ तदस्य रुस्वेगात्रं परमो दारिका कथमहा सुदय निः श्रेयः सार्थानाम्
 लवकराणां॥ तैरुचंगुणानां॥ परिपूर्णं दारिका वका कल्पा॥ तिमका स्वस्वतथा ति
 सकी साषिर्कुं दकुं दवाचार्य कृतज्ञानपाङ्कजं मे देवनी॥ तत्रादि॥ तिरहं मे गुणवाणे स
 जाये केवलिये होय अरहं तो॥ चनुती स अस्सय गुणा हो॥ सिद्धतस्स वपडिदारा॥ य
 एतय भवेप्यं चिदिय जीववाणे सुहोय चनु दस्स मे॥ एदगुणा गुणजुने॥ गुणमास्त्य
 देवे अस्तु हो॥ अजर मरण डर कर हियं॥ आदास ए दार वज्जियं विमलं॥ सिंहाणा लव
 लेस ज्ञा ए छिडु गं छा इ हो सो या॥ अदयाणा पज्जती॥ अच स हस्सा य न्न कणा भन
 या॥ गोखीर संख धवलो मं सं रुहिं स्स च स च्वेगे॥ एर स गेणे हि जु न्नं॥ अस्स य वं तं

॥ अरा लियं च ददं॥ एण य वो अरु ह्मु रु सस्सा॥ पय द्द गा था न विषे
 अर्थ तीर्थे कर के वली अपे न्ना सौ जा न ना॥ इहां को ई प्रे छें ४॥ गृह स्व तीर्थे कर के

रिकत्रारिका होयने दएक औ दारिक॥ ज्ञापरमो दारिक॥ ज्ञापरम रुधिरादिमातो
 धांतप्रपवित्र हो॥ जिमका स्पर्शरसवर्णांग गिलान उपजावै॥ अस्त्रदादि दयाव
 पाद्रयो॥ रोगसौं कलें कित होय दसादि औ दारिक सरीर केल छन जानने॥ आरज
 हांर सरुधिराधिसप्तधा उउधत स्सून हो॥ दि॥ यवित्र हो॥ दि॥ सुगंध सुवर्ण हो॥ दि॥
 रोगाप्रस्त्रे दसा सामल कर्ण मलनेनेत्र मलषवार॥ दसादि को द्रदोष नयाइये॥
 एपरमो दारिक त्रारिक केल छन जानने॥ सो गृह स्त्रावासमें तीर्थे कर विना औ
 रकान होया कि वल ज्ञान ऊवें सब का होया॥ यद नियम है॥ उल्लिख औ दारिक
 कहो॥ आने परमो दारिक कहो॥ इहां को इच्छें॥ तीर्थे कर का परमो दारिक त्रारी
 र गृह स्त्रपदें होया॥ यह बात कहें कहो॥ तिसका उत्तर॥ इसक थन की साधि
 आदि पुराण मध्ये पंद्रह पर्व विवें स्वामि के कुमार काल वर्णन प्रसंगमें देखली

पुकरसहे॥ रुधरकीउपधातपित्तप्रकोपेत्तंअधोर्धवाहीरक्तहे॥ मांसकीउपधात
वसोहे॥ मेदनामधातकीउपधातस्वेदहे॥ ४॥ अग्रास्थिकीउपधातदंतहे॥ ५॥ मज्जा
कीउपधातकेअहोर्ध्व॥ शुक्रनामधातुओजहे॥ सोअष्टविंशप्रमाणा
सचिक्कनश्रेष्ठाकारवीर्यधातकासारहे॥ उसकेअस्तित्वसोजीवकअस्तित्व
हो॥ उसकेदससोमरणहोहे॥ पृच्छीकेअंडोंकेदेहकीस्थितिकोंतथावृद्धिकोंव
हीकारणहो॥ इहांकोईपृच्छे॥ अं डांकोपृच्छीसेवैवें॥ इसगरमीकानाबहमअं
जसुनाहो॥ तिसकाउत्तर॥ कुंजनामपृच्छीअसेहो॥ अंडिधरकेफेरअंडोंसोंमिले
नहीयहअंजादारतहांक्योंकरिसंतवो॥ ५॥ वृद्धजातिकेंलेपकाआहारदेपा
नीलगेयहीलेप॥ यहछहप्रकारकीआहारकास्वरूपज्ञानना॥ २४॥ चस्वापुत्री
मयी॥ प्रश्न॥ परमौदारिकआरीरकाक्या स्वस्वपेटे समाधान ओहा

नो कर्मका आहार बतया ॥ कोइ कहै ॥ अनाहार क काल विना तो नो कर्मका
 प्रदण तो समस्त संसारी जीवन के है ॥ केवली के कौन सा चित्रा धै ॥ तिसका उत्त
 रा केवली के लाना त राय कर्म के दये तें ॥ अनंत लान प्रगाठ डूबाया तें अपूर्व अ
 साधारण पुद्गल का प्रति समय केवली की देह से संबंध हो है ॥ यही नो कर्मो हार
 केवली के शरीर की स्थिति के कारण है और नही ॥ इस से हेतु से केवली के नो कर्म ही
 का आहार क द्या ॥ ए नार की न के नर का युनां म कर्म का नुदये देह की स्थिति को
 कारण है ॥ तो तेइ मन के कर्म ही का आहार क ह्या ॥ २ ॥ हेवता मन ही सो त स हो है सा
 तेइ न के मां न सी आहार क ह्या ॥ ३ ॥ मनुष्य त था तिर्य च के कवला हार प्रसिद्ध हो है
 अथ ही न के अं डे विषे उडा हार है ॥ सो उज कया क हो वै ॥ आरोग विषयर सा हि स
 मधातु है ॥ तिन ही के वि कारण से उतपन्न सा त उ प धात है ॥ अथ मर स की उ प धात तत्र

मौदारिकदेहकाधराहै॥सोदेहजातिमैं॥अधौदारिकदेहवैक्रियकृतया॥आ
हारकीजातिनही॥सातकुक्षतसोंरहितउद्धारिकदेह॥सातैपरमौदारिकसंज्ञा
जोगनी॥तडुक्कं॥ज्ञानप्रान्तमध्येश्रीकुंदकुंददेवै॥उगालियंचदच्चोणाय
अरुदुखुरुससा॥इतिवचनात्तत्तदायहसंदेह॥तिसत्रोदारिकदेहकीस्त्रि
कवलाहारविना॥दिशोनकोडशर्वतांडकोदेसोहोय॥समाधान॥आ
दुखैहो॥मोकर्माद्वार॥कर्महास॥कवलान्त्राहार॥लिपाहार॥अनुज्ञाहार॥
नसीआहारदीयहछप्रकारकाआहारयासांसंभवदेहकीस्त्रितिकोंकारण
है॥गाथा॥णोकम्मकम्महारो॥कवलमोहारियलेवत्ताहारो॥उज्जमणोवियमक
मसो॥आहारोच्छ्विदोत्तणिऊ॥णोकम्मंतिच्छयेरो॥कम्मणारेयमाणसोअस
रो॥णरमसुकवलाहारो॥परकीउजाणोलेउ॥अप्रमहीतीर्थेकरकेवलीके

कानुदाहरणसमकना॥ विशेष इतना तीर्थं कर प्रकृति ध्रुवो दर्श है॥ तिसरें वि
 पाको दया विना॥ प्रदेसो दयै तें जात न रहै॥ अथ वसुधै॥ आको तीर्थं कर होय ही हो
 य॥ तत्प्रव होय तथा तीर्थें भव होय॥ और आयु बंध विना॥ चारों गति का बंध वि
 पाको दय विना प्रदेसो दयै तें विगय कें मुक्त होय॥ इस प्रकार आयु विना सात
 कर्मों विषे प्रदेसो दय और विपाको दय जानना॥ आयु कर्म विषे प्रदेसो दय न
 ही होतै॥ विपाको दय का ही नियम है॥ इस भांति प्रदेसो दय॥ विपाको दय का
 स्वरूप है॥ तेरे हे गुण वानें वयाली सप्रकृति कानु दय है॥ तिनमें के ती क का प्र
 देसो दय है॥ और के ती क का विपाको दय है॥ और चो दह गुण वानें॥ बह सर
 प्रकृति का प्रदेसो दय है॥ तेरे दस प्रकृति का विपाको दय है॥ सोई अंत के दो
 य समया विषे तिन का क्षय जानना॥ न३॥ चरचा चो बीस मी॥ प्र३॥ केवली पर

है॥ सुदयमें नही॥ सुदय तो संज्वलन को है॥ तिसमें तें आतक पाय का जो दहरा है॥ तिस
सुदय को प्रदे सो दय संज्ञा है॥ और छत्तीस प्रकृति में॥ एकें दिया दिप्रकृति ३॥
नांम कर्म की नो गर्दा ते नी प्रदे नो दय दी करि षिरी॥ जा ते एं कें दिया दिप्रकृ
विपा को दय तो॥ अप्रपनी अप्रपनी गति विवै हो है॥ और स्त्री नवें भंगण स्खान विवै प्र
कृति न का दय है॥ सो प्रदे नो दय ते जानना॥ अथ वा तीर्थं कर प्रकृति का वंध
हो है॥ सब अंतः कोटा कोटी मात्र स्थिति लीये हो है॥ यदि नियम है॥ तिस का आ
वाधा काल अंत मुहूर्त मात्र है॥ तिस पीछें॥ प्रदे सो दय ते भिरम लगे॥ उत्किष्ट ते न
न न पर्यंत असंख्यात काल तां ई चला जाय॥ और यद प्रकृति ध्रुव वंध है॥ तिस ह
धी स्थिति मां हि॥ असंख्याति वर्ष की स्थिति और प्रदे सो दय होय को प्रदे
॥ इस मांति निरंतर स्वरण निरंतर बंध चला जा है॥ यद न

मसकैतौचौदेहसात्ताकाउदयप्रगतहोहै॥औरजोसाताकेउदयकीबिबिध
 करौनोअनंतचतुष्टयविराजमानकेवैकुण्ठसात्ताकाउदेकुण्ठकराणसमर्थन
 ही॥जुयचारमात्रहै॥३३॥अस्वोत्तवीसमी॥प्रश्न॥तेरहेचोदेहगुणवांणोकेतीए
 कपापप्रकृतिसत्ताविवेहो॥उदेविनांकिसहीप्रकृतिकाक्षयहोतानहो॥सो
 मत्तातोसंनैव॥उदेक्योंकरसंभवे॥समाधान॥कर्मोकानुदयदोयप्रकारहै॥
 एकरसोदयाहसरअनुक्षरसोदयकाहसरानांचविपाकोदयहै॥अनुदयक
 ाहसरानांचप्रदेसोदयहै॥जिसिप्रकृतिकोजेसारसंदे॥तिसाप्रगटरसंदेकरि
 विरै॥तैसेविपाकोदयकहिये॥औरविनाहीरसदीयेंजोषिरैतिसेप्रदेआद
 यकहिये॥तिसकाउत्तर॥नवंगुणवांनैछत्तीसप्रकृतिकाक्षयहोहो॥सोउद
 यहोयकैहोहो॥तहांअप्रसाध्यानी॥प्रसाध्यानी॥एवंकषाय॥सत्तविषे

नें एक जीव साता असाता विषें किसी एक की उदय विच्छिन्न करे। तो पूर्वोक्त
वयाली सप्रच्छन्ति में तीसकी उदय विच्छन्न होय चाकी नारह की उदय विच्छि
दह होय। और नाना जीव की अपेक्षा तेरे गुणवां नें साता असाता विषय किसे
की विच्छिन्न न करे। तो उन तीस प्रच्छन्ति की। उदय विच्छिन्न दह होय। चाकी तेरे
दह की चोदह गुणवां नें। उदय विच्छिन्न होय। यह कथन गोगामह सार के उत्तरार्द्ध
विषय है। दहवां कोई और छह। तेरे गुणवां नें एक जीव के। साता असाता
उदय कल्याण। उदय विच्छिन्न दो नों में किसी एक की कच्ची। जिन असाता की उद
य विच्छिन्न की नीं होय। तिसके चोदह गुणवां नें साता का उदय संभवे।
न साता की उदय विच्छन्न करी। तिसके चोदह विषय असाता का उदय क्या संभ
वे। तिसका उत्तर। जो जीव तेरे गुणवां नें असाता के उदय की विच्छिन्न करे।

नीवंधरूपमहो॥ अन्नं तगुणादीनां त्रिक्रिओरनिःसहाय॥ अव्यक्तमुदररूपेह
 सोऽनुत्कृष्टविशुद्धतासु॥ अन्नं तगुणं अन्नं भागलीएव ह्यमानं ज्ञेयसाताविदम
 १॥ निःसस्पर्शपरिणवैहो॥ अन्नं असासाताकाठुदैः असासारूपेहोयपरिणवै॥
 अस्मिन् न कदाजात् ॥ इत्थं प्रकृतिरस्तेनैव पूर्वोक्तचुद्धादिपरीसाकावाधाकेवली
 केन नही ॥ सत्त्वजीमैकही देहो साकाराणां विषे कार्यका उपचारदेहो ॥ मुख्यतासंति
 मका अज्ञावही ज्ञानमा ॥ अयोगकेवलिके वारहप्रकृति कभने देहो ॥ एकतर
 वेदनी १ मनुष्यगति २ पंचेन्द्रियत्व ३ सुप्तग ४ त्रस ५ वादर ६ पर्याप्त ७ आदे
 य ८ यज्ञात्कीर्ति ९ तीर्थकरत्व १० मनुष्यासु ११ उच्चगोत्रात् १२ इहं कोर्द्धपुत्रा ॥ तिर
 देगुणाद्यो नं साता असाता दोनौ कानुदेपादये ॥ चोदे देह एव जीव के दोनौ सौ ॥ ए
 कही कानुदेपादौ ज्ञौ ॥ नाना जीवकी अपेक्षा दोनौ का पादयो ॥ संयोगगुणां

ही देहे ॥ ना बाध ॥ जो कर्म ज घन्य मधनु कि ह स्वि ति लीये नीच ले गुण स्व नो नो दे
धे ॥ सो यथा योग अप ने न आवाधा काल के अंतर सो नु दे आ वे हो ॥ ज व सां ई क
म वं ध नु दे नु दी र्णा को योग न दे य त व तां ई आ वा धा काल क ह्यो ॥ जो को डा
को डी सागर प्र मा ण क र्म की स्वि ति वं ध हो या तो नु स का आ वा धा काल सो व
र स का क ह्यो हो ॥ अ से स व सा त क र्मो की स्वि ति के अ नु सार ॥ आ वा धा काल ज
न ना ॥ आ यु क र्म को आ वा धा काल ॥ वं ध काल ते नो पा यु दे ॥ इ हां के व ली के क
षाय के अ स्ता व सो ॥ स्वि त वं ध वि ना स म य स्था र्थी वं ध दे ॥ ति स नै आ वा धा का
ल को ह्यो का हो या ॥ यो ति य ह वं ध ह्म रे ही स म य नु द या त्म क दे ॥ ति न त त्र अ सा
तो द यः सा त स्व त्पु ण प र ण म ति ॥ ता का र ण क रि स यो ग के व ली के अ सा ता का
नु दे हे सो सा ता स्तु दे य प रि ण वै दे ॥ ना वा र्थ ॥ स यो ग के व ली के अ सा ता वि द

न्तसुषुप्तप्रवृत्तौ सोप्ती न हो कृतः को ह्येतत् ॥ तस्यं प्रियं जन्तुनात् ॥ तिससुषुप्तप्रवृत्तौ सोप्ती
 प्रियं जन्मत्वं ह्येतत् ॥ तानि तानां वार्था ॥ साता अस्मात्ता के उदे जो सुषुप्तप्रवृत्तौ सोप्ती प्रियं जन्म
 तहो ह्ये किं वली के इ प्रिय विद्यमाने दे ॥ परं उ इ प्रियं ज्ञान के अन्ना व तं इ प्रियं
 न्यसुषुप्तप्रवृत्तौ कन नदी ॥ ओर सह कारी कारण रूप सो हनी के अन्ना व सौ ॥
 राग दोष विना इष्टा निष्ठ विकल्प का अन्ना व ऊवा ॥ इ तं नं कारण सों के वली के
 साता अस्मात्ता उदे सुकार्य कर ने कौ समरथ नदी ॥ ह्ये ॥ अगौ इ ल ह्ये अर्थ के
 दिद कर ने के अर्थ के दिष्टा व ह्ये ॥ वाचा ॥ समय विदिगो वं धो ॥ साद सुदय पणो
 ज्ञे दो तस्मात्ता अस्माद सुद सुसाद सस्त्वेण पराण मदि ॥ श ॥ अर्थ ॥ यतः ॥ तस्य
 के वलि नः सात्त वं धः समय स्थिति कः ॥ जतिं तिससस्यो ग के वली के ॥ साता वेद
 नी का वं धे ॥ सो समय स्थायी दि ॥ तसः उदयात्मक ॥ वसात् ॥ ताने उदयात्मक

गतिश्चेद्वारिकञ्चैतद्गोपांगभतेजसकर्मिणः॥संस्थानद्वर्णचतुष्क
४॥अग्ररत्नद्युः॥उपघातः॥परघातः॥उत्वासः॥प्रत्येकद्वारीरः॥मनुष्यगतिः॥पंचे
द्रियत्वः॥उन्नताः॥अस्मः॥आदरः॥पर्याप्तः॥अप्रोदयः॥यथास्वीर्त्तिः॥तीर्थकरत्वः॥
मनुष्यायुः॥उच्चगोत्रः॥एवं४॥इहांकोईपूछे॥तिरहुगुणधौ॥सातावेदनी॥अ
सातावेदनी॥दोनौ॥कानुदयकह्यासहां॥सातावेदनी॥कानुदैतौ॥प्रगट्ये॥असा
तावेदनी॥कानुदैक्यो॥करसंभवौ॥तिसका॥उत्तरा॥केवली॥प्रभुके॥असातावेदनी॥
केसका॥वैतंगार॥हपरीसा॥कही॥हो॥एकद॥सिजिने॥इति॥सत्ता॥तेको॥न॥बुध
॥॥पिपासा॥भङ्गीति॥अ॥इसममसक॥॥चर्योई॥आया॥अध॥रोग॥एत
एस्पर्श॥मल॥॥वाइ॥आपरीसा॥विवड॥आर॥दपरीसा॥वेदनी॥की॥हो॥केवली
कै॥एही॥जोननी॥इहांकोई॥फेर॥प्रश्न॥करै॥वेदनी॥कर्म॥साता॥असाता॥के॥तेदकरि

नोऽस्त्विनिकाहेसो बंधे॥ तिसतेतयदसमयस्त्वापीऽस्त्विनिवदनीकर्मकीनही॥ न
 र्मेवर्गनाकीज्ञाननी॥ इहांकोईप्रूछे॥ तिरहेगुणांगोंनेप्रथमसमयमातावेदनीवर
 धोऽहेजेसमयसदेकैषिरजाया॥ कषायकानोतहांअनावकहोहोकषायवि
 नांअनुनागकेसेसंनैवें॥ तिसकानुनरा॥ संसारिनीवोंकेंसेलैजातासोअसाताका
 बंधहे॥ तिरहेगुणांगोनोअप्रत्यंतविशुद्धताइसी॥ यातेंकेवलोनदारककेअनंत
 गुण॥ अनुनागलीयें॥ सातावेदनीकाबंधजानना॥ २॥ चरचावाईसमी॥ अश्र
 ॥ तिरहेतथाचोदहेगुणांगोंने॥ यच्चासीप्रकृतिकीसमोहोवेदनीकीभा
 यु॥ नांसकीहं॥ गौत्रकी॥ एवं॥ ५॥ तिमवियेउदेकोनकोनसीप्रकृतिकोहे
 समाधान॥ तिरहेगुणांगोंनेवयालीसकाउदेहो॥ वेदनी॥ ब्रह्मरिखननाराचसे
 हनन॥ निर्माण॥ स्त्रिअस्त्रि॥ अभायुन॥ सुखरुडस्वर॥ पुत्रास्ताप्रत्रास्त

है॥ इसप्रकार कथं चित्त है॥ कथं चित्त नां है॥ इहां यह स्यादाद जानना असे चो
मुद्रा इक्षत चारित्र सारना मगंथ में कह्यो है॥ और जो सजोगी जिनने के॥ एकजीव
प्रति साता असाता का उदै है॥ तो भी नीचे लगणा स्वानवत नही॥ इस कथन
समाधान गोमद सार के उत्तरार्ध विषे भी उक्त है सोई कहें॥ गाथा॥
राय दोसा॥ इदिय गां च केवल मिमंसा तिण्ड सादा साद ज॥ सुदुःखं
इदिय ज॥ अर्थ यतः सयोग केवल निरागद्वै भो निहो॥ जाते सयोग के बली विवेक
गदोष दोनो सर्वथान द्रुये॥ साबार्थ॥ माया चतुष्क ४ लोभ चतुष्क ४ वेद तीन
उहासरति॥ एत रद्वैक तिराग को कारण है॥ केवली जगवाने के॥ एचरि त्र
माद की पक्षी सप्रकृति मूल तेगदी॥ योति राग दोष काले ज्ञानी रहानही॥ तेननु
साता सातो दय जस्तु खडः स्वमायिना स्नि॥ तिस ते साता असाता के उदये तं उच्य

होयप्रकारहो॥सोमोहोदयकेसहायविनाअपनेईजीजन॥सुबहुषरूपकार्यकरें
 रेंकौंसमर्थनही॥जैसैंछिन्नमूलहसफलफलकौंनदेयाथतिंदीणामोहपर
 मेश्वरकैंपरीसाकासझावकौंकरिसंभवो॥तिसकाउत्तर॥यद्वत्तनुमसत्यक
 ही॥अनंतचतुष्टय॥विराजमानकंबलीमहाराजकें॥मोदकीसत्ताकानाशाह
 वा॥इंजीजनकासुषड्रवकाभीअस्तावहुवा॥परंतुवेदनीकर्मकेउदेकाअ
 स्तिस्वहे॥तिसकारिकेवलीकेंवेदमाविनाभीपरीसाकाउपचारहे॥उपचार
 अपेक्षापूर्वकहो॥जिसैंसजागीजिनकें॥एकाग्रचित्तानिगोधविना॥अघाति
 याकर्मकेनाशाफलरूपअपेक्षासौ॥आनकाउपचारहे॥यातेंयद्वत्तनुमसिद्ध
 इंद्रीवेदभीकेउदेकी॥अपेक्षाकेवलीके॥पारदपरसोहो॥परंतुयातियाक
 र्मके॥सहायविनाअपनेवेदमास्तर्पकार्यकरनेकौंअसमर्थहो॥यातेंनोहो

गतिश्चेदगिरिकञ्चोदगिरिकोंगोपांग भतेजसकार्मिण॥ संस्थानं दवर्णचन्द्रक
४३॥ गुणलक्ष्मण उपघातं ॥ मरघात ॥ अस्वास ॥ अतस्वकारिण ॥ मनुष्यगतिरापि
द्वियत्व ॥ सुभगा ॥ अत्रम ॥ आदर ॥ अपर्याप्त ॥ अत्रोदय ॥ यत्रास्वीर्तिरातीर्थ्यकरत्न ॥
मनुष्यासु ॥ अस्मिन्न ॥ एवं ४३ ॥ इहांकोईपूछे ॥ तिरहु गुणवाणो सातावेदनी ॥ अत्र
सातावेदनी दोनो कानुदय कह्यासहां सातावेदनी कानुदतौ प्रगट्ये ॥ अत्र
तावेदनी कानुदेक्यो कर संभवे ॥ तिसका उत्तरा ॥ केवली प्रभु के असातावेदनी
के समानावेतें गारह परी साकही हो ॥ एकद ॥ मित्रिने ॥ इति सूत्रात् ॥ ते कोना ॥ सुभ
॥ रा ॥ पिपासा ॥ अनीत ॥ अस्त्र ॥ इदं सममसक ५ ॥ अथ योर्द्धा ॥ त्राया ॥ विध ॥ रोग ॥ अ
णस्मर्त्ता ॥ मल ॥ वाईत्रा परी सा विष ॥ एम्पारह परी सावेदनी की हो ॥ केवली
कें एही ज्ञाननी ॥ इहांकोई फेर प्रश्न करै ॥ वेदनी कर्म साता ॥ अत्र साता के नेद करि

नां स्थितिकाहे सो बंधै॥ तिसमें ते यह सम यस्वापी स्थिति वेदनी कर्म की नही॥ न
 र्मवर्गना की जां ननी॥ इहां कोई प्रुछे॥ तिरहे गुणावां नें प्रथम समय सात वेदनी व
 द्यो हजे समयर सदे कै धिर जाया॥ कषाय का तो तहा अभाव कह्यो हो कयाय वि
 मां अनुभा ग कै सं सं भवे॥ तिस कानुनरा॥ संसार जीवों के संस्कार ता सो असा ता का
 बंध है॥ तिरहे गुणावां नो अत्र तं त विष्टु इता इरी॥ या तें के वली न दार के के अनेत
 गुण॥ अनुभा ग स्तीये॥ साता वेदनी का बंध जानमा॥ २॥ बरचावा ईसमी॥ प्र
 ॥ तिरहे तथा चो देह गुणावां नो॥ यच्चा सी प्रकृति की सन्ता हो वेदनी की भस्त्रा
 यु॥ नाम की ६० गोत्र की २ एवं ८५॥ तिन विषे उदे को न को न सी प्रकृति का हे
 समाधान॥ तिरहे गुणावां ने वयाली सका उदे हो वेदनी॥ ब्रह्म रिषम नाराच सं
 दनन॥ निर्मोण॥ स्थिर अस्थिर॥ शुभाशुभ॥ सुख दुख २ प्रप्राप्ता प्रप्राप्ता

अविधैकर्मणा कथयेगके॥ संवंधसों केवली को अनाहार कथनां संनवे॥ जो ते भा
मय तो कर्मवर्गणा काग्रहण नही॥ चरचाची समी॥ प्रश्ना॥ समुद्यात केवली तो ज्ञा
न विषे प्रसिद्ध है॥ समुद्यात केवली की कथा बहुत प्रसिद्ध नही॥ समाधान॥ महा
पुराण में॥ अजित नाथजी के॥ तथा विमल नाथजी के॥ समुद्यात क्रिया कुर्द॥ य
ह प्रसंग आया है॥ २०॥ चरचाइ की समी॥ प्रश्ना॥ तेरे गुणों ने केवली को एक सा
ता वेदनी का वंधक त्या॥ सो समय स्थायी है॥ विदनी कर्म के वंधकी स्थिति उत्कि
ष्टनी स सागर की कही॥ जघन सवार ह मुहूर्त्त की कही॥ यह समय स्थायी को न
मे स्थिति वंधको न देहो॥ समाधान॥ तेरे गुणों ने कषाय का अत्र भाव है॥ तिस ते
स्थिति वंध लुप्त नही॥ योग क्रिया सों साता वेदनी का प्रकृति प्रदेष्टा स्पष्ट है॥ ए
क समय कर्म एवर्गण॥ आइल गे इत्ने समय उदे रूप होय विरजां हि कथा य वि

हे॥ तिसका नुत्तर॥ अनाहारक काल विषे कर्मण काय योग है॥ तिसमें ते कामे
 ण वर्गणा का आण मन हो हे॥ जहां पंडित योगमें कोई योग हो आन हां कामे ण
 का आश्रव आश्रव ज्ञानना संसार विषय तीर ह गुण स्थान तो ईश्रै सा को ई स
 मय न ही जहां योग न पाइये॥ तच्छी ते संयोग के बली किं नो एक सा ता वेदनी॥
 का आश्रव हो योगारहित चो दहां आयोग गुण स्थान हो॥ तहां कि सही कर्म का
 आश्रव न ही॥ तिसमें तो॥ अनाहारक काल विषय कर्मण योग के संबंध सौ का
 र्मण वर्गणा का गृहण है॥ नो कर्म वर्गणा का ग्रहण न ही॥ या ते अनाहारक
 संज्ञा है॥ तदुक्त॥ एण कम्मवगाणाणं गृहणं आहारयणां समुहसंविजान
 नी॥ और ते सैं के बली के पूर्वोक्ता क पाट के दोय समय विषे आहारिक मिश्र
 योग सौ के बली के अपर्याप्त पना ऊपर कह्या॥ ते सैं ही पुतर एण के चार सम

यकैरे इहांप्रदेनात्रसनाडिकेवाहिरनदीगये तदनंतरजोकेवलीपूर्वमुखप्रहोइ
नौ दक्षिणोत्तरमेंवातवलयदीनचौदहगजउच्चलोककेअंततांई आगमोक्त
स्तीर्णदंडप्रमाणदलसंयुक्त औरउत्तरमुखहोमनो पूर्वपश्चिममेंवातवलयह
१३ चौदहगजउच्च लोककेअंततांई आगमोक्तविस्तीर्णदंडप्रमाणदलसंयुक्त
आत्मप्रदेनामकौकपाटाकाररुसरेसमयकैरे इहांलोकनाडिकेवाहिरप्रदेनाग
य तदनंतरवातवलयनकेनुरं समस्तलोकव्यापी आत्मप्रदेनामकौप्रतरअ
परनाममेंथानकरईकेअकारतीसरदसमइ कैरे इहांप्रदेनावाहिरप्रगाटह
तदनंतरवातवलयसमेतसंपूर्णलोकव्यापीआत्मप्रदेनामकौ लोकप्रणरु
पचौथैसमयकैरे इहांनीप्रदेनाप्रगाटस्तुवाहिरहं अैसेंचारिसमयमांहिप्रदेना
पत्रारइ औरआरिहीसमयमांहिसंबरे प्रथमसमयलोकप्रणसंचरे द्वैतसमयप्र

नविधैतीनभेदहृस्वस्थानकेवली॥ समुद्यातकेवली॥ अजोगकेवली॥ ३॥ ५
 नतीनोकेंभीविशुद्धताकेयोगतेउत्तरेत्तरअसंघातगुणीनिर्जरेण॥ यादितेअ
 त्तंतविशुद्धतासौसमुद्यातकेवलीनामगोत्रवेदनोकर्मेकीस्थितिआमुकीस
 मानकरहे॥ इन्द्रसौनेदविषद्रप्रतिसमयअसंघातगुणीनिर्जराजाननी॥
 ए॥ चरचानुन्नीसमी॥ अ॥ केवलसमुद्यातकेअवसमयहे॥ तिनविषयावस
 नादिकेवाहिरजीवकेप्रदेशकोनसेसमयमेंपाइये॥ सम्राधान॥ तेरद्वेगुणस्था
 नकेअंतआत्मप्रदेशानकीप्रसरणसंचरणरूपक्रियाआवसमयमोंदिहोदे॥
 तहोंकेवलीजोकायोत्सर्गसमनस्थितहोयतोचारहअंगुलप्रमाणसमहन्ताअ
 यचामूलनारिरप्रमाणसमहन्तअयविष्टहोयतोमूलसरीरेसेत्रिगुणमुदाईसमेत
 तीनोवातवलयहैनलोकनालिप्रमाणउच्छदंजाकाराआत्मप्रदेशप्रथमसम

कोंषिपौत्रे॥यहीक्रमहै॥तिसैदर्शनमोहकाषिपककहिये॥इसकागुणस्थानछुवा
साबुवाहीजानना॥दर्शनमोहकेषिपकैतेंउपग्रामककेंअसंख्यातगुणीनिर्जरा
है॥इहोंकोईकहै॥षिपककेपीछेउपसमकक्योंकहा॥तिसकाउत्तर॥षिपकनो
बसायिकीकाहै॥जोंतेंइनसातुप्रकृतिक्लृप्तयकीनाहै॥उपससकनांवद्वितीयो
पग्रामसंयुक्तउपसमअणिबालेकोहै॥आरित्रमोहकेउपसमकरैनेकोंउद्यमी
हुवाहै॥गुणंस्वानुसंके॥आएुवांनवांदशवांएतीनहै॥दीउपग्रामककेंअसंख्या
तगुणीनिर्जराउपसांतमोहाप्यारैवंगुणस्थानबालेकहै॥७॥उपसांतमोहहैंअ
संख्यातगुणीनिर्जराक्षपककहिये॥षिपकअणिबालेकहै॥इसकेगुणस्थानआवुवे
मुंलेयदसुबेंतांईतीमजाननै॥८॥क्षपकैतेंअसंख्यातगुणीनिर्जराक्षीणमोहनांम
वारैहैगुणस्वानबालेकहै॥९॥क्षीणमोहहैंअसंख्यातगुणीनिर्जराक्षिबैकहै॥अ

आवकेक हैहो॥१॥ तिसैतेंअसंघातगुणीनिर्जरा॥ छेवसातुवेंगणस्थानबोलविरत्न
 केहो॥३॥ तिसैतेंअसंघातगुणीनिर्जरा॥ अनंतानुबंधीकासंयोजनावलेअनंतवि
 योजककेहै॥ इहांकोइष्टछै॥ जोकोईअनंतानुबंधीचिउष्कै॥ अष्टाख्याना
 दित्तपकैसे॥ तिसैअनंतवियोजककहियो॥ इसकागुणस्थानकोनसा॥ तिसक
 लुत्तर॥ अनंतानुबंधीकी॥ सर्वोक्तविसंयोजनाचोथिपांचुवा॥ छेवसातुवेंइम
 अरोगणस्थानविवेकरहे॥ तिसैतेंचारीगणस्थानवर्ती॥ अनंतवियोजक
 ह्यो॥ सोअपनेगुणस्थानविवे॥ अपनीसर्वनिर्जरासो॥ अपसंघातगुणीनिर्जराक
 रहेपरंचुइहां॥ क्रमवर्तीकथनकीअपेक्षाते॥ विरतसोअसंघातगुणीनिर्ज
 राजोमनी॥४॥ अनंतवियोजकतेंअसंघातगुणीनिर्जरादर्शनमोदकेषि
 पककैहैपदलेंअनंतानुबंधीकीविसंयोजनाकरिदर्शनमोदकेत्रिक

प्रागसपदार्थविवेचनास्तिबुधिनहोयतिमैत्रास्तिकप्रभावकदिये॥येचारैर्भावक
 श्रीविभक्तचरैर्नहो॥विकाररूपनहो॥यदसम्यक्दिष्टोकावाह्यलक्षणनहो॥१॥
 चरन्त्याप्रवारमी॥२॥पुनः॥दत्ताध्यायीस्तत्रकेनैवंरूपकेविवेकदत्ताष्टरुषसम्यक्कद
 ह्येत्त्रादिपरस्परअसंख्यातगुणीअप्रधिक्कनिर्जरावालेककहेहो॥तिनकाक्यास्वरूप
 है॥समाधान॥सम्यक्कदहो १ आवक २ विरत ३ अमंतवियोजक ४ दर्शनमोहद

५ उपपन्नमक ६ उपपन्नोत्तमोद ७ द्विपक ८ क्षीणमोह ९ मिम १० ॥एदत्रावि
 षज्जोनेने॥प्रथमहोप्रथमोपशोसम्यक्कीउत्पत्तिकेपदलेकरणान्नयवे

मसमयवर्त्ती॥विश्रुत्ताविशिष्टमिथ्यादिष्टीकेंजोनिर्जराहे॥नि
 तेंअसंख्यातगुणीनिर्जरा॥चोथेगुणस्थानवालेअविरतसम्यक्दिष्टिकेहे॥१॥
 तसैत्तेअसंख्यातगुणीनिर्जरा॥पंचमगुणस्थानवाले

है॥ निश्चैकरि भगवान् जानै॥ अन्तु मां न सो मैं सम्पत्कहे यह नतीः अज्ञान मिथ्या है
जो तें सम्पत्क अन्तु मानका विषय नही॥ परं अज्ञा स्वकै विषय विना तो कोई वस्तु
न होया था तें सम्पत्क के बाह्य लच्छण॥ अज्ञा स्व विषे क्यो न कहें गे॥ समाधान॥ य
शान्त लकनाम का व्यविषे पुरुष के चारवाह्य लच्छन कहें हें॥ चारही सम्पत्क के क
हें हें॥ स्त्री जन के संगोग की गे विटो विटी के उपजाव ने करि विपत्ति विषे धार्य भाव
सौ॥ आरध्व कार्य के निरवार सौ॥ इन्मचार चिह्न निकारि पुरुष की अत्रती प्रिय पुरुष
शक्ति जानी जाहे॥ ते स्पेही सांति भाव संवेग भाव दया भाव अस्ति क्य भाव इन्मचा
रें अत्यन्त चारी भाव न सौ॥ सम्पत्कर न्न जाना जाहे॥ क्रोधादि रहित सम्मभाव कौं अण
त भाव कहिये॥ कोमलता सुकृप परिणाम कौं दया भाव कहिये॥ धर्म धर्म के फल वि
षे प्रीति होय तथा हेह॥ भोग सौं उद्यासीनता होय॥ तिसैं संवेग भाव कहिये॥ आ

धैर्यं च मकालं मे सम्यक् दिदृक्षीन् विवेकेन कपाड्यं । सममाधानं ॥ जिनपंचलं ध्विरूपं
परिणामकीं पराणं विधेयं सम्यक् उपजे ॥ ते परिणाम इत्यस्य कलिकालं मे मृदा उल्लस
ति स ते दद्यात् तथा सीनं ॥ अथ चासीनं तथा चारकं देहं ॥ पांचखट्वतो डल्लभ देहं ॥ इत्य
कथनं कीर्त्तयिष्यामि कति केयकीर्त्तिका विवेकं ॥ तथा हि ॥ विद्येत कतिना
त्मनो धनिमुखाः संदेहं नो देहि नः ॥ प्राप्यंते कति चित्कदा चिन्मयं पुनर्जिज्ञास
मानाः क्वचित् ॥ आत्मज्ञाः परमं प्रमोदं सुखिनः ॥ ओन्मीलदंतर्दृशोः ॥ धित्रा सुर्वह
वो यदि त्रिचण्डरस्ति पंचषाडल्लभानां ॥ ते संति धित्रा यो हि ॥ इति कथनात् ज्ञाना
र्णं विशुक्तं ॥ इत्यस्य कालं मे घने जीवन्मयीं स्वच्छां तं आपकौ सम्यक् दिदृक्षीमो नैह तो मा
नौ ॥ परंतु सास्त्रं विवेकं तो मीमं चारही कदेहं ॥ औरं पंचलं ध्विकास्व रूपं नलीमांति ॥
ज्ञानां होयते ॥ आपकौ सम्यक् दृष्टिं कात्रनुमानं श्रीनकरं को इति ज्ञेयं ॥

यत्र सा भ्रवताया ॥ पञ्चपणामासमेकं ॥ इति कथनात् ॥ इमं जाति स ममत्त्व की प्राप्ति
 विषे छह महीने का वासा कीया ॥ तिना की भाषा ॥ एक छ महीना उपदेश मेरो मां
 निरे ॥ और काल लब्ध विना होना नही ॥ यद भी प्रमाण हो ॥ तहां दोनो कारण विवे
 द हूं स क हिये हो ॥ जै से कोई धनार्थी पुरुष यथा जाग पुन्य म करे हो ॥ धन की प्राप्ति
 भाग्यो द्य सों हो हो ॥ तै से सर्वोपाय से पुन्य मी हो ना योग प हो ॥ ममत्त्व की प्राप्ति काल
 लब्ध सों होयगी ॥ और जै स कार्य की सिद्धि हो न हो ॥ तै स कार्य की सिद्धि पुन्य म वि
 मां हो नी नां हो ॥ नव होयगी तव पुन्य म हो सो होयगी ॥ यह नियम हो जै से नर तजो
 के ज्ञानो तपति विवेक मुहूर्त वा कीरदाया ॥ तौ भी दोहा ग्रहण कीया ॥ सव का
 र्य सिद्धि होवा ॥ इ स प्रकार पुन्य म कारण हो ॥ कारण बिना कार्य सिद्धि होना न हो ॥ ए
 ॥ यो तै पुन्य मी रहना ॥ २५ ॥ न्वस्वा सो लहमी ॥ अथ ॥ बिद्यमान नर त बंड वि

नी॥ चारोंषियकके मरण है नही तिसमें उनकी स्थिति अंतर्मूर्त्त ही है॥ इहां कोई कह
॥ प्रमत्त सौं लेय उपनांत मोहतां ईच्छे हों गुण स्थान की स्थिति मरण की अपेक्षा समय
कही॥ त्रिभुं मिथ्या त गुणों की कौन कहे॥ तिसका न सर॥ जा जीव
डि मिथ्या त्वमें आवै॥ सो अन्नं तानुबंधी के अंतर्मूर्त्त मात्रो॥ उदै काल पर्यंत मरण न

॥ यह नियम है और मिश्र गुण स्थान विषे मरण का अस्तावही है॥ क्षीणो मिश्र च
योग मरण नास्ति देहिनां॥ इति बचनात्॥ अग्रे अन्न ततया दिश व्रत की प्राप्ति
विवेकी अंतर्मूर्त्त तां ई मरण नही॥ या तै और कि सही गुण स्थान की समय मात्र स्थि
मरण की अपेक्षा न संज वे प्रह कय न संज्ञ जी की टीका सर्वार्थ सिद्धि नाम है
ज्ञानना॥ चरचा चोदमी संशुर्ण॥ १४॥ अथ पनरमी बुध्यते॥ १५॥ सम्पत्क सद जसा
किय न सा भेदे॥ समाधान॥ समय साण विषे श्री अमृत तंचंद्र स्वरि नै तो समत्क

साक्षात्तनिद्राप्रमादके अथवसरा॥ अथप्रमत्तगुणस्थान॥ मुनिराजके कैसे वनों॥ अतः निद्रा
 मुनिस्वरके॥ यथा वसर कहि देही॥ यह विनाग विचार देखना॥ अथरचाचतुर्दशा
 मी॥ प्रश्ना॥ छेते संगारु वेगुण स्थान तो दो॥ उत्किष्ट तथा जघं म स्थिति अंतं मुहूर्त
 मात्र है॥ और एक समय मात्र नी कहि दे॥ वनारसी दासे नें नाटक के गुण स्थाना
 धकार में नी॥ लिखो दे॥ सो क्यों करै हा॥ समाधान॥ यह समय मात्र स्थिति मरण की अथपेक्षा
 सो है॥ किं ई अथप्रमत्तवर्ती जीव अथपनी आयु के एक समय वकीर दे॥ प्रमत्त में अथ
 एकरै॥ इस अथेखा एक समय स्थिति ऊर्द्ध अथें में ही॥ अथप्रमत्तवर्ती तथा चोरो उपसम की नी
 जान नी॥ तिसका व्योरा॥ आवें वेगुण वां नें यह ले नाग में मरण न है॥ निजा युबक
 समय वा कीर है॥ नें वेगुण वां नें जाइ मरण कै॥ इस अथेखा नें वेगुण वां नें की एक समय स्थि
 ति ऊर्द्ध अथें में ही॥ इसमें वे तथा गार है की नी॥ आवें वे की वा कीर है सो उत्तर तीवार जां न

कीनोईवत्पन्नप्रध्वंसीहै। औरइतनदौनोगुणस्खानकाकालजघमसथाउत्किष्ठा
 अंतर्मुखर्तमानहै। तिसअंतर्मुखर्तकैनेदअसंभ्यातहै। औरइतनकैपरिणामसं
 बंधीपलटनकीसदजपरिणामिअसिहै। वाह्यचिद्रसोजोनीनजाप्रचलतेवेच
 तेसोवेतेंआहारकर्तेहै। वासाहुवांगुणस्थानअंतरकैनाबौंकारिहुवाकरैहै
 जवसंज्वलनकषायकाउदेमंसहोय। तवसाहुवांहोजाप्रतीव्रउदेहोयतव।
 छेवाहोजाप्रजावतअणिमांडेनही। तद्धेतोईअसैंकरहुवाकै। अथमोत्राम
 वालाअंतर्मुखर्तकालविवै। साहुवेहैवेगुणस्थानमेंसंभ्यातसहस्रअ
 छकारिकै। सासादनवन्तीहै। असीकोईपरिणामोकीउत्थालगतिहै। अतः

उगावेतें। अथवाअहारकागामलेतेंकेईवारसाहुवांछवाहोजाप्रतिसेतें
 आहारविहारकीक्रियारहिजाअथहक्योंकरसंभवे। औरअसैंनमानियेतो॥

वीर्यसिद्धजाग्रतीनसमयअंतरालवतीरहे। तहांदेवगति के उदै। अत्रतगुण
 स्थानमानना। तेतीससागरकी आधुपगंजना। अत्रतगुण स्थानरहे। जवतांड
 फेरकर्मभूमिका मनुष्य होश। आठवर्ष के अंतर संयमधरो। तवतांड अत्रत
 गुण स्थान कहियो। इस प्रकार तेतीससागर कुच्छ अधिक रहे। इहां कोई कहै हर्मते
 ससागर अत्रतगुण स्थान की स्थिति सुनी है। अधिक मही सुनी। वनारसी दासेने
 भी समयसारनाटक में यही कहि है। सो क्यों कर है। तिसका उत्तर। पूर्वोक्त चोवी
 सवां ने की गाथा का अर्थ मनीनां तिलि विचार लेनां। १२। चरचा लेरसी। प्रश्न। छठ
 साठवां गुण स्थान डक्की नाई फुवा करे है। तहां असें सुना है। जव छठे से सो स
 तवां आइ जाइ। नवगमन करे ते पावजो का तो ही रहे। आहार के संसेगा सज्यो
 का तो ही रहि जाइ। सो कैसै है। समाधान। छवासातवां गुण स्थान उपजा मसमस्क

वाला। उपसमचारित्रमोदकी। इक्षीसप्रदक। तिकावकै। अप्रप्रसारवानी। चतुष्क ४॥
प्रसारवानी। चतुष्क ४। संज्वलनचतुष्क ४। हास्मादिनव १। एद्वीसऊरी। मोहन
कर्मविनाशैर। किमीकर्मकानुपसमदो। हीनहृ। सहनियमहै। तातेछत्रीसप्र
कृति। काउपत्रामकै। करसंनैचौ। यहकथनस्वामिकाति। कैयकी। टीका। विषंदे
। १॥ चरचावारमी॥ ४॥ अवि। रतनामचौ। प्यगुणस्वानकी। केते। कालस्थि
॥ सम। धान। जयम्यस्थि। तिअंतर्मुद्वर्त्तदो। अत्किहते। तीससागर। कुछअधि।
कैदे॥ तउक्तं॥ छावलियासासाणंसमद्वियते। तीससायस्यनुच्छं॥ अस्मार्थः॥
नसप्रडावलिका॥ सासादननामद्वेजेगुणस्वानकी। छदअवली। उत्कि
तिदे॥ चतुर्थसु। साधिकत्रयस्त्रिंशत्सागर। चोप्येअत्रतनामगुणस्वान
कुछअधिकते। तीससागरद्वै। सोकै। सो। कोद्वकर्मअमिकामनुष्यम

कञ्चत्रधिकतेतीससागरह्यसोकेसो॥ कोट्कर्मभूमिकामनुष्यम

आचलीकेऽप्रसंघातसमयकदेऽप्रसंघात आचलीका॥ एकसोसोस्वासकह्या॥
 तिससंघातेकसंघातमेदहं॥ तोडहंसंघाताकोनसादे॥ प्रसकाभेदभीतोजा-
 नोचादियोसायहवित्रोषश्रीघमुनंदसिधांतीकृतमूलाचारमंलिषादे॥ १०७
 वरचागारमी॥ अम्न॥ तपकअणिवालानेवंअभिदत्तनामनेवंगुणस्थानवि-
 षो॥ नवनागाकरछत्रीसप्रकृतिचास्तयकरेह॥ तिनमेसुखमलोभविनांभीस
 प्रकृतिचारित्रमोहकीह॥ थावरअदितेरहप्रकृतिनामकर्मकीह॥ तीनोव
 जीनिद्रादर्शनावरणीकीह॥ एछतीसडुई॥ औरजोउपनामअणिचहसो
 नधगणस्थानविषड॥ उपसमकेतीसप्रकृतिकाकरे॥ अह्नविलासकेचेतन
 चरित्रविषेछत्रीसदीकाउपनामलिषादे॥ सोकेसैह॥ समाधाना॥ सपकअ
 णिवालाछत्रीसप्रकृतिचास्तयकरे॥ यदतौप्रमाणेह॥ औरउपसमअणि

वाला। उपसमचारित्रमोदकी। इक्षीसप्रकृति का कैसो। अष्टाखानी चतुष्क ४॥
 प्रत्याखानी चतुष्क ४॥ संज्वलन चतुष्क ४॥ हास्मादिनव ९॥ इक्षीस ऊर्ध्व मोहन
 कर्मचिनाश्रैरकिंसी कर्मका उपसमदो दीनही। सहनियम है। ताते छत्तीस प्र
 कृति का उपग्राम कैो कर संजवौ। यदकथन स्वाभिमिकार्ति कैयकी दीका विषे दे
 । १॥ चरचा वारभी॥ ७॥ अवि रतनाम चोप्ये गुण स्नान की केत काल स्थि
 ॥ समधान। जघम स्थिति श्रंतर्मुद्रुर्न है। अतिक्रंते तीस सागर कुच्छ अधि
 कौ दे। तउत्तं ३॥ छाव लिया सासाणं सम हिय ते तीस सायस्य नुच्छं॥ अस्मार्थः॥

प्रडावलिका। सासादननाम दजे गुण। स्नान की छद आवली उत्कि
 छ स्थिति है। चतुर्थे स साधिक त्रयस्त्रिंशत्सागर। चोप्ये अत्र तनाम गुण स्नान
 कुच्छ अधिक ते तीस सागर है। सो कैसो। कोइ कर्म अमि काम नुष्म

आवलीके असंख्यतसमयकदे और संघात आवलीका एक सा तो स्वास कह्यु ॥
 तिस संघात के संघात न देहें ॥ तो इहां संघाता को न सादे ॥ इस वक्तो न दभी तो जा
 नों चाहिये ॥ सोय ह बिशेष श्री घसु में दसि दान्ती कृत मलाचार में लिखा है ॥ १० ॥
 चरचा ग्यारसी ॥ अम्ना ॥ सपक अणि वाला न वे अं भि ह त नाम न वे गुण स्थान वि
 यो ॥ नवनाग कर छत्ती सप्रकृति का सय करे ह ॥ तिन में सुख मलो भविनां चीस
 प्रकृति चारि त्र मोह की है ॥ थावर अदि तेर ह प्रकृति नां मकर्म की है ॥ तीनों व
 जी निद्रा दर्शना वरणी की है ॥ ए छत्ती स डई ॥ और जो उपनाम अणि चेटे सो
 नवगुण स्थान विषय ॥ उपसम के ती सप्रकृति का करे ॥ अस्त विलास के चेतन
 चरित्र विषे छत्ती स ही का उपनाम लिखा है ॥ सो के सै ह ॥ समाधाना ॥ सपक अ
 णि वाला छत्ती सप्रकृति का सय करे ॥ यद तो प्रमाण है ॥ और उपसम अणि

स्वात्मातमी कहिये है ॥ कोई नीव उपग्राम श्रेणि चहै तो कै वार चहै ॥ समाधान ॥ अ
र्धपुत्र लावर्त काल विषे उपसम श्रेणि उत्तिष्ठ चार वार चहै ॥ फेर मुक्त होय ॥
जन्म विषे धे दोय वार चहै ॥ चरचानवमी कहिये तो ॥ अंतर्मुख र्त्त कैं कितने
लये ॥ समाधान ॥ एक आवली एक समय कों जघम अंतर्मुख र्त्त कहियो
यघाट मुख र्त्त कैं उत किष्ट अंतर्मुख र्त्त कहियो ॥ तथा निम्न मुख र्त्त कहियो ॥
धके अ संष्ये नद ज्ञाने ॥ चरचा दनामी कैं ॥ आवली का कया स्वरूप हे
समाधान ॥ एक मुख र्त्त कैं से ती सै से ति दत्तर सा सो स्वास ह्यो है ॥ एक
विषे कैं को डा को डा आवली कुच्छ अधिक कहिये है ॥ इहां को डा है ॥ हम तो अ
गली कैं आवली नाम जानै है ॥ यह तो काल वहुत पीडा डुबा ॥ तिस का समा
धान ॥ आवलि अ संख समग्रा ॥ संखि जावलि हवे इउ सता सो ॥ इति वचन त

तांनुबंधीकी विसंयोगनाकरे॥तीन प्रकार दर्शन मोहका उपसमकरो॥ उपस
मश्रेणिचहै॥ ग्यारह गुण स्थांन पर्यंत सों दूचै॥ तिसै कौनमममत्सक दोगो॥ स्यो
पत्रामक होगो तो इसकी सरह दू सौ बुबंदी सांई है॥ यह ग्यारह तांई पाईये॥ तिस
का उत्तरः॥ यह द्वितीय पत्राम दोयांतें उपग्राम ही कहिये॥ द्वा॥ चरचा सप्तमी का
है जै है॥ ग्रन्थ॥ उदेलता तथा विसंयोगना विशेष कया फरे है॥ समाधानः॥ मूल प्रकृति
की उदेलना तथा विसंयोगना होती नही॥ जो अगामोक्त उत्तर प्रकृति॥ अत्र पनेरू
पछि रेन्ही पर कृति में मिलि कै बिरजना॥ फेर सता में न पाईये॥ तिसै उदेलना का
हयो॥ और जो उत्तर प्रकृति सजातिय प्रकृति में मिल जाया॥ तिसैं विसंजो जना क
हियो॥ जै सैं अन्नं नानुबंधी अत्र सावधान अदि में मिले॥ विशेष इतना उदेली प्र
कृति फेर बंध कीये बिना उदै अत्रावे नही॥ विसंयोगना वाली उदै अत्रावे॥ ॥ ॥ ॥ ॥

कर्मणि कैपात्रमैर्निर्मलजलवत्तजाननां॥ सर्वोक्तसात्तप्रवृत्ति काक्षयचोथेपांनु
बेच्छेव॥ तथा सातुर्बेगुणस्थानतां ईद्वैहे॥ तिनैमैदन्नीनमोहकेक्षयं हे॥ अने
बंभीकाक्षयद्वैहे॥ त्वीणदंमणमोह॥ इति वचनात्॥ दन्नानमोहकेक्षयवि
नंतानुबंधीकी॥ विसंयोजनाद्वायक्षयनदोययक्षनियमैहे॥ यद्वृद्धप्रकार
सम्पत्ककासंदेपस्वरूपजानना॥ इनच्छेदोसम्पत्ककेगुणस्थानलिषीयेहे॥
। मिथ्यात्वगुणवाने मिथ्यासम्पत्का॥ १॥ सासादनगुणवानेसासादनसम्पत्का॥ मिश्र
णवाने मिश्रसम्पत्का॥ ३॥ चोथेगुणस्थानसौलेयसात्तुवेतां ईनुपसमादिती
हे॥ चोथेसौलेयगणरहे तां ईनुपसमेत्रणि विषद्रा॥ उपसमत्तायकदोयसम्पत्कहे
आवैसोषिपक्त्रणि विषैउपरचोदहेतां ई॥ एकदायकसम्पत्कहे॥ इहा एककोई
औरप्रश्नकरे॥ कोईकवेदकसम्पत्कदिष्टिसात्तित्रायत्रप्रसत्तगुणस्थानविषेत्रने

मकहियो॥ यह हृत्तयो उपसमका अर्थ सर्वत्र ज्ञानानां॥ इहां को ई प्रह्वै॥ इया आवको
 रुय संज्ञा कहि॥ ओर उपपन्ना समे नो उदया आवहि आया॥ इन दो भागों में विभोष
 क्यो निसका उत्तरा॥ उपपन्ना के उदया नावका काल जघन्य वा उत्क्रिय॥ अंत
 र्मुहूर्त है॥ उपसम सम्यक् जवता ई रहै॥ तवता ई चै छर है॥ परंतु सा उवें छ
 वे गुणा स्थान वत॥ मिथ्या त्व विषे आवा गच्छ चेतना जाई॥ जे सी उपसम की पर
 एति है॥ ओर हृत्तयो पन्ना म के उदया नावका काल जघन्य अंत र्मुहूर्त॥ उत्क्रिय
 छासत सागर या तें इ स उदया नावको हृत्तय संज्ञा है॥ ५॥ छे ते हृत्तयिक सम्यक्
 का स्वरूप लिखिये है॥ अनंतानुबंधी चतुष्पत्ती॥ ६॥ दर्शन मो दृक्ती॥ इन सांत्तो
 प्रकृतिक के वली तथा श्रुत के वली के निकट हृत्तय होय॥ प्रकृति प्रदेना स्थि
 ति अनुनाग वंध रूप सत्ता रहै नही॥ तिसे हृत्तयिक सम्यक् क हिये॥ स्फटि

राकहीमिथातर्कोत्तारहिजाया॥तवफिरनीयहपूर्वोक्तपांचप्रकृति
 अनादिमिथ्यातीवतत्त्वै॥इसप्रकारप्रथमोपश्रामसम्पत्स्वकीरीतहे॥४॥पां
 चुवेंक्षयोपश्रामसम्पत्स्वकास्वरूपल्लिखियेहे॥कोईउपश्रामीचोथेपांचुवेंछवें
 सातुवैंगुणस्वांनवती॥तिसैंकेंसम्पत्प्रकृतिनामा॥दर्शनमोदकीतीसरीप्रकृ
 तिकाउहे॥आवैसवेदकसम्पत्कहोया॥इसहीकानांवक्षयोपश्रामसम्प
 त्कहै॥निसंवकुतहैइहांकोईपुछैसयो पसमकाअर्थक्योहे॥तिसकाउत्त
 रा॥जोकर्मजीवेंकअंदेशोपरचारचारप्रकारवंधरूपसत्तालीयेतिहोहे॥सोअ

देशस्त्विति वेंधरूपसत्ताजोंकीत्सोंरहे॥तिसबेंधकेअनुभागाका
 होया॥तिसैनुदयानावक्षयकरियो॥उदैकौअज्ञोअसमारहीति॥
 उपसमकाहिये॥उदयानावक्षरूपसमेंतेउपश्रामहोया॥तिसेंक्षयोउपश्र

तका उपसम कहा सो कहै। या तें अनंतानुबंधी चतुष्क और एक मिथ्याता। इन पांचों का उपसम करि उपसम सम्यक् को प्राप्त होइ। यह विशेष श्रीगोमहद सार के। अतः गर्ह में जो नाना। नवयह अनादि मिथ्याती चोथ पांचु वेतथा साधु बें गुण स्थान चें देइ। तव तहां अंतर्मरुत्त काल विषे मिथ्या स्वद्रव्य के तो न पेंड करै हे। तइ संकर्म कांड मध्ये। जं ते एकोद्वं वं। पदमु वस्म नाना वसम जं ते ए मथ्या द्रवं तु तदा। असंख गुण ही ए द्रव्य कमं। इस प्रकार दो य प्रकृति की सत्ता ई मिथ्यात्व के उदै मिथ्या त गुण स्थान वन्नी होय। सादि मिथ्या ती क हों वे

उपसम करै। तव सात प्रकृति का उपसम करि उपसम सम संप्रदिष्ट होय। तहां श्री एक तार सपे ह सादि मिथ्या ती मिथ्यात्व गुणावां ने कदा दो नों मिथ्यात्व की उच्छेदना करै। और प्रकृति में मित्रा इकें विराय दे तो फे

दिमिथ्यातीपंचलध्विकोंप्राप्तहुवाअनवृत्तिनामतीसरेकरणकेचरमसमयविषे॥
अनंतानुबंधीक्रोधादिकीचौकडो॥अंगारमिथ्यात्वइनपांचोंप्रहृत्तििकाउपसमकर
उदैकोंअंगोपकैर॥तवउपसमसमस्वकोंप्राप्तहोइ॥जैसेनिर्मलीकेजोगते
नीचैवैविजाइ॥सवनीरनिर्मलहोइ॥तैसेकर्मप्रहृत्तिकेअनुदयतेजीवकेनिर्म
लताहोइहो॥यहउपसमकास्वस्सहै॥इहांकोईपूरे॥सातप्रहृत्तिकेउपसमसों॥उ
पसमसमस्वकैहृष्टसिद्धहै॥इहांपांचप्रहृत्तिकेउपश्रामसोंलिखासोवैसों॥तिसका
उत्तर॥सातप्रहृत्तिकेउपश्रामसोंउपश्रामसमस्वकहोहो॥सायहकथनसादिमि
थ्यातीकीअपेक्षासोंहै॥जातेसाविमिथ्यातीकेंतीनोंमिथ्यातप्रहृत्तिकीसत्ता
है॥तिसैतेंअनंतानुबंधीचतुष्कज्योरतीनोंमिथ्यात्वाइनसातोंप्रहृत्तिकेउपस
मों॥उपश्रामसमस्वकहोहो॥अत्रनादिमिथ्यातीकेंएकमिथ्यात्वकीसत्ताहै॥महसा

डमिलाइयाइतौ॥ एककाजु दास्वादलीयानहो जाय॥ तेसैं भिअरसम्पत्कैकेजा
 वजानेनो॥ इहांकोईकैहे॥ मिअरसम्पत्कैकेतत्वअदानअतत्वअदानरूपमिले
 जावहेतेमिथ्यातेकैजावहे॥ सम्पत्कैकेजावहे॥ यासेंइसकौंसम्पत्कसंज्ञाऊ
 दीसासादनवालातौसम्पत्कसोंगिराअवत्कअतत्वअदानहै॥ मिथ्यातव
 गलाप्रगटअतत्वअदानहै॥ इनदोंनौकेंसम्पत्कामज्ञावनहै॥ तिसेतेंइन
 कैजावकौंसम्पत्कसंज्ञाकैसैंऊई॥ तिसकाउत्तरा॥ आत्माकीरुचिनथाअफा
 नरूपसम्पत्कनामघरूखिजगुणहै॥ सोअनादिहसिोंअपनेंस्वरूपसोंनिष्ट
 मिथ्यात्वरूपऊवाअतत्वरुचिमैंवर्तैहे॥ नात्रानहीऊवाओररूपऊवाहै॥ ति
 सतेंगुणस्थानकैअनुसारदोंनौकौंसम्पत्कसंज्ञाकहै॥ जेसैंएजनिष्टराजाकौं
 राजाहीकहियो॥ ३॥ चौथेअपसमसम्पत्ककास्वरूपनिषेयेहे॥ कोईअना

तेगुणकेअभावसेइवकाअभावहोहै॥तिआकाउभरा॥जहांतत्वरुचिगईस
 होंअतत्वरुचिहीहोइयातेसासादनगुणस्थानविषेअवक्तअतत्वरुचिहो
 मिथ्यातेविषेवक्तजाननी॥इसीसरेमिअसगुणकालिबिबेदे॥अनादि
 मिथ्यातीकिंजोथापांचुवा अतासातुवांइनच्यारिगुणस्थानविषे तथासादि
 मिथ्यातीकेमिथ्यात्वगुणस्थानविषेददर्शनमोदकी समक्मिथ्यात्वनाम
 दूसरीप्रकृतिकाउदेअइजाइतिसप्रकृतिकेउदेअइजाइतिसप्रकृतिनिर्दे
 एकहीकालअंतर्मुकुर्तमात्रसमक्तमिथ्यात्वस्त्वमित्येपरिणामहोहि
 तिसैमिअगुणस्थानकहिये तिसविषेभावहोहि तिसकोमिश्रसमत्कक
 एवंमिथ्यात्वसंवंधीअतत्वअज्ञानकासागहवादे तिससेमेतत्वअज्ञा
 हाययहमिअभावकास्वरूपदे इसभिकानांवमिश्रसमत्कहै जेसेदहीगु

हावें॥ ते सेंही मिण्यात्वगुणाचानें जोरु चिहोइ तिसें अतत्वरु चिही कहिया॥ यहा
 मया सम्यक्का स्वस्वपदे॥ हे जे सासादन सम्यक्का स्वस्वलि विथेहे॥ कोइ
 अनादि मिण्याती चोथें पांचुबें सावै गणा स्थान जाइ खेवें आवेत हां॥ अत्र न
 तानुवंधिके अत्र मत मोदयतौ॥ मिण्यात्वके सन्मुख होइ एक समय सों॥ ह्यय
 खहु आबली पर्यंत॥ अंतराल वती रेहे॥ महां सासादन गुणा स्थान विषे सासा
 दन सम्यक्का हिये॥ इहां कोइ पूछे॥ सासादन सम्यक् विषें तत्वरु चिहें कि
 अतत्वरु चिहें॥ कि नु भय रुचि हे॥ कि कोइ रुचि नही॥ ज्ञातत्वरु चिहें दो
 गें तो चोथा गुण स्याम कुचा॥ अतत्वरु चिहें दो गें तो पहला गुण स्थान कुचा
 उभय रुचि कें दो गें तो तीसरा मित्र गुण स्थान कुचा॥ दो नो रुचि में कोइ न क
 हें गें तो॥ आत्मा कि अदान गुण के अज्ञावें तें आत्मा का अज्ञाव कुचा जा

तिक्ष्ण॥ धाक्करणे त्वनिवृत्तात्मेन निवृत्तिरिदं गिता॥ पारिणामैर्मिथ्यस्ते हि समाप्ता
वाः प्रतिलक्षणं॥ ५॥ चरत्वाय हृमी॥ पुत्रा॥ गोमसदृसारजीमं सम्यक्त केच्छ हनेदको
हो॥ मिथ्यासम्पत्त ॥ सासादनसम्पत्त ॥ मित्रसम्पत्त ॥ उपसमसम्पत्त ॥ अ
योपशमसम्पत्त ॥ आह्वयकसम्पत्त ॥ इदं नृहो॥ सम्पत्तकास्वरूपक्या॥ समाक्ष
ना॥ सम्पत्तकनामर्थरुचितथाश्रयानकोहो॥ मिथ्यातगुणवाने जो अतत्वरुचि
होहो॥ तिसै मिथ्यासम्पत्तकदिये॥ इहो॥ क्रोड्कोहो॥ मिथ्यादृष्टि आगमगाना
केवलजीवादि तत्त्वका यथावत्तथाज्ञानकोहो॥ तिसैके अतत्वरुचिको॥ कारि
कहो॥ ज्ञाश्रुति सक्ता जतरा॥ मिथ्यातगुणवाने॥ आत्मज्ञानमश्रुत्परुचिहोहो॥ ताते
तसै अतत्वरुचिहो॥ कदिये॥ जैसै अश्रुचिपात्रमै धरापवित्रगाइकाह अश्रुचि
कहो॥ अथवा मिथ्यातगुणस्त्वनविषे॥ मतिश्रुतिदोनों॥ कुसतिउ श्रुतक

न्हो॥ और जीवरासि अने ताने तें दे॥ जा परस्पर जीवों के परिणाम मिले नही॥ सो
 असंख्यात लोक मात्र परिणाम के से सिद्ध हो॥ और कदां सो अने वांछा में अ
 ने तजीवों के परिणाम परस्पर मिले तब असंख्यात लोक मात्र परिणाम सिद्ध हो॥ इ
 इस अतिवृत्ति करण का काल नो अने तने तने मुहूर्त्त दे जां न ना एती नां मिथ्या त हे
 में हो॥ इ नही तीना करण का स्वप्न श्री जिन से ना चार्य ने अदिष्टा वि
 के न ली नां ति कव्या हो॥ सो ती विचारणा॥ करणा त्रय याथा त्मवृत्तये र्थ प
 दा निवै॥ इत्यात्ममूनि सन्नार्थ॥ मद्भावे जैर मुक्रमान्॥ १॥ करणाः परिणामा ये
 विनक्तोः प्रथमत्वे ते नैव बुद्धिनी यस्मिन्॥ क्षणे न च दृष्ट्य विधाः॥ २॥ द्विती
 यक्षणे संबन्धि॥ परिणाम कदंबकं॥ तच्चागुच्चततीये स्मादवमाचर मक्षणात्॥
 ३॥ ततश्चाधः प्रवृत्ताख्यं करणं तन्तिरुच्यते॥ अथर्वकरणे नैव तेत्युपस्थाः प्र

पर्वतोत्तिष्ठिहं॥॥हृजेऽश्रुपर्वकरणविषेऽथमस्मयकिपरिणामौतौ॥हृसेरस्म
यऽश्रुनेतगुणेनिर्मलहोहि॥अधोकरणकीनां दी॥नीचलेनावोकीवरावरिन
होहि॥प्रतिस्मयऽश्रुपर्वदीअश्रुर्वहोहि॥तादीतेऽसेऽश्रुपर्वकरणसंज्ञाह
इसकात्तीअंतमुत्तर्कालहो॥॥तीजेऽश्रुनिवृत्तिकरणकेकालविवै॥एकस्म
यवत्ती॥अनेकजीवहोहि॥तिनकेपरिणामोविषेनिवृत्तिवहियेनेदनह
असाअर्थसिद्धांतविषेऽलिवाहो॥यादीतेऽसेऽश्रुनिवृत्तिकरणसंज्ञाहो॥नेसे
अनिवृत्तिकरणवत्तीजीवसंस्थानवर्णवयवेष॥अवगाहनादि
गन्निन्नस्पृहैतसेअपनेअपनेपरिणामोकरिनेदवंतनांही॥सवाएकसेहेंइहोको
इयोंकहो॥हमैतोसुनीहो॥किसदीजीवकेपरिणामकिसदीसोमिलेनंही॥यह
क्योंकरिवनै॥तिसकाउतर॥संसारवत्तीजीवनकेपरिणामअसंख्यातलोकमा

करण॥ इतकेनांवहीमें इतका अर्थ है॥ ताही तें इतकों अर्थ पद संज्ञा है॥ प्र
 थम अधोकरण चौथी प्रायोग्य लब्धिके अनंतर ही हो है॥ तिसका अंत मुहूर्त का
 ल है॥ तिसके अस्म्य तसमय है॥ तहां प्रथम समय विधेयें विषय परिणाम हो
 हितें इत्सर समय विधेयें हो हितें अतः तगुणो निर्मल हो हितें॥ वक्ररिद्ध
 मेरु समय संबंधी जे परिणामें या तें इत्ती सर समय हो हितें॥ तथा अत्रो र निर्मल हो
 हितें॥ या प्रकार अधोकरण के चरम समय पर्यंत हो हितें॥ यद्दुप्रथम अधोकर
 ण के परिणामें यं कति की रीति जाननी॥ उपर ले समय के परिणामा नीच ले
 समय संबंधी परिणाम न की वरावरी हो हितें॥ याही तें इत्सकी अधोकरण सा
 र्थक संज्ञा है॥ तथा चैत्तं गोमं दुसारे॥ श्रीने मिचंद्र सिद्धांति चक्रवर्ति निराज
 म्हा उवरिम नावा॥ हेति मन्त्रा विहिंसरि सगाडंति॥ तम्या पटमं करणं॥ अत्र धा

ध्विपरिणताजीवकौसमस्तकीष्टाप्तिदोषा॥ अदिकीचरिलध्वितौनमअन्न
मकोसमांनहे॥ पांचमीकरणलध्विमिलेतवसमस्तकदोषा॥ इहांकोईप्रश्नको
समस्ततौचांगतिमनुयेंजे॥ साबुवेनरकतांईमनेनही॥ तीसेरनरकपरजंत
देवताजाइ॥ सहांतांईतोगुरुकेउपदेशतेदेशानालधिसंभवे॥ आगोंकेसहाय
॥ तिसकाउत्तर॥ कोईजेनकुलमेंसौकुक्रियाकेआचाराकाकरिनरक
तहांपूर्वजनमकाउपदेशास्मरणको॥ इसपरंपराउपदेशसोअर्थ्यावबोधाइ
अमेंदेसनालध्विसंभवे॥ सात्तागुरुकेअस्मावतेंअधिगमसमस्तसर्वमक
नसर्गसमस्तकहियो॥ ४॥ अस्वापंचमी॥ ५॥ पांचौलध्विमैंकरणलध्विक
स्वरूपहे॥ समाधान॥ करणानांमपरिणामोंकोहे॥ तिनकीलध्विदोषयतिसेंकर
णलध्विकहियो॥ तिसकेतीनभेद॥ प्रधोकरण॥ १॥ अस्वकरण॥ २॥ अनिवृत्त

केन उपदेष्टा तैर्अर्थो ववो धहोय सो सम्यक्त निमर्गतिं कृवाक दियो सा दातगुफे
 उपदेससौ अर्थो ववो धहो इति से अधिगमते कृवाक हियेय दनि ने गोमदसार
 केन तगराई मेहे ॥ तिसका विवरण ॥ सयोपनामा दिपांचोल धिक्की प्राप्ति विना
 कदाचित्त सम्यक्त दो इ न द ॥ प्रथम ही सयोपनामल धिसे पंचे नीपयो स
 होय ॥ विशुद्धि धिसे पुन्य वंधोय गप्ता वद्धो ह्नि दिशाना न्म धिसे मं न गुफे के
 उपदेष्टा तैर्अर्थो ववो धहोय ॥ प्रायोगपल धिसे ॥ आयु विना सात कर्म की मध
 मस्थिति अंत ॥ कोटा कोटी सागर मात्रो यै ॥ करणल धिसे ॥ प्रति समय प
 रिणाम अमं तगुणे निर्मल हो ह्नि तव अनादि मिथ्या ती अति दृढ करण के
 अंत समय विषे अमं तानु वंधी च बुद्ध ॥ और मिथ्यात्व का उपनास करे ॥ प्र
 थमोनाम सम्यक्त कौ तिस के अनेंतर समय विषे पावै ॥ इस प्रकार पंचल

कौं अन्नुनैव॥ तिसै निश्चे सम्यक् दिष्टि कहीये॥ निश्चे सम्यक् दिष्टि कें व्यवहार॥ स
म्यक्तयथायोगपहोम॥ व्यवहार सम्यक् दिष्टि कें निश्चे सम्यक्त होयनी ननी दोश॥ य
हव्योहार निश्चे सम्यक्ता स्व रूप जानना॥ ३॥ चन्द्रोदये॥ प्रश्न॥ सम्यक्त की
ति दोय प्रकार हो॥ एक नि सर्गति॥ दूसरी अधिगम तें॥ तिनका स्व रूप कया॥ समाधा
ना॥ नि सर्ग कहिये स्वभाव तें होया॥ तिसै नि सर्ग सम्यक्त कहीये॥ अधिगम कहि
ये अर्थी व्यवोध तें होया तिसै अधिगम सम्यक्त कहीये॥ इहां कोई प्रश्न॥ जो सम्यक्
स्वभाव तें उपजै तिस विषे॥ अर्थी व्यवोध होय कि नही॥ अर्थी व्यवोध न कहो तो त
त्त्व अद्यान कै संकटा॥ अर्थी व्यवोध कहो तो अधिगम ही कुवा दोय नै दूको द
कहै॥ तिसका उत्तर॥ दोनो प्रकार कै सम्यक्त विषे अंतरंग प्रकार दर्शन मो द
उपस्मद योग पद्माम॥ तथा ह्यस्मानह॥ वा ह्यकारणें दोय नै दहै॥ परंपरा गुरु

विद्वत्त्वचिद्रूपा॥ दन्मस्याग्निमुखीरुचः॥ अमवहारेण समस्त्यं॥ निश्चयेन तदात्मनः॥
 अर्थः॥ यारुचिः शुद्धबुद्धस्वचिद्रूपा तत्र न स्यात्तिमुखी न भवति॥ जोरुचिः अप्रपेने नि
 र्मेत ज्ञानमयं चेतनं न स्यात्तस्मात्ते॥ और जीवादि यदार्थं के समुप रूचि दियो॥ तत
 अमवहारेण समस्त्यं न भवति॥ सोऽप्यवहारं करि समस्त्यं हेय॥ पुनः आत्मनः अ
 र्मुखीरुचिः ततः निश्चयेन समस्त्यं न भवति॥ और पूर्वोक्तं अप्रपेने आत्मा के समु
 खरुचि होइ सो निश्चये समस्त्यं हे॥ नार्थ॥ अत्र नम्यमिथ्या दृष्टि साधुग्यार हे अ
 गतां ईपे हो॥ नम्यमिथ्या दिष्टो साधुग्यार हे अंग दशापूर्वतां ईपे हो॥ जीवादि तत्त्व
 कौं यथावस्थित जां नें॥ अप्रपेने स्वकीय आत्मा का अनुभव करि सैं के न हो॥ ता
 नें नि सैं के निश्चये समस्त्यं न कदि यो॥ अवहार समस्त्यं कदि हो॥ और आगा
 समस्त्यं कदि जीवतुषभाषमात्र॥ ज्ञानं बुक्तं अप्रपेने सुद्वैतं तन्ममात्र॥ आत्मा

कौञ्चात्मानकहिये॥यद्गंगांसाकाशमनसोसमकने॥जैसेंद्रव्यकोतत्त्वकहियेपदार्थ
कहियो॥तत्त्वतथापदार्थकोद्रव्यनकहिये॥अथवाञ्चाचार्यउपाध्यायकोसाधुप
कहियेः॥साधुपदकोञ्चाचार्यउपाध्यायपदनही॥इत्यादिञ्चात्मतत्त्वजीवतत्त्ववि
षेञ्जेसेदृष्टांतजानेने॥मिथ्यादिहिञ्चागमज्ञानकेवलसोपरजीवादिसप्ततत्त्वका॥
यथावतस्वरूपजाने॥अप्रधानकरे॥स्वसेवेदनज्ञानकेञ्चाचार्यको॥निजात्माकाअप्र
नञ्चनुप्रवहोयनही॥ताहीतैआत्मज्ञानशून्यपुरुषकेतत्त्वार्थअप्रधानका
कारीनाही॥२॥चरचातीसरीउच्यते॥ ॥प्रश्न॥व्यवहारसम्पत्तकिसेकहिये
रनिश्चैसम्पत्तकिसेकहिये॥समाधान॥आत्मज्ञानविनाजोजीवादितत्त्व
का॥अप्रधानहोयतिसेकोहारसम्पत्तकहिये॥आत्मज्ञानसर्वकजीवादित
त्वकाअप्रधानहोयातिसेनिश्चैसम्पत्तकहिये॥तदुक्तं॥रन्नत्रयमज्ञायां॥शुद्ध

इस प्रकार आरव समय का कथन है ॥ अमी जाति के संदेह का केवली चिना नि
 र्त्तन होया ॥ इस का विस्तार यथावसर आगे लिखियेगा ॥ राचरचर सरी ॥ अम
 समय क दर्शन का कया स्वरूप है ॥ समाधान ॥ जीवादि तत्त्व का यथावसर अम
 न कानां वस समय क दर्शन है ॥ सोई दर्शा ध्यायी सत्त्व की फाकी विषे सि स्तु पित है
 तत्त्वार्थ प्रज्ञान समय क दर्शन मिति ॥ इहां कोई के दे प्रवचन सार नां मंग्र प्य वि
 भेयों क हो है ॥ जीवादि तत्त्व का प्रज्ञान आत्म ज्ञान प्रत्यक्ष पुरुष के कार्य का
 रीनाही ॥ इस क हेतु में भात त्वार्थ प्रज्ञान का निषेध आया ॥ सो कया जीवादि त
 त्वार्थ प्रज्ञान विषे आत्म ज्ञान आया नही ॥ तिस का उत्तर ॥ ॥ जीवादि सा
 तत्त्व निविषे जीव तत्त्व दोय प्रकार है ॥ एक सुजीव एक परजीव ॥ सुजीव
 निजात्मा परजीव सजीव तांने आत्मा के जीव तत्त्व तो कहिये ॥ जीव तत्त्व

की घटती सोंति न विषे संदेह वहुत पड़े। तिस ते तिन का कहों तां तों ई को ई
नैर्नै करेगा॥ चतुर्थ काल विषे छेव साधु वें गुण स्खान घरी साधु कें पद पदा

चिंतन में चोति उपजे। केवली श्रुत केवली विन्ना निर्नै न होय तो अव
न वास है। सा ते यथा योग्य मन के अवलंबन निमित्त केती कचरचा

लिखिये है। चरचा पदली॥ प्रश्न॥ मुनि राज कें असा को भसा संदे
होना होइगा। जिस का केवली श्रुति केवली विन्ना निर्नै न होइ। तिस सं

ह की जाति जानी चाहिये॥ समाधान॥ केवल समुदात विषे संकोच वि
आव समय कहें हैं। तहां दीय समय औदारिक जागै है। नीन सम

क मिश्र योग है। नीन समय का र्मण योग है। दूसरे सिद्धांत में दीय समय
औदारिक मिश्र योग है। दीय समय औदारिक मिश्र। चार समय का र्मण

गा॥४४॥सुप्तादोन्तं सम्मोदरसि जंतं जदाणसद्वहति॥मिचेव हवदिमिच्छाद
 ठीजीवोतदापकुद्वि॥४५॥दोहरा॥जैन स्वत्रकीसाषितो सुपरुहेतुनुरा
 नाचरचा निरनैलिषतहोंकी जोपरषप्रमान॥४६॥अद्यवोत्ता॥इसम्वरचा
 समाधानग्रंथविवे॥केतकसंदेहमाधर्मीजनोकेलिषेत्रोया॥शास्त्रनुसा
 रतिनकासमाधानकुवातो॥लिषोद्वे॥अरकेतेकसंदेहमेरे चित्तमेउप
 जो॥यथा॥नाक्तित्रास्वहीसोंतिनकास्माधानकुवासोलियाहो॥अवजेको
 ईवकुश्रुतिसज्जनहंगुणाग्राहीहेंतिनसोवीनतीहो॥इसग्रंथकेपटनेंदेष
 नेकीउपेख्यामत्तिकीजो॥आद्योपांतअवलोकनकरमा॥जोचरचाउ
 म्हारेविचारकोंसहो॥सोप्रमाणकरणी॥जोविचारकोंनसेहो॥तहांमभ
 स्वरहना॥ओरजेनकीचरचाअपारहो॥कालकेदोषसोंतथा॥मतिश्रु

ग्यालबालन्नी कहत है ॥ षो जी जी वौ लो इ वा दी कौ जी बन वि फल ॥ ३५ ॥ जौ
शी ॥ जो भुमनी केली नों ज्ञान सो मै नी हे वहुत विनान ॥ ता सें सदा उद्यम
॥ पान गुमान भलि जिन गहौ ॥ ३६ ॥ जो नवी न चरचा सुनि लेझा ॥ ता को
धका मति देखु ॥ दोय न्यारि दिन करै विचार ॥ एक चिन करि वारं वार
॥ यो मै कहा दोसै हेमीत ॥ बिन यत्रंग जिन मत की नीति ॥ अग्या जंगद पा
प विमाला ॥ मूर पनर के तायें प्याल ॥ अग्य सस्य कट ही जीव सुजान ॥ जिन वर
उक्त करै सरधान ॥ अज थार थ सरधानी करै मंद ग्यान वस दोस न धरे ॥ ३७ ॥
सिधांत साधि अत्र वलोडा ॥ धत सरधान दिदा वै कोडा ॥ जो हवत सों नो ही स
स वसों ज्ञान मिथ्या नो वै द्ये ॥ ३८ ॥ त दुक्तें गो मट सारे ॥ सममा इवी जीवो
व इष्टं पवयणं च सदहर्ष ॥ सह हरि उग्र सक्षा वं ॥ अजाणा मां एणे हि गुरुणिया

तहांनं अश्वैकं मा॥ २॥ चोप॥ २॥ सत्पारथ्यचरचाजेतीक॥ भ्रममत्तावसोऽन
 ईअलीक॥ वक्रतवातअजथारथ्यचली॥ यदनिश्चेज्जानो बुधिवली॥ २॥ एव
 कावचनपच्छनाहिजंछे॥ आताहचच्छोडननदिक्केह॥ किसेंचलेजथारथरी
 ता॥ कलिवर्त्तनदीसेविपरीत॥ ३॥ जिनमतचरचाअगमअपाग॥ कोहसिन
 कोजानमहारातिनमैकीकबुसुधिकरिलेंदि॥ आगेअरवाजतजिदेहि॥
 ३॥ जानमजोगलियोहमजान॥ तहांहमोरेंदिठसरधांनयहसहीसमकि
 तकोअंग॥ कोहकोरेंअरश्रुतसंग॥ ३॥ तपतिभयवरतेंद्रदिभाप्रकिंधो
 रहयंचामृतषाद्र॥ जिनमतकीअसेंनद्विरीत॥ तातेंषाजीरहोपुनीतः॥
 ३॥ षोडकिंयेगुणाहेंदिविसेस॥ धादविषैगुणाकोनहीलिस॥ छुत्तडाम
 रपेंडितहोडा॥ जागतडानरमुसानकोडा॥ ३॥ सोरगा॥ याहोतैसवकोडा

जो घर चाविस में नहि चहै। सो सब जैन सखसों कहै॥ अथ वाजे श्रुत सरमी
लो ग॥ तिनैं सुखिली जेय दू जोग॥ २२॥ इत नैं में संसै रहि जाइ। सो सब केवल
सो हिस माइ। यों निसल की जैनं निज भाव॥ चरचा में दूव को नहि साव॥ २३॥
दोहा॥ वचन पछ में गुण नही नहि जिन मत को न्याय॥ अंच पै चसों प्रीत की डो
दूहि मति जाइ॥ २४॥ अंच पै चसों वहुत गुण दूटत लगे न वास॥ अंच पै चसों
न एक गुण नहि दूहें निरधार॥ २५॥ वचन पछ परवत कियो न्यो को न कला
न॥ वसुधै कुतुभी पछि करि पछु चैन रक निया न॥ २६॥ वचन पछ कर
जहां धर्म की दोनि॥ निज अक्क जपर को बुरो दुरो य दवानि॥ २७॥ प्राकृत
वानी सो मिलै सो संस्कृत दिट जान॥ मिलै संसत्कृत पाव सो सो भाषा परवा
न॥ २८॥ बाल बोध भाषा वचन उपगारी॥ अमिराम॥ सास्त्र साधि ज सह्या हिये

विरलेनरत्नमंजरा॥४॥ जैनधरमकौसरमहेमहाकुलनजगमांदि॥ समकिम
 कौंकारणसहीयामेंसंयनांदि॥५॥ जैनधरमकौसरमलदिवरतेमांनकष
 ॥५॥ यहप्रबुद्धचरजसुमो जलमेंलागीलाडा॥ दो जैनधरमलहिमदवदव
 दनमिलहेकोडा॥ प्रसृतयानविषयरिणवैताहिमन्त्रौषधदोडा॥७॥ जपक
 रितसुकरिदानकरिकरिपरुपगार॥ जैनधरमकौपाइकरिमानक
 षायनिवा॥८॥ कालदोषसौंन्त्रमपस्यो जिनमतचरचामांदि॥ तिनको
 निरनेंजोगहे जिनमासनकीछांदि॥९॥ तडकं॥ कालः कलिर्वाकलुषा
 रायोवा॥ श्रोत्रुः प्रवक्तुर्वचनान्वयोवा॥ त्वत्त्वासनेकाधियानित्वलक्ष्मी॥ प्र
 भुत्वशक्तेरपयादहेतुः॥१०॥ चैपद्मी॥ मोतसिंघासनवैवोवीर॥ मतिश्रुत
 दोनुगविभुजीराजो गन्धर्वकरोविचाराजैसं नीतनृपतिव्योहार॥१२॥

सक्तिहितञ्चादौ अहितसर्वथाषोडश ॥ जिनश्रुतसागरे तं कदौ चरचाग्रमृ
 तमद्दानं ॥ भक्तिञ्च जलोपरवान्न निजकरो निरंतरपानं ॥ जिवमासके दिन
 वडेमाहवडरीगतं ॥ जिनमतकीचरचाविना विफलकरो मतिज्ञातं ॥ जि
 नमतचरचापरमसचाव्यो न हीरसालं ॥ नरतरवरग्रपत्न्यै सुमगफलनहोला
 योडालं ॥ १० ॥ पवनप्रश्नश्रुति चितवनपरिवर्त्तनग्रपदेस ॥ पंचनेदस्वाध्याय
 केचरचानामग्रनेकं ॥ ११ ॥ नृक्षं च ॥ सौरव ॥ सुवचनसामलतादं फेरफणमंडे
 नदी ॥ जानो जलसपियांहमणिधरदोयनमेधसुतं ॥ ब्रह्मादेहं ॥ सुवचनवानी
 जैनकीञ्चोरनसुवचनकोड ॥ गुणसौ सिंधपरब्धियेनां मसिंधनदिहाध ॥ १२ ॥ सु
 वचनरुचंरसद्वकौ मूरषदोऽनलीन ॥ दाषचावडाहारं जैनदिवाऽसबुधिह
 ॥ १३ ॥ पंचमकालकालत्रतिदेवो सुधीविचार ॥ जिनमतकेसरमीशु

॥ र्यते ॥ श्री वीतरगायनमः ॥ अथ श्री चरंचासमाधानग्रंथ लिख्यते ॥ दोहा ॥ जयौ वीर जिन
 चंद्रमा उदे अष्टवर्त्तनास ॥ कलि जुग काले पाषै मंकी नोति मर विनास ॥ १ ॥ वंदौ वान
 ॥ जगवती विमल जौ क्रज गमां हि ॥ नर मता पजा सौं भिदै त विसरै ज निग सां हि ॥ २ ॥
 गोत मगुरु के पद क मल हृदय संगे वर आन ॥ नमो नमो नित नाना बसों करि अछांग
 विधना ॥ आ अछांग प्रणाम निनी ॥ सारना ॥ जुगल पाति जुग पा ५ ॥ पंच मसी ससयर्स
 नुति ॥ विमल मनो वच काय ॥ यह अछांग प्रणामं क व ॥ ध ॥ न डरुं ॥ हस्तोपा दोत
 था हो दो त्रिरो मूच पंचमं ॥ मनो वाक्काय शुद्धि अछांग सो अछांग उच्यते ॥ ५ ॥ दो
 हा ॥ आदि मधुर अवसान कटुक मत्तो ग सव जान ॥ आदि विरस अतसान मधु
 तपकार जपरधान ॥ दो ॥ आदि अंमं विरस है वै रत्ना व डर रूप ॥ आदि मधुर अ
 गो मधुर मैत्री ना व अ नृ ॥ ७ ॥ चार का ज ए जगत मै दोय अहित दोय ॥ यथा